काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला—रत्न ७

॥ श्रीः ॥

गुलदस्तए-बिहारी

अर्थात्

बिहारी-सतसईका उर्दू शेरोंमें अनुवाद

प्रणेता—
श्रीकृष्णजन्मोत्सव, सुदामा चरित्र आदि के रचयिता
तथा
विजावर-राज्यान्तर्गत स्कूलों के इन्सपेक्टर
मुंशी देवीप्रसाद 'प्रीतम'

प्रकाशक—
साहित्य-सेवा-सदन,
बुलानाला, काशी।

प्रथमावृत्ति] मार्गशीर्ष, १९८१ वि० [मूल्य ॥।=)

प्रकाशक—

गयाप्रसाद शुक्ल,

व्यवस्थापक—

साहित्य-सेवा-सदन,

काशी।

मुद्रक—

शिवराम-मालिक,

दी नेशनल प्रेस, बनारस कैण्ट।

श्रीनाथो जयतु ।

अनुवाद और अनुवादक

''नाम लिए नवनीत को, मिटै हिए को शूल ।''

''मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाईं परै, श्याम हरित दुति होय ॥''

''सूर सूर, तुलसी शशी, उड़गन केसव दास ।''

कविकुल कुमुद-कलाधर श्रीसूरदासजी तथा कवि-कुल-कमल-दिवाकर श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी, हिन्दी साहित्य-गगन को सूर्य और चन्द्र की भाँति सुशोभित कर ही रहे हैं, तथा उनकी अलौकिक प्रभा सारे संसार पर प्रकाश डाल ही रही है, पर, उड़गनों में, केवल एक केशव ही नहीं, वरन् देव, भूषण, हरिश्चंद्र, पद्माकर, मतिराम और भी एक से एक बढ़ कर चमकते हुए सितारे हैं। कवियों के इस पंच-रचित शरीर का अस्तित्व चिरकाल तक भले ही न रह सके, पर उनके अन्तःकरण से निकली हुई आत्म-प्रेरित मनोहर वाणी, अब भी वाग्वाणी बन कर, विज्ञजनों की वाणी पर नृत्य कर रही है। कोई सूर-सुधा-सागर-निःसृत आनंद-कल्लोलिनी में लहरें ले रहा है, किसी का मन गोस्वामीजी के मान-सरोवर में निमग्न होकर मौज में मस्त हो रहा है; कोई देव की दिव्य गंगा में स्नान कर रहा है; कोई केशव के गंभीर महानद में गोता लगा रहा है, और किसी का हृदय पद्माकर-तड़ाग में तल्लीन हो रहा है। किन्तु कविवर बिहारी लाल उड़गणों में नहीं। उनके अनुपम दोहों का विमल विकाश, चन्द्र की बढ़ती कला के समान, दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है। जिस नागरी-रसिक ने सतसई की भव्य अलं-

कारों से विभूषित ललिता नायिका का, विशुद्ध बुद्धि से, आलिंगन नहीं किया, अथवा उसकी रसीली काव्य-रसाल-मंजरी के मधुर-मकरंद पर जिस प्रेमी का मन-मलिंद मत्त नहीं हुआ, तथा जिस कवि ने इस गंगा की अद्भुत छटा, दिव्य नेत्रों से नहीं देखी, उसके पूर्ण रसिक होने में कुछ न कुछ संदेह अवश्य ही हो सकता है। कहना नहीं होगा, कि सतसई के आजतक अनेक भाषाओं में अनेक अनुवाद हो चुके हैं, और अबतक होतेही जा रहे हैं। परन्तु इस आनंद-पारिजात की करामातों का पूरा-पूरा पता अबतक किसी ने नहीं पाया। नित्य नए २ अर्थ निकलते ही जा रहे हैं। मूल रचयिता को तो एक-एक दोहे पर सहस्रों मुद्राओं का पुरष्कार प्राप्त हुआ ही था, पर सुनते हैं कि रसिक-शिरोमणि बाबू हरिश्चंद्रजी ने तैलङ्ग भट्ट परमानंदजी को शृंगार-सप्तशती नामक संस्कृत (दोहाबद्ध) अनुवाद पर पाँच सौ रुपये प्रदान किये थे। अब भी रसिकों की कमी नहीं। कविता-मर्मज्ञ, सुलेखक पं० पद्मसिंह शर्माजीने "संजीवन भाष्य" में अर्थ का अनर्थ करनेवाले स्वार्थी तिलक-कारों की भली प्रकार से खबर ली है और अपनी विलक्षण बुद्धि का अच्छा परिचय दिया है। "लक्ष्मी" संपादक लाला भगवानदीनजी ने अपने स्वतंत्र अनुवाद में भी कुछ कसर नहीं रखी। यद्यपि आजकल के तीव्र समालोचक ग्रंथकार को बिना कसौटी पर कसे नहीं छोड़ते, पर कोई न कोई कुन्दन ऐसा निकल ही आता है, कि उसका नक़्स, कसनेवाले की हृदय-कसौटी पर ऐसा जम जाता है, जो कभी नहीं मिट सकता।

इस सतसई के फारसी, संस्कृत तथा हिन्दी गद्य-पद्य में तो अनेक अनुवाद हुए ही हैं, पर उर्दू पद्य में सरस अनुवाद अब तक नहीं हुआ था। बड़े हर्ष का विषय है कि बुंदेलखण्डान्तर्गत विजावर-राज्य के वर्तमान "इस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स" मुंशी

इनका निवास कानपूर के निकट कनपुरा नामक ग्राम में था। उनके बनवाये हुए महल अभी तक वहाँ खड़े हैं।

संबत् १६२६ में आपका जन्म, कानपूर मुहल्ला नवाबगंज में हुआ। आपके पिता आपकी बाल्यावस्था में ही श्रीरामशरण हो गये थे, इससे विशेष कर माता ही की वात्सल्यता ने आपका पालन-पोषण किया। समय के हेर-फेर ने आपको कानपूर से छत्रपूर राजधानी में ला रखा, जहाँ आपकी ननिहाल थी। आपके अर्बी-फ़ारसी के उस्ताद मौलवी ज़ैन उल्ला "तशरीह मुल्लाज़ैन" (अर्बी), "ईशाज़ैन उल्ला" (फ़ारसी), "तोशाए हजाज़" (उर्दू) के रचयिता थे? आपकी शायरी के उस्ताद महाकवि मिरज़ाँ ग़ालिब के भतीजे मिरज़ाँ बिस्मिल थे, जिनका दीवान बिस्मिल अमुद्रित रह गया। छत्रपूर में ही आपने इन्ट्रेंस तक इँग्लिश में तालीम पाई और हिंदी-भाषा का अभ्यास किया। आपके ज्येष्ठ भ्राता मुंशी मन्नूलालजी, यद्यपि आपसे दो साल ही बड़े हैं, परन्तु हाश सँभालते ही आपका कुलभार अपने सिर लेकर, आपकी शिक्षा-दीक्षा में बड़े उत्साह से प्रयत्न करते रहे। आपका उपनाम "रसिक श्याम" है। आप हिन्दी भाषा की बड़ी ही रसमयी कविता करते हैं। आपकी भाषा बड़ीही मुहावरेदार और बोलचाल की हिंदी में हुआ करती है।

हमारे चरित-नायक 'प्रीतम' जी का काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर ला० भगवानदीनजी से घनिष्ठ प्रेम है। आप इनको इस युग में सच्ची मित्रता का उदाहरण और अपने साहित्य-जीवन का सहायक बताते हैं। आप पहिले फ़ारसी-उर्दू की कविता किया करते थे। परन्तु दीनजी के संसर्ग से आप हिन्दी-साहित्य की सेवा करने लगे। संवत १९५४ में आप बिजावर राज्य के हेडमास्टर नियत हुए और अब इन्स्पेक्टर-मदारिस हैं। इन २६ वर्षोंके अन्दर, जैसा सरल

स्वभाव मैंने पहिले देखा था, वही आज भी बना हुआ है। राज्य में आपका लौकिक मान तो है ही, पर हमारे संरक्षक परम दयालु क्षत्रिय-कुल-कमल शूराग्रगण्य श्रीमान् सवाई महाराज सर सावंतसिंह जू देव बहादुर के. सी. आई. ई. के भी आप विशेष कृपापात्र हैं। पारलौकिक प्रेम का "सत्संग" होते समय श्रीमान् आपकी विशेष याद फरमाते हैं। आपको सरल, सत्य-स्वभाव समझकर श्रीमान् ने क्षत्रिय-सभा का मंत्री बना दिया है। पर आपके कोमल हृदय में इतना मान होते हुए भी गर्व का नामो-निशान नहीं है।

कान्यकुब्ज ब्राह्मण मदरस-निवासी पूज्यवर कन्हैया लाल शुक्लजी, जो इस समय तेजपुंजता और आर्ष-स्वरूप के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, आप के दीक्षा-गुरु हैं। परन्तु बिजावर आने पर आप का सहयोग श्रीयुत रामचरण गयावालजी से हुआ। आप गया-निवासी प्रसिद्ध तापस परमहंस स्वामी श्यामदेवजी के शिष्य थे। आपकी पारलौकिक प्रेम की कलिका इन्हीं रामचरण-जी की विशेष कृपा से विकसित हुई। प्रेम-मय जीवन इन्हीं के सत्संग से इस रंग साँचे में ढला। इन्होंने अपनी रस-पूर्ण वाणी से दीन-मण्डली को सराबोर कर दिया। आपका द्वार सत्संग अभिलाषियों के लिए आठ पहर खुला रहता था। हरदम सत्संग का रंग छनता रहता था। "प्रीतम" जी सत्य-हृदय से इन्हींको प्रेम-जीवन का जीवनदाता मानते हैं, और इनकी शान में यह गुण गान करते हैं—"और तो देव सबै सिर ऊपर, सुंदर के उर है गुरु दादू"। संवत १९६२ वि० में इन्हीं परम भक्त रामचरण दासजी की अनुमति से "दीन-मण्डली" नामक एक सत्संग संस्था कायम की गई, तथा श्रीदीन-दुःख-भंजन नामक श्री-महावीरजी को एक रसाल वृक्ष के नीचे स्थापित किया, जिनके मंदिर-द्वार पर यह दोहा अंकित है—

उन्निस बासठ बिक्रमी, अखय तीज रविवार ।
दीन-दुःख-भंजन हरी, दीनन हिए पधार ॥

मण्डली का यह उद्देश्य था "त्रय ताप तापित तथा श्रमित इस अधम जीवन को निरंतर भगवद्गुणानुवाद गाकर सत्संग द्वारा विश्राम देना"।

नर विविध कर्म अधर्म बहुमत, शोकप्रद सब त्यागहूँ ।
विश्वास करि कहि दास तुलसी, रामपद अनुरागहूँ ॥

यह लेखक भी उस मण्डली का उदयकाल से अबतक एक-रस स्वादन करनेवाला है। अहा! वह कैसा, सौभाग्यशाली समय था, कि प्रभात से संध्या तक रामप्रियाजी की कुटी में सत्संग की वर्षा होती थी, और फिर संध्या से अर्धरात्रि तक श्रीदीन-दुःख-भंजन के स्थान पर पहुंच कर, चैत्र और शरद की निर्मल चाँदनी में अलौकिक आनंद लूटते थे। अब इस जीवन में उस आनंद की आशा नहीं। हाँ, स्वर्ग में यह सुख मिले, ता मिले। अब तो व्यासजी का यह अन्तरा स्मरण कर कलेजा थाम कर रह जाना पड़ता है "ऐसे कठिन कराल काल में क्यों व्यासै उपजायौ"। आप प्रथम आनंद-कंद श्रीकृष्णचंद्र की कैशोर-लीला के उपासक थे। पर जब से श्रीअवध-निवासी महिली-उपासक पूज्य पुजारी जगदेवदासजी तथा प्रेमी श्री-सियारामशरणजी ने जनकपुर के गुप्त रहस्य का मर्म समझाया, तब से युगुल सरकार की दिव्य छटा आपके दिल में समागई है। चित्रकूट-निवासी परमहंस वेषधारी महिली-उपासक महात्मा रामरतनशरणजी की कृपा से भी आप को लाभ पहुँचा। श्री पूज्यवर पुजारी जगदेवदासजी, जिनकी प्रशंसा श्रीनाभा-दासकृत भक्तमाल के तिलक के रचयिता अवध के प्रेमस्तंभ, डिप्टी

साहिब भगवानदास (सीतारामशरणजी) ने अपने एक सौ आठ संतों के नामावली में की है, भगवत् श्रृंगार रस के विलक्षण रसज्ञ और रसिकों के मुकुट-मणि हैं। आप इस समय "कनक भवन" में निवास करते हैं। इनके प्रेम का प्रभाव, 'प्रीतम' जी के हृदय पर, इतना पड़ा हुआ है कि इनकी सानी का रसज्ञ इन दिनों आप भूमण्डल में नहीं समझते। आपने श्रीअवध, श्रीचित्रकूट और अन्य अन्य स्थानों में इनकी पीयूष-वर्षी रसना में भगवत् रसास्वादन किया है। परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी की वाणी को ही "प्रीतम" जी भव-सिंधु से पार करानेवाली समझते हैं। "प्रीतम-शतक" के किसी सवैया के अन्त में आपने कहा है—"तुलसी मुख डारत अन्त समय सुधि आवहि आरत में तुलसी की"। और भी इसी शतक में किसी समय कहा है—

सन्तानको सोच नहीं कछु 'प्रीतम' चाह नहीं मनमें धनकी।
जिन बालपनेसे सुधारी सदा सुधि लैहैं वही वृद्धापनकी ॥
धनि धन्य गोसाईंजू डार गये हमैं देहरी जानकी जीवनकी।
अब तो रघुराज गरीब निवाज के हाथ है लाज दुखी जनकी ॥

फिर भी आपकी दम गनीमत है। जो प्रेमी सत्संग की अभिलाषा प्रकट करते हैं, उन्हें कोई न कोई सरस प्रसंग सुनाकर उनके हृदय को आप अवश्य विश्राम देते हैं। प्रेमी की सत्संग की इच्छा जितनी ही बढ़ती जाती है, आपका हृदय–सरोवर उससे दूना उमड़ता जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी कण्ठ गद्गद हो जाता है। और अश्रु धारा–प्रवाह चल पड़ते हैं, वाणी शिथिल हो जाती है। चाहे कोई भी क्यों न बैठा हो, लोक–लज्जा एक कोने ही में रक्खी रह जाती है। आपके इस प्रेम–दशा की नशा घंटों तक नहीं उतरती। आपके आत्मिक

अतर से नगर के अच्छे-अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन, आलिम-हुक्काम तथा सेठ अपने धंधे से फुर्सत पाकर, दिनमें एक न एक बार अवश्य ही मिल जाया करते हैं। केवल इतना ही नहीं, श्री अवध के प्रतिष्ठित गुण-ग्राही महात्मागण भी, जिनसे आपका परिचय है, अपने सत्संग की भाव-गंभीरता की अवस्था में आपका बराबर स्मरण करते हैं।

अनुवादक के रचित अन्य ग्रन्थ

गद्य

महात्मा बुद्ध का जीवनचरित्र

पद्य।

१ गो-गुहार
२ बुन्देलखण्ड का एलबम
३ श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव
४ श्रीप्रह्लाद-चरित्र
५ ट्रेवेलर का उर्दू अनुवाद
६ डेज़रटेड विलेज
७ शान्ति-शतक
८ शृंगार-शतक
९ स्फुट पदावली
१० सुदामा-सम्मिलन
११ राजुल विवाह
१२ कुल्लियात प्रीतम
१३ विदुर-मैत्री-सम्मिलन

प्राचीन कवियों पर श्रद्धा

'निज कवित्त केहि लाग न नीका' प्रायः कवियों का यह स्वभाव ही होता है। पर आप इसके साथही प्राचीन महाकवियों को अपना इष्ट भी मानते हैं। उनकी वाणी से निस्सृत अमृत-सरोवर में आप सदा निमग्न रहते हैं। दीगर ज़बानों के कवियों पर भी आपकी एक सी श्रद्धा है। फ़ारसी-उर्दू के मशाहिर शोरो के सैकड़ों अशआर आपको कण्ठस्थ हैं। "शान्ति-शतक" नामक अप्रकाशित ग्रंथ में सबकी वाणी की निष्कर्ष एकत्र कर, आपने मानव-जीवन का यह सार निकाला है :—

रसना रस जीवन को है यही, जय जानकी नाथ रहै सरसानी।
तुलसी शुक सूर रची हितकी, निकसैं मुखसों मृदु मंजुल बानी॥
जय रामहिं रामसो आठहु याम, जिये जग जीह सुधा-रस सानी।
मन मंदिर में विहरैं नित 'प्रीतम' कौशलराज सिया महरानी॥

आधुनिक जीवन

इनफ्लूएंजा नामक विकराल कालज्वर में आपका प्रिय भामिनी से सदा के लिए वियोग हो गया। इससे आप अब गृहस्थी में भी फ़क़ीरों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं। इस संसार में, रसिकों के लिए, एक यही दुःख ऐसा है, जो चित्त की दशा बदल सकता है। इस महादुःख ने, केवल आपही का दिल नहीं दुखाया, बल्कि अच्छे-अच्छे नरेशों, विद्वानों और कवियों का मन भी उथल-पुथल कर दिया। किसीने अपनी प्राणप्यारी प्रियतमा के वियोग में महल बनाकर उसकी यादगार क़ायम की, किसी ने संसार से उदास होकर फ़कीरा का बाना बाँधा, और किसी ने उसके नाम को क्षेत्र खोलकर अमर रक्खा और किसीने कविता रचकर अपने प्रेम को प्रकट किया। आपने भी निम्नलिखित शोक-सम्फुटित पद रचकर संसार की सख़्त मंज़िल का दृश्य दो-चार ही कड़ी में दिखलाकर वियोग की आग शान्त की है, तथा अगले जन्म तक अपने पूर्व-जन्म का संयोग कायम रख, दूसरी बार भी मिलने का विचार प्रकट कर दिया है। सहृदय सज्जन इसे पढ़कर इस महादुःख का एक बार तो अवश्य ही अनुभव करेंगे—

प्रिया मुख देख उपज्यौ शोक
झलक हिये छलके विलोचन, पलक जल रहे रोक॥

रचि चिता शैय्या बनाई, निज करन सों हाय।
भरि नजर फिर मुख विलोक्यौ, सेज पर पौढ़ाय॥
हिलुर हिय फिर स्मरण भे, प्रथम के संयोग।
मिलनकी वह शुभ मुहूरत आज हाय! वियोग॥
वह चढ़ाये चौक आवन, करि सकल शृंगार।
जगमगत माथे पै बेंदा, ऊब देत बहार॥
चटक चूनर, लटक झुलनी, अधर लुर लहराय।
गज-गमनि सों ठुमक ठग चलि, चौक बैठी आय॥
हरित मंडप खंभ पियरे, सरस जामुन पात।
पवन झोकत डुलत लुर लुर, प्रेम सों लहरात॥
सुख पटन पर बैठ सम्मुख, जुरे चंचल नैन।
परस्पर हिय भाव दरसे, बिन कहे कछु बैन॥
शुभ घड़ी वह गाँठ जोरन, अशुभ दिन ये आन।
देह निज हित प्रान राखत, नेह उपजत लान॥
सुजन सन्मुख तुम चली प्रिय, लिए मोदक हाथ।
मुख तकत रह गये ठाड़े, हाय! जीवन नाथ॥
कमल बहनी गुण सुमिर अब, उठत है उर शूल।
बेकली अति होत हिय में, चुनि चिताके फूल॥
प्राण 'प्रीतम' कहँ मिलौ अब, प्रिया फिर परलोक।
बिन कहे हिय मरम भामिनि, जात किमि यह शोक॥

अब साधारण जीवन व्यतीत करते हुए, मासिक बेतन से जो बच रहता है, वह परहित में ख़र्च कर देते हैं, और आप

फाक़ामस्त रहते हैं। आप प्रकृति-उपासक हैं। बहुधा पावस, वसन्त, ग्रीष्म में पर्वतों की शिखर, हरित वन या झरनों के किनारे, रसिकों सहित सत्संग का रंग बरसाते हैं। द्वादस भक्त प्रवीण के छप्पय में, जो रसखान का नाम आया है, यह एक मुसलमान सज्जन हैं, परन्तु हर समय कृष्ण-रंग ही में रँगे रहते हैं, गोपिका गीत ही गाया करते हैं। पावस ऋतु में किसी समय प्रीतम सहित सिद्धों की गुफा पर, जो बिजावर से पश्चिम ओर एक मील की दूरी पर है, जाकर निर्मल जलके किनारे रसखान ने यह तान खींची—

हरि छबि रही नैननि छाय।
निरखि सजनी श्याम-सुंदर बन चरावत गाय॥
मुकुट सिर कर लकुट कटि तट पीत पट फहराय।
नाम लैलै धेनु फेरत, सरस बेणु बजाय॥
ललित नूपुर बजत रुन-झुन, धरत धरनी पाँय।
निरखि मृदु घनश्याम मूरति, मोर निरतत आय॥
दुंदुभी सुरपति बजावत, घन घटा घहराय।
बिमल उर बनमाल हिलुरत जमुन जल लहराय॥
चंद्र मुख लखि खिली ललना, कुमुदनी समुदाय।
प्रिया प्रेम प्रमोद प्रमुदित, प्राण 'प्रीतम' पाय॥

रसखान के इस सरस तान से प्रमुदित होकर 'प्रीतम' जी ने उनकी शान में यह सवैया कहा:—

घनघोर घटा रही घूम औैर झूम हरी हरी भूमि उकाननपै।
झिरना झिरसान बजाय रहे मनौ सिद्ध गुफानके आननपै॥

जल भौंर व मोरैं नचैं बनकी, रसखान की प्यारी सींताननपै।
रस लूट रहे जगजीवनको, कबि 'प्रीतम' बैठ चराननपै ॥

उर्दू अनुवाद पर दो शब्द

यह सरस उर्दू पद्यानुवाद, आपके वर्ष भरके परिश्रम का फल है। अनुवाद की भाषामें मधुरता है। यद्यपि कहीं-कहीं फ़ारसी के शब्दों से भी काम लिया है, पर उनमें कोई शब्द ऐसा नहीं जो ग़ैर मालूम हो। बिहारी के अलंकारों का कहीं लालित्य न चलो जाय, इससे जान-बूझकर ज्यों के त्यों शब्द कई शैरों में रख दिए गये हैं। आपके अनुवाद में उर्दू केवल नाममात्र हो को है। उर्दू ही आज कल की प्रायः हिंदी बन गई है, जिसे हम खड़ी बोली के नाम से पुकारते हैं और जो राष्ट्रीय भाषा का स्वागत कर रही है। उर्दू लिपिमें, संस्कृत के शब्द प्रकाशित करने में ठीक उच्चारण की जितनी अड़चन हो सकती है, उतनी उर्दू शब्द को नागरी में प्रकाशित करने मे नहीं। इस लिए, यह निश्चित करके सुगुल भाषामें रसिक सज्जनों के मनोरंजनार्थ, यह गुलदस्ता प्रथम बार हिन्दी नागरी लिपिमें ही प्रकट हुआ है। आशा है, कि इस सुमन-गुच्छ के विविध रंगके प्रफुल्लित पुष्पों की भाव-भरित मकरंद-सुगंधि पर भावुक मधुकरों का हृदय-कमल अवश्य हो प्रफुल्लित हुए बिना न रह सकेगा।

श्रीनाथ द्वारा,
शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल ११, सोम
सं० १९८० विक्रमी

विजावर-निवासी
भट्ट पुरुषोत्तम शर्मा तैलंग

प्रकाशक के दो शब्द

कुछ दिन हुए काशी-हिन्दू-विश्व-विद्यालय के हिन्दी प्रोफ़ेसर लाला भगवानदीनजी ने बिहारी-सतसई के प्रस्तुत उर्दू पद्यमय अनुवाद का कुछ अंश हमें दिखाने की कृपा की थी। अनुवाद सरस, सरल एवं सुंदर देखकर हमारी इच्छा हुई कि इसे भी हम अपने उसी "काव्य-ग्रन्थ-माला" में गूथें, जिसके बिहारी-सतसई के सटीक संस्करण को हिन्दी-संसार ने बहुत ही पसंद किया था। हमने अपनी यह अभिलाषा श्रद्धेय लालाजी पर प्रकट की, जिनकी विशेष कृपा से हमें यह पुस्तक प्राप्त हुई।

अनुवाद का हस्तलेख (manuscript) पाते ही हमने "सरस्वती" में इस आशय की एक सूचना प्रकाशित कर दी कि बिहारी-सतसई का श्रीयुत 'प्रीतम' जी कृत उर्दू पद्यमय अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होगा। फिर क्या था! आर्डर धड़ा-धड़ आने लगे, जिनका ताँता अब तक जारी है।

पर, हमें दुःख है कि कई अनिवार्य कारणवश हम इसे अब तक न निकाल सके थे। इतने दिनों तक पुस्तक के लिए, अपने अनुग्राहक-ग्राहकों तथा अन्य हिन्दी-प्रेमियों को, जो हमने उत्सुकतावस्था में रखा, उसके लिए हम उनसे क्षमा-प्रार्थी हैं। आज इसे हिन्दी-संसार के सम्मुख उपस्थित करने में हमें बड़ी ही प्रसन्नता होती है।

"भिन्न रुचिर्हि लोकः" का ख़याल करके तथा प्रस्तुत अनुवाद के प्रेमियों के इच्छानुसार हमें इसके तीन प्रकार के संस्करण निकालने पड़े हैं। एक में मूल दोहों के नीचे, सिलसिले से, हिन्दी-लिपि में अनुवाद के शेर रखे गये हैं; दूसरे में, साथ ही, कुल शेर, उर्दू, लिपि में भी, पुस्तकान्त में संग्रहीत कर दिये गये हैं, और तीसरे में शेर मात्र ही उर्दू लिपि में हैं। यह तीसरा

संस्करण उर्दू-प्रेमी, किन्तु हिन्दी-भाषा से अनभिज्ञ, सज्जनों के काम का है। साधारण उर्दू जाननेवाले सज्जन अरबी और फ़ारसी के कठिन शब्दों का मतलब नहीं समझते। उनके सुभीते के खयाल से पुस्तकान्त में ऐसे शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं।

हमने इन संस्करणों को भरसक सर्वांग पूर्ण बनाने की पूरी चेष्टा की है। फिर भी, बहुत संभव है, अति शीघ्र मुद्रण के कारण कुछ त्रुटियां रह गई हों। अगली आवृत्ति में ऐसी त्रुटियाँ दूर कर दी जायँगीं, और छूटी हुई प्रेस-संबंधी भूलों का भी सुधार कर दिया जायगा।

श्रीयुत लाला भगवानदीनजी ने प्रस्तुत अनुवाद के प्रूफ को भी एक बार देख लेने की कृपा की है। अतएव इसके लिए हम आप के विशेष रूप से कृतज्ञ हैं।

विनीत—

गया प्रसाद शुक्ल,

व्यवस्थापक।

॥ श्रीहरिः ॥

गुलदस्तए-बिहारी

[१]

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परें, स्याम हरित दुति होय॥
मेरे अफ्कारे-दुनिया दूर कीजे राधिका रानी।
कि जिनके सायएतन से, हरे हों श्याम नूरानी॥

[२]

सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मो मन सदा, बसौ बिहारीलाल॥
मुकुट सिर, काछनी ज़ेबे कमर, सीने पै बनमाला।
लिये हाथों में मुरली, दिलमें बसिये मेरे नँदलाला॥

[३]

मोहनि मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोय।
बसति सुचित अंतर तऊ, प्रतिबिम्बित जग होय॥
अजब कुछ श्याम की उस मोहनी सूरत में शक्ती है।
बसी जो शीशए-दिल में, मगर बाहर झलकती है॥

[४]

तजि तीरथ हरि-राधिका,-तनदुति करि अनुराग।
जिहि ब्रज केलि-निकुंज-मग, पग पग होत प्रयाग॥
तजो तीरथ, भजो हरि राधिका का जिस्म नूरानी।
त्रिवेनी जिनके केलों से है पग २ मग ब-आसानी॥

[५]

सघन कुंज छाया सुखद, सीतल मंद समीर ।
मन ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर ॥
हवा ठण्डी, घनी कुंज और छाया लहलहाती है ।
लबे-बहरे-जमुन अब भी वही कैफ़िय्यत् आती है ॥

[६]

सखि सोहति गोपाल के, उर गुंजन की माल ।
बाहिर लसति मनो पिएं दावानल की ज्वाल ॥
अली ब्रजराज के उर राजती है गुंज की माला ।
रही है झिलमिला गोया दवानल की प्रकट ज्वाला ॥

[७]

जहां जहां ठाढ़ौ लख्यौ, श्याम सुभग सिर-मौर ।
उनहूं बिन छिन गहि रहति. दृगनि अजौं वह ठौर ॥
खड़े देखे थे जिस जिस जा धरे सिर पर मुकुट सुन्दर ।
पकड़ रखती है उन बिन वह जगह अबभी निगह दमभर ॥

[८]

चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वै हलधर के वीर ॥
मुबारिक, क्यों न इस जोड़ी में उल्फ़त हो ज़ियादा तर ।
बिरादर हैं ये हलधर के वो हैं वृषभानु की दुख़्तर ॥

[९]

नितिप्रति एकतही रहत, बैस बरन मन एक ।
चहियत जुगल किसोर लखि, लोचन जुगल अनेक ॥
बरन मन बैस है इक, साथ भी जाता नहीं छोड़ा ।
वो जोड़ी देखने को चाहिये आँखें कई जोड़ा ॥

[१०]

मोर मुकुट की चंद्रिकनि, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससिसेखर के अकस, किय सेखर सतचंद॥
हिमाले-ताज-ताऊसी की ज़ीनत का है यह कारण।
बज़िद्दे चन्द्रशेखर ये किये सद चन्द्र हैं धारण॥

[११]

नाचि अचानक ही उठे, बिन पावस बन मोर।
जानति हौं नंदित करी, यह दिसि नंद किसोर॥
अचानक नाच उठे बन मोर बिन ही घोर घन छाये।
समझ पड़ता है, शायद इस तरफ़ घनश्याम जी आये॥

[१२]

प्रलय करन बरषन लगे, जुरि जलधर इकसाथ।
सुरपति-गर्व हर्‌यौ हरषि, गिरिधर गिरिधरि हाथ॥
लगे मिलकर बरसने मेघ बरषा कर दिया महशर।
बहाई इन्द्र की शेखी, लिरी गिरिधर ने गिरि धरकर॥

[१३]

डिगत पानि डिगुलातगिरि, लखि सब ब्रज बेहाल।
कंप किसोरी दरस तें, खरे लजाने लाल॥
हिला गिरि-हाथ हिलने से, हुई ब्रजजन को अकुलाहट।
लजाए लाल लरज़ा हो, लखीनूपुर की सुन आहट॥

[१४]

लोपे कोपे इंद्र लौं, रोपे प्रलय अकाल।
गिरिधारी राखे सबै, गो गोपी गोपाल॥
क़यामत इन्द्र ने बेवक़्त करदी, कह कर भारी।
मुहाफ़िज़ बनगये गो गोप गोपीगन के गिरिधारी॥

[१५]

लाज गहौ बेकाज कत, घेरि रहे घर जाहिं।
गोरस चाहत फिरत हौ, गोरस चाहत नाहिं॥
अबस घेरे खड़े, शरमाइये, जाने भी घर दीजे।
नहीं गोरस का रस, रसिया बने गोरस का रस पीजे॥

[१६]

मकराकृति गोपाल के, कुंडल सोहत कान।
धस्यौ समर हिय गढ़ मनौ, ड्योढ़ी लसत निसान॥
ये, मकराकृत कुंडल कान में हैं शान महबूबी।
अलम उड़ता धसा है किलअए दिल में शहे खूबी॥

[१७]

गोधन तू हरष्यो हिये, घरियक लेहि पुजाय।
समुझि परैगी सीस पर, परत पसुन के पाय॥
पुजाले दो घड़ी गोधन खुशी से अब तो दिन आए।
मज़ा चक्खेगा, जब रक्खेंगे सरपर पाँव चौपाए॥

[१८]

मिलि परछाहीं जोन्ह सों रहे दुहुनि के गात।
हरि राधा इक संगहीं, चले गली में जात॥
छिपे महताबो सायः में प्रिया प्रीतम के तन हिल मिल।
चले जाते हैं ब्रज गलियों, रही है चाँदनी सी खिल॥

[१९]

गोपिन सँग निस सरद की, रमत रसिक रस रास।
लहाछेह अति गतिन की, सबनि लखे सब पास॥
रमे रस रास गोपिन सँग, शरद की रैन उजियारी।
हइक ने पास चंचलगत से यक सूरत लखी न्यारी॥

[२०]

मोर चद्रिका स्याम सिर, चढ़ि कत करति गुमान।
लखिबी पायनि पर लुठत, सुनियत राधा मान॥
शिखिन की चन्द्रिकन सर श्याम चढ़, इतना न इतराना।
लखेंगे लोटते पैरों, सुना प्रिय मान है ठाना॥

[२१]

सोहत ओढ़े पीतपट, स्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैलपर, आतप पर्यो प्रभात॥
सलोने श्यामले तन पर झलकता यों है पीतअम्बर।
पड़ें सूरज की किरनें सुब्ह ज्यों कुहसार नीलम पर॥

[२२]

किती न गोकुल कुलबधू, काहि न किन सिष दीन।
कौने तजी न कुल गली, ह्वै मुरलीसुर लीन॥
न गोकुल में थीं कितनी खानदानी, किसने क्या मानी।
हुई मुरली की धुन सुन कौन कुल तजकर न दीवानी॥

[२३]

अधर धरत हरि के परत, ओठ डीठ पट जोति।
हरित बांस की बांसुरी, इंद्रधनुष सी होति॥
अधर धरते अधर पट डोठ की आभा झलकती है।
हरी हरि की मुरलि क़ौसे-कुज़ह के रँग दमकती है॥

[२४]

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबन अंग।
दीपति देह दुहूनि मिलि, मनहुँ ताफता रंग॥
लड़कपन की झलक औ नूर आगाज़े जवानी है।
बरंगे ताफ़ता दोनों की ज़ू से जिस्म जानी है॥

[२५]

तिय तिथि तरनि किसोर वय, पुन्यकाल सम दौन।
काहू पुन्यनि पाइयत, वयस सन्धि संक्रौन॥
वो मह तिथि, बालग़ीखुर, वक्‌ अक़्दस दोनों यकसां हैं।
ये संक्रान्त और तवदीलीय-सिन पाना न आसां हैं॥

[२६]

ललन अलौकिक लरकई, लखि लखि सखी सिहाति।
आज कालि मैं देखियत, उर उकसौंहीं भांति॥
अलौकिक लड़कई लख लख सखी उसकी सिहाती है।
हुई कुछ आजही कलमें वो उकसौंहीं सी छाती है॥

[२७]

भावक उभरौहौं भयौ, कछुक पर्‍यौ भरु आय।
सीपहरा के मिस हियौ, निस दिन देखत जाय॥
उभरती सी हुई छाती पड़ा है भार सीने पर।
वो जोबन देखती रहती है सीपज हारका मिस कर॥

[२८]

इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार।
कितो न अवगुन जग करत, नै वै चढ़ती बार॥
कोई भीगे पड़े चहले, कोई डूबे, बहे सदहा।
नहीं क्या क्या सितम करती है, चढ़ती उम्र औ दरिया॥

[२९]

अपने तनके जानि कै, जोवन नृपति प्रवीन।
स्तन मन नैन नितम्ब कौं, बड़ौ इजाफा कीन॥
तनी अपना समझकर, शाह जोबन ने है अपनाया।
इज़ाफ़ा चश्म पिस्तानां, सुरीनो दिल का फरमाया॥

[३०]

देह दुलहिया की बढ़ै, ज्यौं ज्यौं जोबन जोति।
त्यौं त्यौं लखि सौतैं सबैं, बदन मलिन दुति होति॥
तरक्की जिसक़दर दुलहन की जोबन जोत ने पाई।
ज़ियाए रूए अंबाग़ा है त्यों त्यों और कुम्हलाई॥

[३१]

नव नागरि तन मुलक लहि, जोबन आमिल जोर।
घटि बढ़ि ते बढ़ि घटि रकम, करी और की और॥
तने-खातून-नौ की सल्तनत जो हाथ आई है।
रक़में जोबन के आमिल ने घटाई कुछ बढ़ाई है॥

[३२]

लहलहाति तन तरुनई, लचि लगि लौं लफि जाय।
लगै लांक लोयन भरी, लोयन लेति लगाय॥
तरावत लहलही तन पर, कमर है बेद सी झुकती।
नज़ाकत देखकर ये आँख बिन चिपके नहीं रुकती॥

[३३]

सहज सचिक्कन श्याम रुचि, सुचि सुगंध सुकुमार।
गनत न मन पथ अपथ लखि, बिथुरे सुथरे बार॥
मुरग्गन कुदरतन मुश्की मुलायम हम पुर-अज़-खुशबू।
नहीं दिल घाट औघट देखता, देखे परेशाँ मू॥

[३३]

वेई कर ब्यौरनि वहै, ब्यौरौ क्यौं न बिचार।
जिनही उरझ्यौ मो हियौ, तिनहीं सुरझे बार॥
वही हाथ और सुलझाना है ऐ दिल मूशिगाफ़ी कर।
है उलझा जिससे तू सुलझा रहा गेसू वही दिलवर॥

[३५]

कच समेटि भुज कर उलटि, खरी सीस पट डारि।
काको मन बाँधै न यह, जूरौ बाँधनि हारि॥
समेटे हाथ से गेसू उलट कर शानः पर डाले।
फँसा सकते नहीं किसको ये जूड़ा बाँधने वाले॥

[३६]

छुटें छुटावैं जगत तें, सटकारे सुकुमार।
मन बाँधत बेनी बँधैं, नील छबीले बार॥
छुटाते हैं, छुटे जगसे वो नाज़ुक बाल सटकारे।
बँधे मन बाँधते बेनी छबीले नील घुँघरारे॥

[३७]

कुटिल अलक छुटि परत मुख, बढ़ि गौ इतौ उदौत।
बंक बिकारी देत ज्यौं, दाम रुपैया होत॥
बढ़ी मुखड़े की रौनक़ उस पै टेढ़ी लट के आने से।
कि जैसे दाम रुपया हो बिकारी के लगाने से॥

[३८]

ताहि देखि मन तीरथनि, बिकटानि जाय बलाय।
जा मृगनैनी के सदा, बेनी परसत जाय॥
उसे तज जा बिकट तीरथ, उठावै कौन बेचैनी।
कि जिसके पाक चरणों को परसती है सदा बैनी॥

[३९]

नीकौ लसत ललाट पर, टीकौ जटित जड़ाय।
छबिहिं बढ़ावत रवि मनौ, शशिमंडल मैं आय॥
तेरा टीका मुरस्सअ़ क्या जबीं पर नूर लाया है।
क़मर के दायरें में शम्स ने ज़ौ को बढ़ाया है॥

[४०]

सबै सुहाए ई लगैं, बसत सोहाये ठाम।
गोरे मुख बेंदी लसै, अरुन पीत सित स्याम॥
सुहाई जगह बसने से अजब छवि इनमें छाई है।
सफेदो-सुर्ख़ श्यामोज़र्द बेंदी मुख सुहाई है॥

[४१]

कहत सबै बेंदी दिये, आँक दस गुनौ होत।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत॥
सुना, बेंदी अदद की दस गुना कर देती है क़ीमत।
तेरी बेंदी ने पेशानी को दी लाइन्तिहा ज़ीनत॥

[४२]

भाल लाल बेंदी छये, छुटे बार छबि देत।
गह्यौ राहु अति आह करि, मनु ससि सूर समेत॥
हैं बिखरे बाल बेंदी लाल झुरमट मुख पै बहुतेरा।
क़मर के साथ ही गोया ज़नब ने शम्स को घेरा॥

[४३]

पायल पाय लगी रहै, लगे अमोलक लाल।
भोड़लहू की भासिहै, बेंदी भामिनि भाल॥
पड़ी पैरों है पाजेबे मुरस्सा लाल लासानी।
बना अबरक़ है बेंदी महजबीं की चढ़ के पेशानी॥

[४४]

भाल लाल बेंदी ललन, आषत रहे बिराजि।
इंदु कला कुज में बसी, मनौ राहु भय भाजि॥
पड़ीं चावल की अफशाँ, सुर्ख बेंदी बिच है माथे पर।
हिलाल आकर छिपा मिर्रीख़ में ख़ौफ़े ज़नब खाकर॥

[४५]

मिलि चंदन बेंदी रही, गोरे मुख न लखाय।
ज्यों ज्यों मद लाली चढ़े, त्यों त्यों उघरति जाय॥
वो गोरे गोरे मुखड़े पर नहीं देता था दिखलाई।
मए-गुलरंगने ज़ौ क़शक़ए सन्दल की झलकाई॥

[४६]

तिय मुख लखि हीरा जरी, बेंदी बढ़ै बिनोद।
सुत सनेह मानो लियो, बिधु पूरन बुध गोद॥
तेरी हीरे की बेंदी देखकर रुख़पर है खुरसन्दी।
अतारद गोद में है बद्र के अज़-मेह्र-फरज़न्दी॥

[४७]

गढ़ रचना, बरुनी, अलक, चितवनि भौंह कमान।
आघु बँकाई ही बढ़ै, तरुनि, तुरंगम, तान॥
हिसारो क़ोस अब्रू मिज़्ह काकुल लेहन औ चितवन।
समंदो नाज़नी की है कजी से कद्र, ऐ पुरफ़न॥

[४८]

नासा मोरि नचाय दृग, करी कका की सौंहँ।
काँटे सी कसकति हिये, वहै कटीली भौंह॥
शिकन बीनी को दै, आँखें नचा, अम की क़सम खाई।
खटकती दिलमें है पुरख़ार अब्रू की वो रैनाई॥

[४९]

खौरि पनच भृकुटी धनुष, बधिक समर ताजि कानि।
हनत तरुन मृग तिलक सर, सुरक भाल भरि तानि॥
कमाँ अब्रू, तिलक नावक, पनच है खौर पेशानी।
बना है हुस्न सय्याद, और शिकार आहूये इन्सानी॥

[५०]

रस सिंगार मंजन किये, कंजन भंजन दैन।
अंजन रंजन हूं बिना, खंजन गंजन नैन॥
हैं रंगे-इश्क में डूबे, कमल ग़ैरत से है पानी।
इन आँखों से बिला सुरमा ही साग़रा को है हैरानी॥

[५१]

खेलन सिखये आलि भलें, चतुर अहेरी मार।
कानन चारी नैन मृग, नागर नरनि सिकार॥
शिकारी हुस्न ने तेरे सिखाई है ब-उस्तादी।
गिज़ाले चश्म को ज़ालिम दिले दाना की सय्यादी॥

[५२]

अरतें टरत न बर परे दई मरुक मनु मैन।
होड़ा होड़ी बढ़ि चले चित चतुराई नैन॥
ये दी है हुस्न ने तरग़ीब, यक दीगर से चढ़ते हैं।
तेरे चश्मो दिलो शोख़ी मुसिर हो हो के बढ़ते हैं॥

[५३]

सायक सम मायक नयन, रँगे त्रिबिध रँग गात।
झखौ बिलखि दुरि जात जल, लखि जलजात लजात॥
ख़दंगे-चश्म में है क्या सफेदी सुर्ख़ी औ स्याही।
नदामत से हैं डूबे आब में नीलोफर औ माही॥

[५४]

जोग जुगत सिखये सबै मनो महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता, कानन सेवत नैन॥
महा-मुनि-मैन ने गोया जुगत हठयोग सिखलाई।
रहे से नैन कानन चाहते हैं पी की एकताई॥

[५५]

बर जीते सर मैन के ऐसे देखे मैं न।
हरिनी के नैनान तैं हरि नीके ए नैन॥
है तीरे हुस्न की भी इनके आगे इंजिला फीकी।
ये हिरनी की भी आँखों से हैं आँखें देखु हरि नीकी॥

[५६]

संगति दोष लगै सबै, कहे जु सांचे बैन।
कुटिल बंक भ्रू संग तें, भए कुटिल गति नैन॥
कहा है सच; कहाँ तासीर सुहबत ने न दिखलाई।
तेरी अब्रूये पुरख़म ने कजी चितवन को सिखलाई॥

[५७]

दृगनि लगत बेधत हियौ, बिकल करत अँग आन।
ए तेरे सब तें विषम, ईछन तीछन बान॥
लगै आँखों मैं चीरै दिल, व मुज़तर उज़्व हों सारे।
तेरे तीरे नजर में क्या ग़ज़ब का जहर है प्यारे॥

[५८]

झूठे जानिन संग्रहे, मनु मुँह निकसे बैन।
याही तें मानो किये, बातनि को बिधि नैन॥
ज़बाँ की गुफ्तगू में कज़्ब के भी लौस को पाया।
इसी से बात करना आँख को नेचर ने सिखलाया॥

[५६]

फिरि फिरि दौरत देखियत, निचले नेकु रहैं न।
ए कजरारे कौन, पै करत कजाकी नैन॥
हैं फिर २ दौड़तीं ये है ग़ज़ब की इन में मश्शाकी।
ये किस पर सुरमगीं आँखें किया करती हैं क़ज़्ज़ाक़ी॥

[६०]

खरी भीरहू भेदि कै, कितहू है उत जाय।
फिरै डीठि जुरि दुहुँन की, सब की डीठि बचाय॥
बड़ी भी भीर को ये चीर आपुस में मिल-जाती हैं।
बचा सब की नज़र दोनो की नजरें लौट जाती हैं॥

[६१]

सबही तन समुहात छिन, चलति सबनि दै पीठि।
वाही तन ठहराति यह, कबिलनुमा लौं डीठि॥
सभी के रूबरू जा जा ये हरदम पीठ करती हैं।
उसी के रुख़ नज़र क़िब्लानुमा सौं जा ठहरती हैं॥

[६२]

कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैनन हीं सौं बात॥
मुकरती इल्तिजापर रीझ खिझ मिल खिल लजाती है।
भरे घर में सुलोचन बात ग़मज़ों से बनाती है॥

[६३]

सब अँग करि राखी सुघरि, नायक नेह सिखाय।
रसजुत लेति अनन्त गति, पुतरी पातुर राय॥
सिखाई नेह नायक ने रसीली हरकतें लाखों।
है ख़ातूनुत्तवायफ़ ले रही पुतली गतें लाखों॥

[६४]

कंजनयानि मंजन किये, बैठी ब्यौरति बार।
कच अँगुरिन बिच डीठि दै, निरखति नंदकुमार॥
कमल लोचन किये मंजन है बैठी बाल सुलझाती।
निगह अंगुश्त काकुल बिच है-प्रीतम देखती जाती

[६५]

डीठि बरत बांधी अटनि, चढ़ि धावत न डेरात।
इत उततें चित दुहुनि के, नट लौं आवत जात॥
रसन तारे नज़र की बाँध अटों नट खेल करते हैं।
इधर से दिल उधर दोनों के चढ़ दौड़ें, न डरते हैं॥

[६६]

जुरे दुहुनि के दृग झमकि, रुके न झीने चीर।
हलकी फौज हरौल ज्यों, परत गोल पै भीर॥
न रुक झाने से पट लोचन झमक दोनों के लड़ते हैं।
हरावल तोड़, हलकी गोल पर ज्यों टूट पड़ते हैं॥

[६७]

लीने हूं साहस सहस, कीने जतन हजार।
लोयन लोयन-सिन्धु तन, पैरि न पावत पार॥
ब-तदबीरो तहौवर ज़ोर गो लाखों लगाते हैं।
न दीदे बहे तनको पैर कर पर पार पाते हैं॥

[६८]

पहुंचति डटि रन सुभट लौं, रोकि सकै सब नाहिं।
लाखन हू की भीर मैं आँखि उतै चलि जाहिं॥
दिलावर की तरह करना है जो कुछ कर गुज़रती हैं।
हज़ारों की सफ़ों को चीर आँखें वार करती हैं॥

[६९]

गड़ी कुटुँब की भीर में, रही बैठि दै पीठि।
तऊ पलक परि जात उत, सलज हँसौंही डीठि॥
कुटुम की भीर में दै पीठ बैठी हैं छकीं आँखें।
इधर तकती हैं फिर फिर पुरतबस्सुम शर्मगीं आँखें॥

[७०]

भौंह उचै आंचरु उलटि, मौर मोरि मुँह मोरि।
नीठि नीठि भीतर गई, डीठि डीठि सों जोरि॥
अदा से मौर मुड़, अब्रूनचा, मुहँ फेर उलट आँचल।
मिला आँखों से आखें होगई आहिस्ता से ओझल॥

[७१]

ऐंचत सी चितवनि चितै, भई ओट अलसाय।
फिरि उझकनि कौं मृगनयनि, दृगनि लगनिया लाय॥
हुई दिलकश नज़र से देख ओझल लैके अंगड़ाई।
उठा सर फिर वो आहूचश्म आँखें ताक़ में लाई॥

[७२]

सटपटाति सी ससि मुखी, मुख घूँघट पट ढाँकि।
पावक झर सी झमकि कै गई झरोखा झांकि॥
बशोख़ी माहरू ने शर्म से घूँघट में मुहँ ढाँका।
बरंगे शोलए आतिश झरोखे से ज़रा झाँका॥

[७३]

लागत कुटिल कटाच्छ सर, क्यों न होंहि बेहाल।
कढ़त जु हियो दुसार करि, तऊ रहत नटसाल॥
ख़दंगे चश्मके लगते ही, क्यों-कर दिल न हो ग़लताँ।
निकल जाता है गो नावक, खटकता रहता है पैकाँ॥

[७४]

नैन तुरंगम अलक छबि, छरी लगी जिहि आय।
तिहिं चढ़ि मन चंचल भयो, मति दीनी बिसराय॥
समन्दे चश्म को जब शाख गैसू का लगा कोड़ा।
मेरा दिल था सवार उसपर, इनाने-अक़्ल को छोड़ा॥

[७५]

नीचीए नीची निपट. डीठि कुही लौं दौरि।
उठि ऊँचे नीचे दियो, मन कुलंग झक झोरि॥
निगह, के बाज़ ने तेरे झपट कर नीचे ही नीचे।
ज़रा ऊँचे को उठ पर बाल मुर्ग़-दिल के जा खींचे॥

[७६]

तिय कित कमनैती पढ़ी, बिनु जिह भौंह कमान।
चित बेझे चूकति नहीं, बंक बिलोकनि बान॥
कमाँ अब्रू कहाँ सीखी ये बिन ज़ेह नावक-अन्दाज़ी।
ख़दंगे कज निगह चुकता नहीं दिल की निशाँबाज़ी॥

[७७]

दूरे खरे समीप को, मानि लेत मन मोद।
होत दुहुँन के दृगनि ही. बतरस हँसी बिनोद॥
खड़े गो दूर, फिर भी लुफ्त कुरबत का उठाते हैं।
तकल्लुम औ तबस्सुम का मज़ा आँखों से पाते हैं॥

[७८]

छुटै न लाज न लालचौ, प्यौ लखि नैहर गेह।
सटपटात लोचन खरे, भरे सँकोच सनेह॥
पिया को देख नैहर में हया औ शौक़ चराए।
सनेहो शील के संगम ललक लोचन सुछबि छाए॥

[७९]

करे चाह सों चुटकि कैं, खरे उड़ौंहैं मैन।
लाज नवाये तरफरत, करत खूंद सी नैन॥
लगा है इश्क़ का कोड़ा उठाकर सरको चलते हैं।
इनाने-शर्म से दीदे सिमिटते हैं उछलते हैं॥

[८०]

नावक सर से लाय कै, तिलक तरुनि इत ताकि ।
पावक झर सी झमकि कै, गई झरोखा झांकि ॥
लगाकर क़शक़ए सन्दल बना नावक सा इक बाँका ।
बरंगे शोलए आतिश झरोके से ज़रा झाँका ॥

[८१]

अनियारे दीरघ दृगनि. किती न तरुनि समान ।
वह चितवनि औरै कछू, जिहिं बस होत सुजान ॥
नुकीले नैनवाली एक से इक जग में आली है ॥
सुजानों के जो चित छीने, वो चितवन ही निराली है ॥

[६२]

चमचमात चंचल नयन, बिच घूंघट पट झीन ।
मानहुं सुर सरिता विमल, जल उछरत जुग मीन ॥
तेरे झीने से घूँघट में चपल चख चमचमाते हैं ।
उछलते गंग-जल में जुफ्ते माही से दिखाते हैं ॥

[८३]

फूले फदकत लै फरी, पल कटाछ करवार ।
करत बचावत बिय नयन, पायक घाय हजार ॥
पलक ढालें हैं, ग़मज़ों के सरासर सैफ़ चलते हैं ।
खिलाड़ी नैन हैं दोनों के भिड़ते औ निकलते हैं ॥

[८४]

जदपि चवायनि चीकनी, चलत चहूँ दिसि सैनं ।
तऊ न छांड़त दुहुँन के, हँसी रसीले नैन ॥
इशारों से हैं करते चार सू ग़म्माज़ ग़म्माज़ी ।
नहीं दोनों की नज़रें छोड़तीं फिर भी निगहबाज़ी ॥

२

[८५]

जटित नीलमनि जगमगति, सींक सुहाई नाँक ।

मनो अली चंपक कली, बसि रस लेत निसाँक ॥

मुरस्सअ नीलमणि की सींक है बीनी की आरायश ।
भँवर चम्पाकली पर बेख़तर करता है आसायश ॥

[८६]

बेधक अनियारे नयन, बेधत कर न निषेध ।

बरबस बेधत मोहियो, तो नासा को बेध ॥

सिनाने चश्म भी मेरे जिगर से गो गुज़रता है ।
तेरा सूराख़बीनी दिल में घुस सूराख़ करता है ॥

[८७]

जदपि लौंग ललितौ तऊ, तूं न पहिरि इक आँक ।

सदा संक चढ़िए रहै, अहै चढ़ी सी नाँक ॥

पहिन मत नाक में तू लौंग, गो है ज़ीनत-आगीनी ।
हमेशा खौफ़ रहता है कि है क्यों पुरशिकन बीनी ॥

[८८]

बेसरि—मोती—दुति झलक, परी ओठ पर आय ।

चूनौ होइ न चतुर तिय, क्यों पट पोछो जाय ॥

पड़ी बेसर के मोती की झलक है यह तेरे लब पर ।
नहीं है नाज़नीं चूना ये पोंछे से पुंछे क्योंकर ॥

[८९]

इहि द्वैही मोती सुगथ तू, नथ गरबि निसाँक ।

जिहि पहिरे जग—दृग ग्रसति, लसति हँसति सी नाँक ॥

दोही मोती पे ऐ नथ इस क़दर है तुझको ख़ुदबीनी ।
किए है मह्व चश्मेख़ल्क़ को ये ज़ीनत—आगीनी ॥

[६०]

बेसरि-मोती धन्य तूं, को पूछै कुल जाति।
पीबो करि तिय-ओठ को, रस निधरक दिन राति॥
ज़हे क़िस्मत तेरी बेसर के मोती ज़ात का क्या ग़म।
लबे-शीरीं को चूसा कर बिला ख़ौफ़ोख़तर हरदम॥

[६१]

बरन बास सुकुमारता, सब बिधि रही समाय।
पँखुरी लगी गुलाब की, गाल न जानी जाय॥
नज़ाकत रंगोख़ुशबू का हुआ मिल एक ही खाता।
लगा गुल बर्ग रुख़सारों पै पहिचाना नहीं जाता॥

[६२]

लसत सेत सारी ढक्यौ, तरल तरौना कान।
पर्‌यौ मनो-सुरसरि-सलिल, रवि-प्रतिबिम्ब बिहान॥
तरौना सेत सारी में नहीं तेरा दुरख्शाँ है।
मगर गंगाके जल में मुनअक़स ख़ुरशेद ताबाँ है॥

[६३]

सुदुति दुराये दुरति नहीं, प्रगट करति रति रूप।
छुटै पीक औरै उठी, लाली ओठ अनूप॥
छिपा मत रति की रौनक़ को, ये छिपने की नहीं आली।
छुटी जब पान की सुर्ख़ी उठी लब और ही लाली॥

[६४]

कुच-गिरि चढ़ि अति थकित ह्वै, चली डीठि मुख चाड़।
फिरि न टरी परिये रही, परी चिबुक की गाड़॥
नज़र कुहसार पिस्ताँचढ़, थकी, रुख़ की तरफ़ आई।
गिरी ग़ारे-ज़क़न में जा, न वाँ से फिर निकल पाई॥

[६५]

लालित स्यामलीला ललन, चढ़ी चिबुक छबि दून ।
मधु छाक्यौ मधुकर पर्‍यौ मनो गुलाब प्रसून ॥
तेरे गोरे जक़न पर श्याम-गुदना से है छबि दूनी ।
पड़ा है हौज़गुल में इक भँवर मख़मूरो मजनूनी ॥

[६६]

डारे ठोढ़ी-गाढ़ गहि, नैन बटोही मारि ।
चिलक चौंधि मैं रूप ठग, हाँसी फाँसी डारि ॥
शफ़क़ दम्दाँ लगा हाँसी की फाँसी रूप ठग माते ।
बटोही नैन को ग़ारे-ज़नख़दाँ में है दफ़ नाते ॥

[६७]

तो लखि मो मन जो लही, सो गति कही न जाति ।
ठोढ़ी-गाढ़ गड़्यौ तऊ, उड़्यौ रहै दिन राति ॥
कहूँ क्या, देखकर तुझको, कि कैसा दिल दहलता है ।
गड़ा ग़ारेज़नख़ में गो, पड़ा वाँ भी उछलता है ॥

[६८]

लोने मुख डीठि न लगै, यौं कहि दीनौ ईठ ।
दूनी ह्वै लागन लगी, दिये दिठौना दीठ ॥
डिठौना डीठ से बचने लगाया मुख सलोने को ।
लगी लगने दुगुन ही डीठ उससे नम्दछौंने को ॥

[६९]

पिय तिय सौं हँसि कै कह्यौ, लखैं दिठौना दीन ।
चंद मुखी मुख चंद तैं, भलौ चंद सम कीन ॥
डिठौना माहरू का देख प्रीतम ने कहा हँसकर ।
रुख़े बेहतरज़ मह को करदिया क्यों माह के महसर ॥

[१००]

गड़े बड़े छबि छाक छकि, छिगुनी छोर छुटै न ।
रहे सुरँग रँग रँगि वही, नह दी मँहदी नैन ॥
नहीं छुटती हैं छिंगुली से छकी हैं दंग हैं आँखें ।
तेरे नाख़ुन की मेंहदी से अजब गुलरंग हैं आँखें ॥

[१०१]

सूर उदितहूँ मुदित मन, मुख सुखमा की ओर ।
चितै रहत चहुँ ओर तें, निश्चल चखनि चकोर ॥
तुलूए मेह्र पर भी चारसू से खुशदिलो शशदर ।
चकोरें टकटकी बांधे हैं तकतीं वह रुखे-अनवर ॥

[१०२]

पत्राहा तिथि पाइए, वा घर के चहुँपास ।
निति प्रति पूनों ही रहै, आनन ओप उजास ॥
पता तक़्वीम से लगता है तिथिका, गिर्द उस घर के ।
रहा करती है पूनो रातदिन रूए मुनौवर से ॥

[१०३]

नेकु हसौंहीं बानि तजि, लख्यौ परत मुख नीठि ।
चौका चमकनि चौंध में, परत चौंध सी दीठि ॥
ज़रा हँसने से बाज़ आ, रुख़ नहीं देता है दिखलाई ।
दुरख्शे ताब दन्दाँ में नज़र पड़ती है चौंधाई ॥

[१०४]

चलन न पावत निगम-मग, जग उपज्यौ अति त्रास ।
कुच उतंग गिरिवर गह्यौ, मैना मैन मवास ॥
तरीक़े बेद पर चलना कठिन, जग छारही है सन ।
हिसारे कोह पिस्ताँ पर डटा है हुस्न का रहज़न ॥

[१०५]

ज्यौं ज्यौं जोबन, जेठ दिन, कुच मिति अति अधिकाति ।

त्यौं त्यौं छिन छिन कटि छपा, छीन परति निति जाति ॥

नई वह जोत जोबन दिन बदिन बढ़ती ही जाती है ।
कमर शब जेठ यामिन सी छिनी छिन छिन दिखाती है ॥

[१०६]

लगी अनलगी सी जु बिधि, करी खरी कटि छीन ।

किये मनो वाही कसरि, कुच नितम्ब अति पीन ॥

कमर जो इस क़द्र पतली तेरी बिधिने बनाई है ।
सुरीनो सीनः को उसके इवज़ दी यह मुटाई है ॥

[१०७]

जंघ जुगल लोयन निरे, करे मनो बिधि मैन ।

केलि-तरुन दुख दैन ए, केलि तरुन सुख दैन ॥

ये रानें खुशनुमा जो सानए-ख़ूबी ने ढाली हैं ।
तरुन को केलि सुख केला तरुन दुख देने वाली हैं ॥

[१०८]

रह्यो ढीठ ढाढ़स गहैं, ससि हरि गयो न सूर ।

मुर्‌यौ न मन मुरवानि चुभि, भौ चूरानि चपि चूर ॥

नहीं दिल हारता हिम्मत शुजाअत में ये है इकता ।
हुआ चुप चूर-चूरों में न मुरवों से मुरा असला ॥

[१०९]

पाय महावर देन कों, नाइन बैठी आय ।

फिरि फिरि जानि महावरी, एँड़ी मीड़त जाय ॥

चरन जावक लगाने के लिऐ बैठी है आ, नायन ।
है एँड़ी मीड़ती फिर फिर समझ गोली सी उन पायन ॥

[११०]

कौहर सी एड़ीन की, लाली निरखि सुभाय।
पाय महावर देय को, आप भई बे पाय॥
वो एँड़ी की जो देखी कुदरती उन्नाबगूं लाली।
महावर देते नायन को हुई हैरत से पामाली॥

[१११]

किय हायल चित चाय लगि, बाजि पायल तुअ पाय।
पुनि सुनि सुनि मुख मधुर ध्वनि, क्यौं न लाल ललचाय॥
तेरे नूपुर की धुन सुन सुन हुए हैं बेखुदो घायल।
मधुर मुखकी वो सुन बतियां न क्यों फिर लाल हो मायल॥

[११२]

सोहत अँगुठा पाय के, अनवट जर्‍यौ जराय।
जीत्यौ तरिवन दुति सुढर, पर्‍यौ तरनि मनु पाय॥
अँगूठे में मुजैयन है मुरस्सा अनवटा अज़ ज़र।
है जीता ताब तरवन ने, पड़ा ढल शम्श चरणों पर॥

[११३]

पग पग मग अगमन परत, चरन अरुन दुति झूलि।
ठौर ठौर लखियत उठै, दुपहरिया से फूलि॥
ज़ियाए-सुरख़िये-पा हर क़दम पर भूल पड़ती है।
बरंगे नीमरोज़ा जा बजा क्या फूल पड़ती है॥

[११४]

दुरत न कुच बिच कंचुकी, चुपरी सादी सेत।
कवि अंकनि के अर्थलौं, प्रगट दिखाई देत॥
सफेदो सादह महरम में वो पिस्ताँ यों हैं दिखलाते।
कि जैसे लफ़्ज-शौर: मे मआनी हैं नज़र आते॥

[११५]

भई जु तन छबि बसन मीलि, बरन सकै सु न बैन ।
आँग ओप आँगी दुरी, आँगी आँग दुरै न ॥
हुई तन को बसन मिलि छबि जो कुछ मुखपर नहीं आती ।
छिपी अँगकी झलक अंगन न अँगिया से छिपी छाती ॥

[११६]

भूषन पहिरत कनक के, कहि आवत इहि हेत ।
दरपन के से मोरचे, देह दिखाई देत ॥
ज़री ज़ेवर तुझे जब ऐ परी; पहिनाए जाते हैं ।
बरंगेज़ंग आईना तेरे तन पर दिखाते हैं ॥

[११७]

मानहुं बिधि तन अच्छ छबि, स्वच्छ राखिबे काज ।
दृग पग पोंछन कौं करे, भूषन पायन्दाज ॥
तने शफ़्फ़ाफ़ सा उसका रहे हरदम मुसफ़्फ़ा तर ।
गढ़े कुदरत ने पायन्दाज़ पाए-चश्म को ज़ेवर ॥

[११८]

सोन जुही सी जगमगै, अँग अँग जोबन जोति ।
सुरँग कुसुम्भी कँचुकी, दुरँग देह दुति होति ॥
खिलो है यासमन सी अंग अंगों जोत जोबन की ।
सुरँग कंचुक कुसुंभी मिल दुरँग सी है जिला तन की ॥

[११९]

छप्यौ छबीलौ मुख लसै, नीले आंचर चीर ।
मनौ कलानिधि झलमलै, कालिन्दी के नीर ॥
तेरा गोरा सा मुखड़ा नील अंचल में दमकता है ।
जमुन के नीलगूँ जल में महे कामिल चमकता है ॥

[१२०]

लसै मुरासा तिय श्रवन, यौं मुकुतनि दुति पाय।

मानो परस कपोल के, रहे स्वेदकन छाय॥

मुरासा के हैं मोती कान में क्या शान दिखलाते।
पसीने के हैं क़तरे लम्स आरिज़ से छटा छाते॥

[१२१]

सहज सेत पचतोरिया, पहिरें अति छबि होति।

जल-चादरि के दीप लौं, जग मगाति तन जाति॥

सहज पचतोरिया पहिने अनूपम छबि दिखाती है।
शमअ जलचादरा सी जोत तन की जगमगाती है॥

[१२२]

सालति है नटसाल सी, क्यौंहूं निकसति नांहि।

मनमथ नेजा नोक सी, खुभी खुभी जिय मांहि॥

खटकती मिस्ल पैकाँ है नहीं हरगिज़ निकलती है।
अतनकी नोक़ नेज़ा सी खुभी चुभ दिल मसलती है॥

[१२३]

अजौं तर्‌यौना ई रह्यो, श्रुति सेवत इक अंग।

नाक वास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतन के संग॥

तरौना ही रहा अब तक इकंगी करके श्रुति-सेवा।
बसी है नाक में बेसर मिला मुक्तों से मिल मेवा॥

[१२४]

सो०-मंगल बिन्दु सुरंग, मुख ससि केसरि आड़ गुरु।

इक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन जगत॥

अतारद आड़ केसर, माह रुख़, मिर्रीख़ बन रोरी।
जगत लोचन किये रसमय लिये सँग नारि रस बोरी॥

[१२५]

गोरी छिगुनी अरुन नख, छला स्याम छवि देय ।

लहत मुकुति रति छिनक ए, नैन त्रिवेनी सेय ॥

छिगुल गोरी, अरुण मुख, श्याम छल्ला देख रँगराते ।
त्रिबेनी सेते ही यह नैन छिन, हैं रति मुकत पाते ॥

[१२६]

तरिवन कनक कपोल दुति, बिच बिच हीं जु बिकान ।

लाल लाल चमकत चुनी, चौका चीन्ह समान ॥

तरौना का है ज़र, नज़रे-ज़ियाए-आरिज़े-ताबाँ ।
चमकते लाल रेज़े हैं बरंगे सुरख़िए-दन्दाँ ॥

[१२७]

सारी भारी नील की, ओट अचूक चुकै न ।

मो मन मृग कर वर गहैं, अहैं अहेरी नैन ॥

निशानाबाज़, चश्मों का है डारी नील सारी है ।
ग़िज़ाले-दिल को पकड़ा हाथ ही से, क्या शिकारी है ॥

[१२८]

तन भूषन अंजन दृगनि, पगन महावर रंग ।

नहिं सोभा को साजिये, कहिवे ही को अंग ॥

चरन जावक, दृगों अंजन, मुज़ैयन तन पै है ज़ेवर ।
नहीं मुहताज हुस्न-इनका फ़क़त कहने को हैं तन पर ॥

[१२६]

पाय तरुनि कुच उच्च पद, चिरमि ठग्यो सब गाँव ।

छुटै ठौर रहिहै वहै, जु है मौल छवि नाँव ॥

मुक़ामे-आलिया पिस्ताँ का पा घुँघची ने जग लूटा ।
रहैगा नाम छबि क़ीमत वही अस्थान जब छूटा ॥

[१३०]

उर मानिक की उरबसी, डटत घटत दृग दाग।
झलकत बाहिर भरि मनो, तिय हिय को अनुराग॥
किया करती है मानिक उरबसी दाग़े जिगर ज़ायल।
छलकता है ये रसरंगों से तेरा इश्तियाक़े-दिल॥

[१३१]

जरी कोर गोरे बदन, बढ़ी खरी छबि देख।
लसति मनौ बिजुरी किये, सारद ससि परिवेष॥
सुनहली कोर गोरे मुख पै तेरे कैसी प्यारी है।
शरद्‌के चाँद पर गोया ये बिजली की किनारी है॥

[१३२]

देखति सोनजुही फिरति, सोनजुही से अंग।
दुति लपटति पट सेतहू, करत बनौठी रंग॥
समनवर यासिमनकी सैर कर, थम पैर धरती है।
जिलू तनकी कपासी रंग सी तनज़ेब करती है॥

[१३३]

तीज परब सौतिनि सजे. भूषन बसन सरीर।
सबै मरगजे मुँह करी, वहै मरगजे चीर॥
परब को तीज के सौतों ने पहिने कपड़े औ गहने।
किये पर उसने मैले मुंह वो मैला चीर ही पहने॥

[१३४]

पचरँग रँग बेंदी बनी, उठी जागि मुख जोति।
पहिरै चीर चिनौठिया, चटक चौगुनी होति॥
जबीं पच रंग बेंदी से तेरी क्या जगमगाती है।
चिनौटी चीर से चौगुन चटक तनपर दिखाती है॥

[१३५]

बेंदी भाल तँबोल मुख, सीस सिलसिले बार।
दृग आँजे राजे खरी, एही सहज सिंगार॥
सचिक्कन केश बेंदी भाल, ओठों पान की लाली।
नयन अंजन, यही सिंगार आला है तेरा आली॥

[१३६]

हौं रीझी लखि रीझिहौ, छबिहि छबीले लाल।
सोनजुही सी होति दुति, मिलति मालती माल॥
हों रीझी, आप भी रीझेंगे, वो छबि देख नंदलाला।
चँबेली ज़र्द सी होती है मिलते मालती माला॥

[१३७]

झीने पट में झिलमिली, झलकति ओप अपार।
सुर तरु की मनु सिंधु में, लसत सपल्लव डार॥
झिलमिल झिलमिली होती है झीने पट में नँदनन्दन।
झलकती नीरनिधि में है सपल्लव शाख हरिचन्दन॥

[१३८]

फिरि फिरि चित उतही रहत, टुटी लाज की लाव।
अंग अगं छवि झौंर में, भयो भौंर की नाव॥
रसन टूटी हया की, पड़ गया चक्कर में वे ज़िश्ती।
हुआ अँग अंग की छबि भौंर में दिल भौंर की किश्ती॥

[१३९]

केसरि कै सरि क्यौं सकै, चंपक केतिक रूप।
गात रूप लखि जात दुरि, जातरूप कौ रूप॥
चे चम्पा, औ करे क्या ज़ाफ़राँ दावाय रैनाई।
तिलाई तन से तेरे मुहँ पै ज़र्दी ज़र के है छाई॥

[१४०]

वाहि लखै लोयन लगै, कौन जुवति की जोति।
जाके तन की छाँह ढिग, जौन्ह छाँह सी होति॥
नज़र चुभती है जिसपर कौन उस महके है हमपाया।
कि जिसके सायए तन के है सन्मुख चाँदनी साया॥

[१४१]

कहि लहि कौन सकै दुरी, सोन जुही में जाय।
तन की सहज सुबासना, देती जौ न बताय॥
बता देती अगर उसके न तन की वो सहज खुशबू।
पता क्या था चमेली में छिपी है जाके वो गुलरू॥

[१४२]

हरि छबिजल जबतें परे, तब तें छन बिछुरैं न।
भरत ढरत बूड़त तरत, रहत घरी लौं नैन॥
पड़े दीदे जो छबिजल में, नहीं पलभर बिछुरते हैं।
घड़ी हैं डूबते, तिरते हैं, ढरते और भरते हैं॥

[१४३]

रहि न सक्यौ कसि करि रह्यौ, बस करि लीनो मार।
भेदि दुसार कियौ हियौ, तन दुति भेदै सार॥
दिखा कसकर मुझे बसकर मगर फिर मारने मारा।
जिलूए तन पै तनख़ंजर किया दिलकाट दह पारा॥

[१४४]

पहिरतहीं गोरे गरे, यों दौरी दुति लाल।
मनो परसि पुलकित भई, मौल सिरी की माल॥
गले गोरे पहिनते ही चमक दौड़ी ये नंदलाला।
हुई छू मूबतन गोया खुशी से, मौलसरमाला॥

[१४५]

कहा कुसुम कह कौमुदी, कितिक आरसी जोति ।
जाकी उजराई लखे; आंख ऊजरी होति ॥
कुसुम औ चाँदनी आईनः यह रंगत कहाँ पाए ।
शवाहत देख जिसकी आँख में भी नूर आजाए ॥

[१४६]

कंचन तन घन बरन वर, रह्यौ रंग मिलि रंग ।
जानी जाति सुबास हीं, केसरि लाई अंग ॥
कनकतन, घन बरन, बर रंग से मिल रंग लाई है ।
पता लगता है खुशबू से कि केसर अंग लाई है ॥

[१४७]

अंग अंग नग जगमगे, दीप सिखा सी देह ।
दिआ बढ़ाए हू रहै, बड़ौ उजारौ गेह ॥
रहे नग जगमगा अँग अँग शोल-ए-नूरका है तन ।
करें गुल शमअ तब भी खूबही रहता है घर रोशन ॥

[१४८]

ह्वै कपूरमनिमय रही, मिलि तन दुति मुकुतालि ।
छिन छिन खरी बिचच्छनौ, लखति छ्वाय तिन आलि ॥
हुई मुक्तालि नूरे तन से मिल काफ़ूर मणि गोया ।
छुआ तिनका चतुर सखियाँ हैं छिन २ उसके अब गोया ॥

[१४९]

खरी लसति गोरे गरै, धसति पान की पीक ।
मनो गुलूबँद लाल की, लाल लाल दुति लीक ॥
गले गोरे उतरते पान की सुर्ख़ी है यों आली ।
गुलूबन्द लाल का गोया झलक झलका रहा लाली ॥

[१५०]

बाल छबीली तियनि मैं, बैठी आप छपाय।

अरगट ही फानूस सी, परगट होति लखाय॥

छिपी हम ओलियो में शम्अरू बैठी है शरमाई।
मगर फ़ानूस सी रोशन अलग देती है दिखलाई॥

[१५१]

दीठि न परत समान दुति, कनक कनक से गात।

भूषन कर करकस लगत, परस पिछाने जात॥

ज़री ज़ेवर नहीं ज़र्री, बदन पर साफ़ दिखलाते।
कड़ेपन से मगर, हाँ, हाथ छूकर हैं समझ जाते॥

[१५२]

करत मलिन आछी छबिहिं, हरत जु सहज प्रकास।

अंग राग अंगनि लग्यो, ज्यों आरसी उसास॥

तेरे तन की शबाहत ग़ाफ़ुराँ से खोई जाती है।
हो जैसे आइना पर भाप यों फीकी दिखाती है॥

[१५३]

अंग अंग प्रतिबिम्ब परि, दर्पन से सब गात।

दुहरे तिहरे चौहरे, भूषन जाने जात॥

मिसाले आइना है मुनअकस उसका तने-अनवर।
नज़र आते हैं दुहरे तिहरे चौहरे, जिस्म पर ज़ेवर॥

[१५४]

अंग अंग छबि की लपट, उपटति जाति अछेह।

खरी पातरी ऊ तऊ, लगै भरी सी देह॥

झपट चलते, लपट छबि की उपट अँग अँग है लहराती।
छरेरे तन मगर फिर भी भरी सी देह दिखलाती॥

[१५५]

रंच न लखियत पहिरियें, कंचन से तन बाल।
कुंम्हिलाने जानी परे, उर चम्पे की माल॥
नहीं, ज़रीं बदन पर तेरे मुतलक़ ही नज़र आती।
समझ पड़ती है चम्पक माल तब, जब कुछ है कुम्हिलाती

[१५६]

भूषन भार सँभारिहै, क्यौं यह तन सुकुमार।
सूधे पाँय न परत धर, सोभा ही के भार॥
सँभाले बार ज़ेवर क्या, तेरा नाज़ुक बदन, प्यारी।
कजी रफ्तार की कहती है, बारे-हुस्न है भारी॥

[१५७]

न जक धरत हरि हिय धरे, नाजुक कमला बाल।
भजत भार भय भीत है, घन चन्दन बनमाल॥
नहीं कल एक पल दिल में, बसे कमला के नँदनन्दन।
गुज़रते हैं गिराँ सीने पै घन बनमाल और चन्दन॥

[१५८]

अरुन बरन तरुनी चरन, अँगुरी अति सुकुमार।
चुवत सुरँग रँग सों मनो, चपि बिछुवनि के भार॥
हैं नाज़ुक उँगलियाँ, रंगे-कफ़े-पा क्या अछूता है।
तले बिछियों के दबकर अरग़वानी रंग चूता है॥

[१५६]

छाले परिबे के डरनि, सकै न हाथ छुआय।
झिझकति हिये गुलाब के, झँवाँ झँवैयत पाय॥
खियाले आबला से छू नहीं हाथों से सकती है।
गुलों के भी झँवाँ से पाँव मलने में झिझकती हैं॥

[१६०]

मै बरजी कै बार तू, इत कत लेति करौट ।
पँखुरी लगे गुलाब की, परिहै गात खरौट ॥
तुझे कै बार रोका मैंने, तू करवट न ले इस सू ।
ख़राशें जिस्म में पड़ जायँगी गुलबर्ग की, गुलरू ! ॥

[१६१]

कन देबौ सौंप्यौ ससुर, बहू थुरहथी जानि ।
रूप रहचटैं लगि लग्यौ, माँगन सब जग आनि ॥
उरूसे-खुर्द-कफ़ को दी खुसर ने दाना-अफ़शानी ।
गदाई हुस्न के लालच से सारे ख़ल्क़ ने ठानी ॥

[१६२]

त्यों त्यों प्यासे ई रहत, ज्यों ज्यों पियत अघाय ।
सगुन सलोने रूप की, जनि चख तृषा बुझाय ॥
है बढ़ती प्यास, पीती जिस क़दर हैं पेट भर आँखें ।
सलौना रूप लख रहती हैं हरदम तिशनः तर आँखें ॥

[१६३]

रूप सुधा आसव छक्यो, आसव पियत बनै न ।
प्याले ओठ प्रिया बदन, रह्यो लगाये नैन ॥
शराबे हुस्न से सरमस्त हैं, सहबा पियें क्योंकर ।
लगी मुखड़े से आँखें और लब से लग रहा सागर ॥

[१६४]

दुसह सौति साले सुहिय, गनति न नाह बिवाह ।
धरें रूप गुन कौ गरब, फिरै अछेह उछाह ॥
है सौकिन सालती सबको, है बेग़म पी करें शादी ।
जमालो हम कमाले—खुद से फिरती है ब—आज़ादी ॥

[१६५]

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर ।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥
मुसौवर सैकड़ों तसवीर तेरी खैंचने आए ।
वले मख़बूत, हुस्ने हर मिनट अफ़ज़ू ने ठहराए ॥

[१६६]

सो०—तो तन अवधि अनूप, रूप जग्यौ सब जगत को ।
मो दृग लागे रूप, दृगनि लगी अति चटपटी ॥
जहाँ अफ़रोज़ तेरा हुस्न है सर हद्द लासानी ।
लगी हैं हुस्न से आँखें व आँखों से परेशानी ॥

[१६७]

त्रिबली नाभि दिखाय कै, सिरढाँकि सकुचि समाहि ।
अली अली की ओट ह्वै, चली भली विधि चाहि ॥
ललन लोटन दिखा, सर ढाँक सकुची, देख बनमाली ।
अली की ओटलै आली चली चुप चाहि मतवाली ॥

[१६८]

देख्यौ अनदेख्यौ कियौ, अँग अँग सबै दिखाय ।
पैठति सी तनमें सकुचि, बैठी चितहिं लजाय ॥
दिखा अँग अँग अनदेखे किये, यह देख चतुराई ।
सकुचि सिमटी, चुरा तन को, रही फिर बैठ शरमाई ॥

[१६९]

बिहँसि बुलाय बिलोकि इत, प्रौढ़ तिया रस घूमि ।
पुलकि पसीजति पूत को, पिय चूम्यौ मुँह चूमि ॥
बुला, हँस, देख पति से, पूत लै रस रङ्ग से घूमी ।
पिया चूमी हुई मुँहियाँ तिया अति प्रेम से चूमी ॥

[१७०]

रहो गुही बेनी लख्यौ, गुहिबे को त्यौनार।
लागे नीर चुचान जे, नीठि सुकाये बार॥
न चोटी गूंधिये, मैं गूंधना समझी क़रीने से।
सुखाये हाल ही के बाल तर हैं हरि पसीने से॥

[१७१]

स्वेद सलिल रोमांच कुस, गहि दुलही अरु नाथ।
हियो दियो सँग हाथ के, हथलेवा ही हाथ॥
पसीने का तो जल, रोमांच कुश लेकर प्रिया प्रीतम।
दिया दिल हाथ हथलेवा, किया संकल्प मिल बाहम॥

[१७२]

मानंहु मुंह दिखरावनी, दुलहिन करि अनुराग।
सासु सदन मन ललन हू, सौतिन दियौ सुहाग॥
बरस्मे रूनुमाई, देख दुलहिन का रुख़े रोशन।
पिया ने दिल दिया, सौकिन सुहागो, खातः खुशदामन॥

[१७३]

निरखि नवोढ़ा नारि तन, छुटत लरकई लेस।
भौ प्यारौ प्रीतम तियनि, मनौं चलत परदेस॥
नई दुलही के तन से छूटते वक़्त लड़कपन की।
हँसी समझीं कि गोया प्रान प्रीतम राह ली बन की॥

[१७४]

ढीठो दै बोलति हंसति, प्रौढ़ बिलास अपोढ़।
त्यौं त्यौं चलत न पिय नयन, छकए छकी नवोढ़॥
सग़ीरा गो कबीरा सी अदा शोखी है दिखलाती।
लगाए टकटकी प्रीतम, उरूसे-नौ है मद माती॥

[१७५]

सनि कज्जल चख झख लगन, उपज्यौ सुदिन सनेह ।
क्यौं न नृपति ह्वै भोगवै, लहि सुदेस सब देह ॥
जुहल कज्जल, बहुतुलऐन साअत में हुई यारी ।
न क्यों अक़लीम तन, लै शौक़ से कीजे जहाँदारी ॥

[१७६]

चितई ललचौंहैं चखनि, डटि घूंघट पट मांहि ।
छलसौं चली छुवाय कै, छिनक छबीली छांह ॥
चितै घूंघट के पट डट कर वो ललचौंहें चखन वाली ।
चली छल से छुआ छिन इक, छबीली छाँह मतवाली ॥

[१७७]

कीनें हूं कोटिक जतन, अब कहि काढ़ै कौन ।
भौ मन मोहन रूप मिलि, पानी में को लौन ॥
हज़ारों हिक्मतें की, कहिये निकलै कोन सूरत से ।
हुआ दिल-मिल के पानी का नमक-मोहन की मूरत से ॥

[१७८]

नेह न नैनन कौ कछू, उपजी बड़ी बलाय ।
नीर भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय ॥
नहीं इश्क और बीमारी है आँखों को नज़र आती ।
हैं आबे-अश्क से पुर, पर नहीं वह तिश्नगी जाती ॥

[१७९]

छला छबीले लाल कौ, नवल नेह लहि नारि ।
चूमति चाहति लाय उर, पहिरति धरति उतारि ॥
अंगूठी लाल की लैली, नई उल्फ़त की माती है ।
पहिनती, फिर उतार औ चूम कर छाती लगाती है ॥

[१८०]

थाके जतन अनेक करि, नैकु न छांड़ति गैल।

करी खरी दुबरी सुलागि, तेरी चाह चुरैल॥

हज़ारों कोशिशें की पर नहीं जाती गली तज कर।

लगी जब से चुड़ैल—उल्फ़त की तेरी, कर दिया लाग़र॥

[१८१]

उन हरिकी हँसि कै इतैं, इन सौंपी मुसक्याय।

नैन मिलत मन मिलि गयो, दोऊ मिलवत गाय॥

इधर से इनने हँस फेरो उधर सोंपी लली खिलकर।

मिलाते गाय दोनों के मिले मन नैन हिल मिल कर॥

[१८२]

फेर कछुक करि पौरितैं, फिरि चितई मुसुक्याय।

आई जामन लेन तिय, नेहै चली जमाय॥

फिरी देरी से मिस कर मुस्कराकर फिर उधर हेरी।

जमाया नेह गो जामन के लेने को थी की फेरी॥

[१८३]

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।

ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रंग, त्यौं त्यौं उज्ज्वल होय॥

समझना इश्क़ परवर दिल की कैफ़ीयत का है मुश्किल।

ये ज्यों ज्यों श्याम रँग डूबे, हो त्यौं त्यौं औरही उज्वल॥

[१८४]

होमति सुख करि कामना, तुमहिं मिलन की लाल।

ज्वाल मुखी सी जरति लखि, लगनि अगनि की ज्वाल॥

लगन की अग्नि को ज्वालामुखी सा देखकर बरती।

तुम्हारे वस्ल कीकर चाह सुख को हूं हवन करती॥

[१८५]

मैं हो जान्यो लोयननि, जुरत बाढ़ि है जोति ।
को हो जानत डीठि को, डीठि किराकिटी होति ॥
नयन जुड़ने से समझा थी बढ़ेगी नैन की जोती।
न जानूं डीठ को है डीठ ही उफ़ ! किरकिटी होती ॥

[१८६]

जौ न जुगुति पिय मिलन की, धूरि मुकुति मुख दीन ।
जो लहिये सँग सजन तौ, धरक नरक हू की न ॥
नहीं गर यार जन्नत में तौ वो नारे जहन्नुम है।
अगर दोज़ख में है प्यारा तो वो जिन्नत से क्या कम है ॥

[१८७]

मोंहू सो तजि मोह दृग, चले लागि वहि गैल ।
छिनक छ्वाय छवि गुरु डरी, छले छबीले छैल ॥
ये दीदे तर्क उल्फ़त कर रफीक़ उनके बने चलकर।
छुवा छिप गुरडली छीने छबीले छैल ने छलकर ॥

[१८८]

को जाने ह्वै है कहा, जग उपजी अति आगि ।
मन लागै नैननि लगै, चलै न मग लागि लागि ॥
न जाने होगा क्या, जग में नई आग इक सुलगती है ।
लगन की राह मत लग आँख में लग दिल में लगती है ॥

[१८९]

तजत अठान न हठ पर्‌यौ, सठमति आठौं जाम ।
भयो बाम वा बाम कौ, रहै काम बे काम ॥
पड़ा हठ तौर नाजायज़ से आठों जाम रहता है।
सदा बेकाम काम उस बामही से बाम रहता है ॥

[१९०]

लई सौंह सी सुनन की, तजि मुरली धुनि आन ।
किये रहति रति राति दिन, कानन लागे कान ॥
सिवा मुरली की धुन सुनने के दिल में आन है ठानी ।
लगाए रात दिन रहती है कानन कान दीवानी ॥

[१९१]

भृकुटी मटकनि पीत पट, चटक लटकती चाल ।
चल चख चितवनि चोरि चित, लियो बिहारी लाल ॥
लटकती चाल अब्रू की मटक क्या पट सुहाया है ।
बिहारी लाल की चितवन ने चित मेरा चुराया है ॥

[१९२]

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति ।
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति ॥
लड़ें आँखें कुटुम टूटै जुड़ै दिलदार से उल्फ़त ।
पड़ै दिल में रक़ीबों के गिरह अल्लाह री कुदरत ॥

[१९३]

चलत घैर घर घर तऊ, घरी न घर ठहराय ।
समुझि वहै घर को चलै, भूलि वही घर जाय ॥
हैं होते घैर घर घर पर नहीं पल भर ठहरती है ।
समुझ जाती है घर, भूले उसी घर पैर धरती है ॥

[१९४]

डर न टरै नींद न परै, हरै न काल-बिपाक ।
छिनक छाक उछकै न फिरि, खरो विषम छबि छाक ॥
न डर से, नींद से, टाइम गुज़रने से गुज़रता है ।
चढ़ा जो नश्शए उल्फ़त नहीं दम भर उतरता है ॥

[१९५]

झटकि चढ़नि उतरति अटा, नेंक न थाकति देह।
भई रहति नट को बटा, अटकी नागर नेह ॥
नहीं थकती दमे उल्फ़त सदा सीने में भरती है।
हुई नट का बटा फिर फिर अटा चढ़ती उतरती है ॥

[१९६]

लोभ लगे हरि रूप के, करी साँट जुरि जाय।
हौं इन बेची बीच ही, लोयन बड़ी बलाय ॥
पड़े लालच में हुस्ने हरि के सट्टे मिल के कर डाले।
बिकी मैं बीच ही, दीदे हैं ये आफ़त के परकाले ॥

[१९७]

नई लगनि कुल की सकुच बिकल भई अकुलाय।
दुहूं ओर ऐंची फिरति, फिरिकी लौं दिन जाय ॥
नई उल्फ़त ख़्याले—ख़ानदानी से है बेचैनी।
बिताती बाद फ़रक़्ला, कशमकश में, दिन है मृगनैनी ॥

[१९८]

उततें इत इततें उतहिं, छिनक न कहुं ठहराति।
जक न परत चकरी भई फिरि आवति फिरि जाति ॥
वहाँ से याँ, यहाँ से वाँ, नहीं इक छिन बिताती है।
नहीं कल पल बनी चकरी फिर आती और जाती है ॥

[१९९]

तजी संक सकुचाति न चित, बोलत बाक कुबाक।
दिन छनदा छाकी रहति, छुटै न छिन छबि छाक ॥
है मुज़ख़रफ़ात बकती, शर्म है कुछ और न डरती है।
शराबे हुस्न की मस्ती नहीं दम भर उतरती है ॥

[२००]

ढरे ढार त्योंहीं ढरत, दूजे ढार ढरै न।
क्यों हूँ आनन आन सौं, नैना लागत हैं न॥
ढलेही ढाल को तज कर किसी साँचे नहीं ढलते।
ये नैना आन आनन पर किसी सूरत नहीं चलते॥

[२०१]

चकी जकी सी है रही, बूझें बोलति नीठि।
कहूँ ढीठि लागी लगी कै काहू की डीठि॥
ज़बाँ खोलै न मुँह बोलै न कुछ तन की खबर उसको।
कहीं आँखें लगी हैं या लगी है खुद नज़र उसको॥

[२०२]

पिय के ध्यान गही गही, रही वही है नारि।
आप आप ही आरसी, लखि रीझति रिझवारि॥
तसौवर में पिया के खुद पियाही बन गई प्यारी।
रुख़ अपना आइना में देख खुद पर इश्क है तारी॥

[२०३]

ह्यांतें ह्वां ह्वां तें इहां, नेकौ धरति न धीर।
निसदिन डाढ़ी सी फिरति, बाढ़ी गाढ़ी पीर॥
यहाँ से वाँ वहाँ से याँ अजब कुछ बेक़रारी है।
फ़िरा करती है डाढ़ी सी, मगर कुछ दर्द भारी है॥

[२०४]

समरु समरु संकोच बस, बिबस न ठिकु ठहराय।
फिरि फिरि उझकति फिर दुरति, दुरि दुरि उझकति जाय॥
हया औ शौक़ हैं हम वज़न बेखुद सी है मदमाती।
उझक फिर फिर है छिप जाती व छिप छिप फिर नज़र आती॥

[२०५]

उर उरझ्यौ चित चोर सों, गुरु गुरुजन की लाज ।
चढ़े हिंडोरे से हिये, किये बनै गृह काज ॥
फँसा है दिलरुवा से दिल, बड़ों की शर्म सारी है ।
हिंडोले सी चढ़ी सीने मुफ़र्रज़ खानःदारी है ॥

[२०६]

सखी सिखावति मान विधि, सैनन बरजति बाल ।
हरे कहै मो हीय मो, बसत बिहारी लाल ॥
सखी से मान विधि सिख सुन, बरज सैनों सरसते हैं ।
हरे कहरी, मेरे दिल में बिहारीलाल बसते हैं ॥

[२०७]

उर लीने अति चटपटी, सुनि मुरली धुनि धाय ।
हौं हुलसी निकसी सु तौ, गयो हूल सी लाय ॥
वो धुन सुनते ही मुरली की मैं बाहिर मुज़तरब धाई ।
उमंगों से थी गो निकली जिगर पर चोट सी खाई ॥

[२०८]

जे तब हुती दिखा दिखी, अभी भई इक आंक ।
दगै तिरीछी डीठि अब, ह्वै बीछी को डाँक ॥
जब आंखें चार होती थीं नज़र थी आबे—लाफानी ।
निगाहे—कज हुई अब नैश अक़रब सी मुज़िर जानी ॥

[२०९]

लाल तिहारे रूप की, कहौ रीति यह कौन ।
जासौं लागैं पलक दृग, लागै पलक पलौ न ॥
अनोखी रीति आँखों की तेरी प्यारे कहूँ किस से ।
नहीं वह आँख लगती है, लगी आँखें तेरी जिससे ॥

[२१०]

अपनी गरजनि बोलियत, कहा निहोरो तोहिं ।
तूँ प्यारो मो जीव को, मो जिय प्यारो मोहिं ॥
जो तुमसे बोलते हैं, इसमें क्या एहसाँ हमारा है ।
मेरे दिल को हौ तुम प्यारे, मेरा दिल मुझको प्यारा है ॥

[२११]

सुख सौं बीती सब निसा, मनु सोये मिलि साथ ।
मूका मेलि गहे जु छन, हाथ न छोड़े हाथ ॥
रहे सुख नींद में गोया पड़े शब भर मज़ा लूटा ।
पकड़ दीवार बिल से हाथ, हाथों से नहीं छूटा ॥

[२१२]

देखौ जागत वैसिए, साँकरि लगी कपाट ।
कित ह्वै आवत जात भजि, को जानै किहिं बाट ॥
किवाड़ौ जागने पर वैसेही कुंडी लगी पाई ।
न जाने किस गली आते, निकल जाते हैं यदुराई ॥

[२१३]

गुड़ी उड़ी लखि लाल की, अँगना अँगना मांह ।
बौरी लौं दौरी फिरै, छुवत छबीली छाँह ॥
पतंग उड़ते हुए लख आँगना आँगन में इतरानी ।
नवेली छाँह छूने को फिरै दौड़ीसी दीवानी ॥

[२१४]

उनकौ हित उनहीं बनै, कोऊ करौ अनेक ।
फिरत काक गोलक भयौ, दुहूं देह ज्यौं एक ॥
नहीं औरों से बनती वो तो हैं बा-हमदिगर तालिब ।
मिसाले हलक़ए-चश्मे-कुलाग़ इकजाँ हैं दो क़ालिब ॥

[२१५]

करत जात जेती कटनि, चढ़ि रस सरिता सोत।

आलबाल उर प्रेम तरु, तितौ तितौ दृढ़ होत॥

यमे उल्फ़त है साहिल जिसक़दर चढ़ काटता जाता।

मुहब्बत का शजर उतना ही सीने में है लहराता॥

[२१६]

खल बढ़ई बल करि थके, कटै न कुबत कुठार।

आल बाल उर झालरी, खरी प्रेम तरु डार॥

तबर तशनीअ से बलकर थके नज्जार बद नीयत।

ख़ियाबाने जिगर में लहलहा है बाबए-उल्फ़त॥

[२१७]

छुटन न पैयत छिनकु बासि, नेह नगर यह चाल।

मार्‌यौ फिरि फिरि मारिये, खूनी फिरत खुस्याल॥

ख्वाजे शह्र-उल्फ़त है, बसै जो फिर न छुटता है।

फिरै खुशहाल ख़ूनी ग़मज़दा लुटता व कुटता है॥

[२१८]

निरदै नेह नयो निरखि, भयो जगत भय-भीत।

यह अबलों न कहूं सुनी मरि मारिये जु मीत॥

नई बेरहम-उल्फ़त से जगत में ख़ौफ़ है छाया।

मरे ही मित्र को मारें ये सुनने में नहीं आया॥

[२१९]

क्यों बसिये क्यों निबाहिये, नीति नेह पुर नाहिं।

लगा लगी लोयन करैं, नाहक मन बँधि जाहिं॥

बसें क्योंकर, नहीं इन्साफ़ मुतलक़ शह्र-उल्फ़त में।

लड़ें आँखें, व रक्खा जाय नाहक़ दिल हिरासत में॥

[२२०]

देह लग्यौ ढिग गेहपति, तऊ नेह निरवाहि ।
ढीली अँखियनि ही इतैं, गई कनखियनि चाहि ॥
किया इज़हार उलफ़त, पति से थी गो कुर्ब-जिस्मानी ।
रसीली आँख ढीली कर, कनखियों देख मुसक्यानी ॥

[२२१]

है हिय रहति हई छई, नई जुगति जग जोय ।
आँखिनि आँखि लगैं खरी, देह दूबरी होय ॥
नई लखकर छई जगमें जुगत है दिल येमुतहैयर ।
लगी आँखों से आँखें, जिस्म दिन दिन होरहा लाग़र ॥

[२२२]

प्रेम अडोल डुलै नहीं, मुख बोले अनखाय ।
चित उनकी मूरति बसी, चितवनि माहि लखाय ॥
जमी उलफ़त में, हैं बातें ये गुस्सा की बताती है ।
बसी चित उनकी मूरत है सो चितवनमें दिखाती है ॥

[२२३]

चित तरसत मिलत न बनत, बसि परोस के बास ।
छाती फाटी जाति सुनि, टाटी ओट उसास ॥
तरसती है परोसिन शौक़ से घर मिल नहीं पाती ।
वो टट्टी ओट सुन आहें ये छाती है फटी जाती ॥

[२२४]

जालरंध्र मग अगनि को, कछु उजास सो पाय ।
पीठि दिये जग त्यौं रहै, डीठि झरोखनि लाय ॥
उजाला जालियों से आगमन का देख अक्स-अफ़गन ।
जगत को पीठ दै बैठी लगाये दीठ है रोज़न ॥

[२२५]

जद्यपि सुन्दर सुघट पुनि, सगुनो दीपक देह ।
तऊ प्रकास करै तितौ, भरिये जितो सनेह ॥
सगुन सुंदर मिसाले शम्अ़ है गो जिस्म लासानी ।
भरोगे नेह पर जितना वो होगा और नूरानी ॥

[२२६]

दुचितैं चित चलति न हलति, हँसति न झुकति विचारि ।
लिखत चित्र पिय लखि चितै, रही चित्र सी नारि ॥
पड़ी शशपंज, हँस, हिल डुल नहीं झुक देखती प्यारी ।
पिया को चित्र लिखते लख हुई खुद चित्र सी नारी ॥

[२२७]

नैन लगे तिहि लगनि सों, छुटै न छूटे प्रान ।
काम न आवत एक हू, तेरे सौक सयान ॥
न छूटो प्रान छुटने तक लगन जब से कि लग पाई ।
नहीं कुछ काम आती है करें कोई लाख चतुराई ॥

[२२८]

साजे मोहन मोह कों, मोही करत कुचैन ।
कहा करौं उलटे परे, टोने लोने नैन ॥
सजे थे मोहने को मैं ने मनमोहन को दे काजल ।
उलट जादू पड़ा, करने लगे नैना मुझे बे-कल ॥

[२२९]

अलि इनि लोयन सरनि को, खरो विषम संचार ।
लगे लगाये एक से, दुहु अनि करत सुमार ॥
ग़ज़ब का कुछ निशाना है ख़दंगे चश्म का पे जां ।
लगाने और लगने में है दोनों का शुमार यकसाँ ॥

[२३०]

चख रुचि चूरन डारि कै, ठग लगाय निज साथ ।
रह्यो राखि हठि लै गयौ, हथाहथी मन हाथ ॥
है ख़ाके लज़्ज़ते दीदार डाली ठगने क्या दिलपर ।
ज़बरदस्ती वो हाथों हाथ दिल को लै गया दिलबर ॥

[२३१]

जौ लौं लखौ न कुल कथा, तौ लों ठिक ठहराय ।
देखे आवत देखिबो, क्यौंहूं रह्यौ न जाय ॥
नहीं देखा है जब तक, है तभी तक कुल कथा सारी ।
रहा जाता नहीं देखे बिना फिर देख बमवारी ॥

[२३२]

बन तन को निकसत लसत, हँसत हँसत इत आय ।
दृग खंजन गहि लै गयो, चितवनि चैंपु लगाय ॥
इधर निकले वो हरि हँसते हुए जाते तरफ़ बन की ।
उड़ाया सावए-दीदा लगाकर चेप चितवन की ॥

[२३३]

चितबित बचत न हरत हठि, लालन दृग बर जोर ।
सावधान के बटपरा ए जागत के चोर ॥
बचै क्या दौलते-दिल छीनते हैं दीदए पुरफ़न ।
ये बेदारों के हैं सारक़ व हुश्यारों के हैं रहज़न ॥

[२३४]

सुरति न तालरु तान की, उठ्यो न सुर ठहराय ।
एरी राग बिगारिगौ, बैरी बोल सुनाय ॥
न लै सुरताल की कुछ भी अलापा सुर न जमता है ।
हुई सुन बोल बैरागिन कलेजा अब न थमता है ॥

[२३५]

इहि काँटे मो पाय लगि, लीनी मरत जिवाय ।
प्रीति जनावति भीति सों, मीत जु काढ्यौ आय ॥
मेरे इस ख़ार-पाले मुझको मरने से जिलाया है ।
वो गुलरू खींचने को अज़रहे-शफ़क़त जो आया है ॥

[२३६]

जात सयान अयान ह्वै, वै ठग काहि ठगै न ।
को ललचाय न लालकै, लखि ललचौहैं नैन ॥
नहीं ठगते ये ठग किसको किये दाना भी दीवाना ।
ये ललचौंहें से लोचन लख नहीं दिल किसका ललचाना ॥

[२३७]

जस अपजस देखत नहीं, देखत साँवल गात ।
कहा करौं लालच भरे, चपल नैन चलि जात ॥
नहीं तू जस अजस लखती निरख कर श्याम रँगराते ।
करूँ क्या, लालची चंचल चपल लोचन हैं ललचाते ॥

[२३८]

नख सिख रूप भरे खरे, तउ मांगत मुसुकानि ।
तजत न लोचन लालची, ये ललचौहीं बानि ॥
सरापा हुस्न से पुर हैं, तबस्सुम के हैं पर तालिब ।
तमअ् चश्मान-तामेअ् पर तेरे रहती है क्या ग़ालिब ॥

[२३९]

छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत अति दीनता दिखाय ।
बलि बामन को ब्यौंत सुनि, को बलि तुम्हैं पत्याय ॥
ज़रा छिगुली को छू पहुँचा पकड़ते हो बलाचारी ।
भला पतयाय अब सुन कौन बल बामन की ऐयारी ॥

[२४०]

नैना नेकु न मानहीं, कितौ कहौं समझाय।
तन मन हारे हूँ हँसै, तिनसौं कहा बसाय॥
इन्हें हरचन्द समझाया, ये नैना हैं बड़े पुरफ़न।
कोई उफ़ इनसे क्या जीते हँसे जो हार कर तन मन॥

[२४१]

लटकि लटकि लटकत चलत, डटत मुकुट की छाँह।
चटक भर्‌यो नट मिलि गयो, अटक भटक बट मांह॥
मुकुट की छांह को तकते हुए झुक झूम लटकन से।
मिले नटवर वो चटकीले अटक भट लौटते बन से॥

[२४२]

फिरि फिरि बूझति कहि कहा, कह्यौ साँवरे गात।
कहा करत देखे कहाँ, अली चली क्यौं बात॥
है फिर फिर पूँछती, कह, क्या कहा उन श्याम-सुन्दर ने।
कहां, करते थे क्या, चरचा चलाई किस तरह हरि ने?॥

[२४३]

तो ही निरमोही लग्यो, मो ही इहै सुभाव।
अन आये आवै नहीं, आये आवत आव॥
है वाबिस्ता तेरे बेमेह्‌र-दिल से दिल न तरसाओ।
बिन आए वह न आवैगा, वो आए आयगा आओ॥

[२४४]

दुखहाइनि चरचा नहीं, आनन आनन आन।
लगी फिरति ढूका दिये, कानन कानन कान॥
नहीं है आन चरचा सख़ियों के आन आनन में।
हैं बन बन खोजती फिरती लगाए कान कानन में॥

[२४५]

बहके सब जिय की कहत, ठौर कुठौर लखैं न ।
छिन औरै छिन और से, ए छबि छाके नैन ॥
छके छबिछाक से नैना अजब है इन में खुदराई ।
कहा करते हैं हर दम हर किसी से जी में जो आई ॥

[२४६]

कहत सबै कवि कमल से, मो मति नैन पषानु ।
न तरक इन बिय लगत कत, उपजत बिरह कृसानु ॥
हैं पत्थर वाक़ई शौराय, नीलोफर हैं गो जड़ते ।
उड़ै यह नार-हिजराँ वरना क्यौं ए नैन के लड़ते ॥

[२४७]

लाज लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहिं ।
ये मुँहजोर तुरंग लौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं ॥
लजामे शर्म ये माने नहीं, दीदे हैं बे-काबू ।
समन्दे बदइनाँ साँ, उफ़! तड़प जाते हैं ये बदखू ॥

[२४८]

इन दुखियां अँखिआनि कौं, सुख सिरज्योई नाहिं ।
देखत बनै न देखते, बिन देखे अकुलाहिं ॥
नहीं मक़सूम इन मग़मूम आँखों के लिए राहत ।
न देखे देखते बनता, न देखे दिलको है हसरत ॥

[२४९]

लरिका लैबे के मिसहिं, लंगर मो ढिग आय ।
गयो अचानक आँगुरी, छाती छैल छुवाय ॥
पिसर लैने के हीला से वो शातिर मुझ तलक आया ।
गया नागाह छाती से छुवा उँगली फ़रोमाया ॥

[२५०]

डगक डगति सी चालि ठटकि, चितई चली निहारि ।
लिये जाति चित चोरटी, वहै गोरटी नारि ॥
चली मस्ती से ठिटकी, फिर मुड़ी, फिर चलके रुख़ फेरा ।
वो गोरी लै चली चोरी से, देखौ हाय दिल मेरा ! ॥

[२५१]

चिलक चिकनई चटक सौं, लफति सटक लौं आय ।
नारि सलोनी साँवरी, नागिनि लौं डसि जाय ॥
चिलक चिकनी सटक सी है चटक, लफ लफ के बल खाती ।
सलौनी साँवली नागिन सी है डस कर पलट जाती ॥

[२५२]

रह्यौ मोह मिलनो रह्यौ यौं कहि गह्यौ मरोर ।
उत दै सखिहिं उराहनो, इत चितई मो ओर ॥
मुहब्बत है न मिलना, वाह क्या उलफ़त है ये तेरी ।
सखी से ये शिकायत कर मरुड़ फिर इस तरफ हेरी ॥

[२५३]

नाहिं नचाय चितवति दृगनि, नहिं बोलति मुसुक्याय ।
ज्यौं ज्यौं रूखी रुख करत, त्यौं त्यौं चित चिकनाय ॥
नचा दृग देखती है, कुछ न कहती मुसकराहट से ।
है होती दिल को चिकनाई रुखाई बेरुख़ी हट से ॥

[२५४]

सहित सनेह सँकोच सुख, स्वेद कंप मुसुक्यानि ।
प्रान पानि करि आपने, पान धरे मो पानि ॥
हया, तन तर, तबस्सुम, थरथरी, नवनेह भीने रस ।
धरे निज पान मेरे पान पर, कर प्रान अपने बस ॥

[२५५]

चितवनि भोरे भाय की, गोरे मुख मुसुक्यानि।
लगनि लटकि आली गरें, चित खटकति निति आनि॥

वो भोरे भाव की चितवन वो गोरे मुख का मुसकाना।
लटक आली गले लगना खटकता दिल पै है जानाँ॥

[२५६]

छिन छिन में खटकति सु हिय, खरी भीर में जात।
कहि जु चली अनही चितै, ओठन ही बिच बात॥

चितै दुज़दीदः नज़रों से चली कुछ ज़ेरलब कह कर।
मुझे जमघट में जाते उठ रहा है दर्द रह रह कर॥

[२५७]

चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससि की अनुहारि।
नेह दबावति नींद लौं, निरखि निसा सी नारि॥

रुख़े अन्वर क़मर है नील चूनर चर्ख़ पुर अख़्तर।
दबाती नींद उल्फ़त लैल लैला का है मुख लखकर॥

[२५८]

मैं लै दयौ लयौ सुकर, छुवत छनकि गौ नीर।
लाल तिहारो अरगजा, उर ह्वै लग्यौ अबीर॥

लिया उसको दिया फौरन ही छूते हो गया पानी।
अबीर आसा बना वह अरगज़ा सीने से लग जानी॥

[२५९]

तो पर वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान॥

निछावर उरबसी इस रूप पर राधे के बलिहारी।
तू मनमोहन को बसकर उरबसी सी उर बसी प्यारी॥

[२६०]

हँसि उतारि हिय तैं दई, तुम जु वाहि दिन लाल।
राखति प्रान कपूर ज्यौं, वही चुहटनी माल॥
उतार अपने गले से तुमने हँस कर दी जो नँदलाला।
रखाये जां को है काफ़ूर साँ वह गुंज की माला॥

[२६१]

रही लट्टू ह्वै लाल हौं, लखि वह बाल अनूप।
कितौ मिठास दियौ दई, इतौ सलौने रूप॥
हों लट्टू देखकर वह बाल, क्या भगवत की माया है!।
सलौना रूप ये कितना सुखड़ शीरीं बनाया है॥

[२६२]

सोहति धोती सेत में, कनक बरन तन बाल।
सारद बारद बीजुरी, भा रद कीजत लाल॥
तिलाई तन पै है तनज़ेब धोती, ज़ेब तन पाती।
शरद बादल की बिजुली की दमक को भी है चमकाती॥

[२६३]

वारौं बलि तो दृगनि पै, अलि खंजन मृग मीन।
आधी दृष्टि चितौत जिनि किये लाल आधीन॥
किए आधीन अध चितवन से जिनने श्याम मनरंजन।
तेरी आँखों पै सिदक़े हैं, हिरन, माही, भँवर, खंजन॥

[२६४]

देखत चूर कपूर ज्यौं, उपै जाय जनि लाल।
छिन छिन जाति परी खरी, छीन छबीली बाल॥
कहीं यह देखते काफ़ूर चूरन सी न उड़ जाए।
छबीली बाल छिन छिन छीन सी होती नज़र आए॥

[२६५]

छिनक छबीले लाल वह, जौ लगि नहिं बतराय।
ऊख मयूष पियूष की, तौ लगि भूख न जाय ॥
वो शीरीं लब नहीं जब तक मजे से बात करती है।
क़मर, नै, नैशकर, आबेबक़ा के प्यास मरती है ॥

[२६६]

नागरि विविध बिलास तजि, बसी गँवेलिनि माहिं।
मूढ्यौ मैं गनिबी, कि तूं हूंठ्यौ दै इठलाहि ॥
बसी गुंवादहन इशरात शहरी छोड़ ख्वारों में।
न लेवें नोक की हमरंग बन इठला गँवारों में ॥

[२६७]

पिय मन रुचि ह्वैबो कठिन, तन रुचि होय सिंगार।
लाख करौ आँखि न बढ़ैं, बढ़ैं बढ़ाये बार ॥
तन-आराई तौ है श्रृंगार पिय रुख़ और ही शै है।
बढ़ाए बाल बढ़ते हैं, नहीं वह चश्म पुर मै है ॥

[२६८]

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यौ, आगे कौन हवाल ॥
शिगुफ्ता ही हुई पूरी न है रसरंग रैनाई।
खुदा हाफ़िज़ अभी से है कली पर भौंर शैदाई ॥

[२६९]

टुनहाई सब टोल में, रही जु सौति कहाय।
सुतौ ऐंचि प्यौ आपु त्यौं, करी अदोखिल आय ॥
थी सौकिन साहरा मशहूर कुल टोले में जो आली।
किया बेख़ार साबित तूने उसको खेंच बनमाली ॥

[२७०]

देखत कछु कौतुक इतै, देखौ नेकु निहार।
कब की इकटक ठटि रही, टटिया अँगुरिनि फारि॥
तमाशा देखिये तौ, टकटकी बाँधे पए-दर्शन।
ये कब की तक रही है उँगलियों से फाड़कर चिलमन॥

[२७१]

लखि लोयन लोयननि के, को इन होय न आज।
कौन गरीब निवाजिबो, कित तूठौ रतिराज॥
तेरी इन शोख़ आँखों में अजब छबि आज छाई है।
ये देखें किस गली जाते हैं, किसकी आज आई है॥

[२७२]

मन न धरति मेरौ कह्यौ, तूं आपने सयान।
अहे परनि पर प्रेम की, परहथ पारि न प्रान॥
लड़ा मत अक़्ल अपनी, मैं कहूं जो दिलमें वह रखले।
परे रह इश्क से. तू मत पराए हाथ में दिल दे॥

[२७३]

बहकि न इहि बहिनापुली, जब तब बीर बिनास।
बचै न बड़ी सबील हूं, चील घौंसुआ मांस॥
न इस हमशीरगी पर भूल, है इसमें जियां अक्सर।
धरोहर माँस की बचती है कैसे चील केरी घर॥

[२७४]

मैं तोसों कइ बा कह्यौं, तूं जिनि इनैं पत्याय।
लगा लगी करि लोयननि, उर में लाई लाय॥
बहुत कुछ मैंने समझाया भरोसा तू न कर इन पर।
लगाई आग आँखों ने मेरे दिल में ये लड़ लड़ कर॥

[२७५]

सन सूको बीत्यौ बनो, ऊखो लई उखारि ।
हरी हरी अरहरि अजौं, यह धरहरि चित नारि ॥

बिता बन सन भी सूखा, ईख को भी अब उखारा है ।
हरी अरहर अभी तक है यही क़ाफी सहारा है ॥

[२७६]

जौ वाके तन की दसा, देखन चाहत आप ।
तौ बलि नेक बिलोकिये, चालि अचकाँ चुप चाप ॥

जो देखा चाहते हो अस्ल हालत में तने-लाग़र ।
अचानक आप चलकर देखिए चुप चाप वर बिस्तर ॥

[२७७]

कहा कहौं वाकी दसा, हरि प्रानन के ईस ।
बिरह ज्वाल जरिबो लखैं, मरिबो भई असीस ॥

कहूं क्या प्राण जीवन ! उस जले तन की व्यथा भारी ।
मुक़ाबिल सोज़ फुरक़त के है मुर्दन ही दुआ सारी ॥

[२७८]

नैकु न जानी परति यौं, पर्‌यो विरह तन छाम ।
उठति दिये लौं नादि हरि, लिये तिहारौ नाम ॥

हुआ तन इस क़दर लाग़र नहीं देती थी दिखलाई ।
लिया जब नाम तेरा शम्‌अ बुझती सी नज़र आई ॥

[२७९]

दियौ सु सीस चढ़ाय लै, आछी भांति अएरि ।
जापै सुख चाहत लियो, ताके दुखहिं न फेरि ॥

सरो चश्मों से सर पर लै. समझ कर सायए रहमत ।
दिये दुख से न उसके मुड़, है जिससे तालिबे-राहत ॥

[२८०]

कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल ।
कहुँ मुरली कहुँ पीत पट, कहूँ लकुट बनमाल ॥
लड़ैते लाड़ली दृग ने ये क्या मोहन पै पढ़ डाला।
कहीं मुरली, मुकुट, लकुटी, कहीं पटपीत, बनमाला ॥

[२८१]

तूं मोहन मन गाड़ि रही, गाढ़ी गड़नि गुवालि ।
उठै सदा नटसाल लौं, सौतिनि के उर सालि ॥
चुभी मनमें है मन मोहन के तू गहरी चुभन गूजर।
कसकती है सिनां सी सीनए-सौकिन में बन नश्तर ॥

[२८२]

बड़े कहावत आपु कौं, गरुवे गोपीनाथ ।
तौ बदिहौं जौ राखिहौ, हाथनि लखि मन हाथ ॥
ज़बरदस्त आप को समझूँगी बेशक मैं तभी गिरधर।
रहैगा हाथ में दिल आप का वह हाथ देखे गर ॥

[२८३]

रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनिया बारि ।
फेरति करि उलटी रई, नई बिलोवनिहारि ॥
दहेंड़ी पास ही रक्खी रही मथनी भरी पानी।
उलट फेरै है कढ़नी क्या बिलोवन-हार लासानी ॥

[२८४]

कोरि जतन करिये तऊ, नागरि नेह दुरै न ।
कहे देत चित चीकनो, नई रुखाई नैन ॥
नहीं इश्के-सनम छिपता है कीजे लाख चतुराई।
रुखाई आँख की बतला रही है दिलकी चिकनाई ॥

[२८५]

पूछे क्यौं रूखी परै, सगि बगि रही सनेह।
मनमोहन छवि पर कटी, कहै पट्यानी देह॥
सनी है नेह में रग रग तू पूँछे क्यों रुखाती है।
कटी है हुस्न दिल्बर पर, कँटाना तन बताती है॥

[२८६]

तूं मति मानै मुकुतई, किये कपट बत कोटि।
जौ गुनही तौ राखिये, आँखिनि माहिं अँगोटि॥
नहीं तरग़ीब, से गैरों, के, दिल में कुछ शुबह कीजे।
जो मुजरिम है, नज़र बंद आप आखों में ही करलीजे॥

[२८७]

बाल बेलि सूखी सुखद, यह रूखे रुख धाम।
फेरि डहडही कीजिये, सुरस सींचि घनस्याम॥
तमूज़ बेरुख़ी से बेल सी कुम्हलाई अलबेली।
हरी घनश्याम कीजे ये सुरस रस सींच रस बेली॥

[२८८]

हरि हरि करि बरि बरि उठति, करि करि थकी उपाय।
याको ज्वर बलि बैद ज्यौं, तो रस जाय तु जाय॥
थकी तदबीर कर कर हरि हो हरि कहि उठती है बरबर।
तेरे रस से अगर ऐ चारःगर जर जाय ज़ुर बहतर॥

[२८९]

तूं रहि सखि हौंहीं लखौं चढ़ि न अटा बलि बाल।
सबही बिनु ससि हू उदै, देहैं अरघ अकाल॥
तुलूए-माह बिन बेवक्त ही देंगी अरघ बाला।
ठहर जा, मत अटा चढ़ देखती हूं मै महो, हाला॥

[२९०]

दियौ अरघ नीचे चलौ, संकट भानैं जाय।
सुचिती ह्वै औरौ सबै, ससिहिं बिलोकैं आय॥
अरघ तुम दै चुकीं, नीचे चलौ, सब का मिटै खटका।
करें बेफिक्र शशि दर्शन, न दिल नाहक़ रहे अटका॥

[२९१]

वे ठाढ़े उमदाहु उत, जल न बुझै बड़वागि।
जाहीं सों लाग्यो हियौ, ताहीं के हिय लाँगि॥
न बड़वानल बुझै जल से खड़े लख क्यों है उमदाती।
लगा जिससे जिगर तेरा उसी की जाके लग छाती॥

[२९२]

अहे कहै न कहा कह्यौ, तोसों नंदकिसोर।
बड़ बोली कत होत बलि, बड़े दृगनि के जोर॥
जो ना कहती है, तुझसे क्या कहा उन श्याम सुन्दर ने।
तुझे मुंहफट बनाया इस क़दर उफ़ चश्म-अकबर ने॥

[२९३]

मैं यह तोही मैं लखी, भगत अपूरब बाल।
लहि प्रसाद माला जु भौ, तन कदंब की माल॥
अपूरब भक्ति यह तुझ ही में देखी मैं ने ऐ बाला।
कदम सा खिल गया तन लेते ही परसाद की माला॥

[२९४]

ढोरी लाई सुनन की, कहि गोरी मुसुक्यात।
थोरी थोरी सकुच तैं, भोरी भोरी बात॥
लगा सुनने का चस्का, बात मुसका कर करै गोरी।
वो भोरी थोरी शरमाकर कहै कुछ थोरी ही थोरी॥

[२९५]

चित दै देखि चकोर त्यौं, तीजै भजै न भूख ।

चिनगी चुगै अँगार की, चुगै कि चंद मयूख ॥

स्वयम से सेर होने का न मिस्ले क़ब्क़ यह बारे ।

पियै महताब का रस या चुने आतिश के अंगारे ॥

[२९६]

कब की ध्यान लगी लखौ, यह घर लगिहै काहि ।

डरियत भृंगी कीट लौं, जिन वह ही ह्वै जाहि ॥

लगी कब की तसौवर में लगैगा किस को अब ये घर ।

न भृंगी कीट सी खुद मस्ख़ होजाए, यही है डर ॥

[२९७]

रही अचल सी ह्वै मनौ, लिखी चित्र की आहि ।

तजे लाज डर लोक को, कहो बिलोकति काहि ॥

ये बिल्कुल ग़ैर मुतहर्रक बनी तसवीर की सूरत ।

बिना ख़ौफ़ो हयाए-खल्क़ तकती किसकी है मूरत ॥

[२९८]

ठाढ़ी मंदिर पै लखै, मोहन दुति सुकुमारि ।

तन थाके हू ना थकै, चख चित चतुरि निहारि ॥

खड़ी मन्दिर पै तकती है मदन मन मोहनी सूरत ।

थका तन, मन, नयन थकते नहीं लेकिन किसी सूरत ॥

[२९९]

पल न चलै जकि सी रही, थकि सी रही उसास ।

अबहीं तन रितयो कहा, मन पठयो किहि पास ॥

झिझक कर रह गई चलते नहीं पल रुक रहा है दम ।

अभी से तन किया खाली कहाँ मन भेजकर हमदम ॥

[३००]

नाक चढ़ै सीबी करै, जितै छबीलो छैल।
फिरि फिरि भूलि वहै गहै, प्यौ ककरीली गैल॥
वही भूले से चलती है, पिया की गैल ककरीली।
चढ़ाई नाक सी सी कर छबीली छैल गरबीली॥

[३०१]

हित करि तुम पठयो लगै, वा बिजना की बाय।
टरी तपति तन की तऊ, चली पसीने न्हाय॥
वो भेजा आपने जो बादज़न राहत दिहे मन है।
बुझी उसकी हवा से गो तपिश, पर तरबतर तन है॥

[३०२]

नाम सुनत ही ह्वै गयो, तन औरै मन और।
दबै नही चित चढ़ि रह्यो, अबै चढ़ाये त्यौर॥
दिगर गूं जिस्मो जाँ का नाम सुनते हो गया आलम।
दबै चीं बरजबीं होने से क्या जो चित चढ़ा हरदम॥

[३०३]

नेकौ उहि न जुदी करी, हरखि जु दी तुम माल।
उर ते बास छुट्यो नहीं, बास छुटै हूं लाल॥
जुदा दम भर न की वह आपने खुश हो जो दी माला।
न छूटा बास सीने से छुटी गो बास ही लाला॥

[३०४]

सरसत पोंछत लखि रहत, लगि कपोल के ध्यान।
कर लै प्यौ पाटल बिमल प्यारी पठये पान॥
सरस लख पोंछ रुख़सारों का उसके ध्यान करता है।
प्रिया मुरसिल मुसज्जल पान लै निज पान धरता है॥

[३०५]

मनमोहन सों मोह करि, तूं घनस्याम निहारि।
कुंज बिहारी सों बिहरी, गिरधारी उर धारि॥
मुहब्बत कर तू मनमोहन से, धर सीने में गिरिधारी।
निरख घनश्याम की सूरत, बिहर, लै साथ बनवारी॥

[३०६]

मोहि भरोसो रीझिहै, उझुकि झाँकि इक बार।
रूप रिझावनहार वह, ए नैना रिझवार॥
भरोसा है कि रीझोगे उझक कर झाँक रैनाई।
रिझावनहार वह सूरत, ये नैना खुद हैं शैदाई॥

[३०७]

कालबूत दूती बिना, जुरै न और उपाय।
फिरि ताको टरै बनै, पाके प्रेम लदाय॥
नहीं बिन कालबुद दल्लाला जुड़ती कोई हिक्मत से।
हटाते ही बने जब लद चुको छत लाद उलफ़्त से॥

[३०८]

गोप अथाइनि तें उठे, गोरज छाई गैल।
चालि बालि अलि अभिसारिके, भलीं सँझौखी सैल॥
उठे हैं ग्वाल अथाई से है गोरज राह में छाई।
चल ए अभिसारिके! क्या शाम की अच्छी ये सैर आई॥

[३०९]

सघन कुंज घन घन तिमिर, अधिक अँधेरी राति।
तऊ न दुरिहै स्याम यह, दीपसिखा सी जाति॥
शबे तार अब्र तीरा कुंज भी ख़ीरा है दिखलाती।
छिपैगी शमअ, की लौ की तरह हरगिज़ न यह जाती॥

[३१०]

फूली फाली फूल सी, फिरति जु विमल विकास।
भोर तरैया हौहिंगी, चलति तोहिं पिय पास॥
बरंगे गुल शिगुफ़्ता फिर रही है वह जो महपारा।
तेरे चलते पिया के पास होगी सुब्ह का तारा॥

[३११]

उग्यो सरद राका ससी, करति न क्यों चित चेत।
मनो मदन छितिपाल को, छांहगीर छबि देत॥
शरद का चाँद निकला तू है अब किस रंग में डूबी।
ये गोया अर्श पर है ज़ेबदिह चतरे-शहे-खूबी॥

[३१२]

निसि अँधियारी नील पट, पहिरि चली पिय गेह।
कहा दुराई क्यों दुरै, दीपासिखा सी देह॥
अंधेरी रैन पहिने नीलपट जाते पिया के घर।
तने चूं शोलए-शम्मअ़ छिपाने से छिपै क्योंकर॥

[३१३]

छपै छपाकर छिति छवै, तम ससिहरि न सँभारि।
हँसति हँसति चालि ससिमुखी, मुखतें अंचल टारि॥
न डर मुतलक़ है तारीकी जमीं पर मह हुआ पिनहाँ।
तू घूँघट खोलकर ऐ माहरू! अब चल, खुशोख़न्दाँ॥

[३१४]

अरी खरी सटपट परी, बिधु आधे मग हेरि।
संग लगे मधुपनि लई, भागन गली अँधेरि॥
तुलूए मह हुआ जब नीम रह में सख्त घबराई।
सियह जंबूर क़िस्मत से घिर आये तीरगी छाई॥

[३१५]

जुवति जोन्ह मैं मिलि गई, नैकु न होति लखाय ।
सोंधै कै डोरै लगी, अली चली सँग जाय ॥
छिपी महताब में महवश नहीं मुतलक़ नज़र आती।
लगी खुशबू के डोरे से अली हिल मिल चली जाती ॥

[३१६]

ज्यों ज्यों आवति निकट निसि, त्यों त्यों खरी उताल।
झमकि झमकि टहलैं करैं, लगी रहचटैं बाल ॥
निशा नज़दीक ज्यों ज्यों आरही त्यों त्यों है बेताबी।
झमक झुककर टहल करती भरी है शौक़ की चाबी ॥

[३१७]

झुकि झुकि झपकौहैं पलनि, फिरि फिरि जुरि जमुहाय ।
बीदि पियागम नीद मिस, दी सब अली उठाय ॥
जम्हाई लै रही फिर फिर झपक पलकें झुका डालीं।
पिया का आगमन लख नींद के मिस दी उठा आलीं ॥

[३१८]

अगुँरिन उचि भरु भीति दै, उलमि चितै चख लोल।
रुचि सों दुहुनि दुहूनि के, चूमे चारु कपोल ॥
उठा एँड़ी, सहारा भींत का लै हँस उरम झूमें।
गुलाबी गाल दम्पति ने परस्पर प्रेम से चूमें ॥

[३१९]

चाले की बातैं चली, सुनत सखिन के टोल ।
गोए ऊ लोयन हँसति, बिकसत जात कपोल ॥
चलावे की लगीं चरचा चलाने गोल में गोरीं।
गुलाबी खिल रहे आरिज़ खिली अँखियाँ बिहँस भोरीं ॥

[३२०]

मिसहीं मिस आतप दुसह, दई औरि बहकाय।
चले ललन मनभावती, तन की छांह छपाय॥
"कड़ी है धूप" औरों को, इसी हीले से बहकाया।
ललन मन भावती को लै चले तनकी छिपा छाया॥

[३२१]

ल्याई लाल बिलोकिए, जिय की जीवन मूल।
रही भौन के कोन में, सोनजुही सी फूल॥
लै आई, देखिये वह रूह परवर नन्द छौने, में।
रही है गुलबदन क्या यासिमन सी फूल कोने में॥

[३२२]

नहिं हरि लौं हियरा धरौं, नहिं हर लौं अरधंग।
एकतही करि राखिये, अंग अंग प्रति अंग॥
न हरि की तर्ह सीने में, न हर के तर्ह निस्फे तन।
मुताबिक़ अंग अंगों से हो कुल प्यारी तेरा जोवन॥

[३२३]

रही पैज कीनी जु मैं, दीनी तुमहिं मिलाय।
राखौ चंपकमाल ज्यौं, लाल गरैं लपटाय॥
किया था एहद जो मैंने मिला दी बाल वह लाकर।
बनाकर माल चम्पक, लाल, रखिए कण्ठ लपटा कर॥

[३२४]

रही फेरि मुँह हेरि इत, हित समुहें चित नारि।
डीठि परत उठि पीठ की, पुलकैं कहत पुकारि॥
उधर तक मुँह इधर फेरा झुका है पर वहीं को दिल।
खड़े हो पीठ पर रोंगट सदा यह दै रहे खिल खिल॥

[३२५]

दोऊ चाह भरे कछु, चाहत कह्यौ कहैं न।
नहिं जाचक सुनि सूम लौं, बाहिर निकसत बैन॥
है दिल में, कुछ कहैं, लेकिन न बस ओंठों पै चलता है।
गदा की सुन सदा जैसे नहीं मुमसिक निकलता है॥

[३२६]

लहि सूने घर कर गह्यौ, दिखादिखी की ईठि।
गड़ी सुचित नाहीं करानि, करि ललचौंहीं डीठि॥
जो पकड़ा हाथ खिलवत में, थी आंखों की शनासाई।
चुभा दिल में नहीं करना वो कर कर डीठ ललचाई॥

[३२७]

गली अँधेरी सांकरी, भौ भटभेरा आनि।
परे पिछाने परस्पर, दोऊ परस पिछानि॥
अँधेरा तंग सा रस्ता हुआ आपुस में मिलजाना।
बिला बोले परस्पर ही परस दोनों ने पहिचाना॥

[३२८]

हरखि न बोली लखि ललन, निरखि अमिल सब साथ।
आँखिन हीं में हँसि धर्‌यो, सीस हिये धरि हाथ॥
निरख ना महरमों के साथ कुछ दिल की न कह पाई।
सरो सीने पै रख कर हाथ, आंखों ही में मुसकाई॥

[३२६]

भेंटत बनत न भावतो, चित तरसत अति प्यार।
धरति लगाय लगाय उर, भूषन बसन हथ्यार॥
अगरचे दिल तरसता है मिलें प्यारे से पर क्योंकर।
लगा छाती से धरती है सिलह पोशाक अरु ज़ेवर॥

[३३०]

कोरि जतन कोऊ करौ, तन की तपति न जाय।
जौलौं भीजे चीर लौं, रहै न प्यौ लपटाय॥
हज़ारों हिकमतें कीजे नहीं तन की तपन जाती।
लगे जब तक न गीले चीर साँ प्रीतम लपट छाती॥

[३३१]

तनक झूठ निसबादली, कौन बात पर जाय।
तिय मुख रति आरंभ की, नहिं झूठिये मिठाय॥
ज़रासी झूट की बे-लज़्ज़ती किस तर्ह से जाए।
शुरूए वस्ल को झूटी नहीं में भी मज़ा आये॥

[३३२]

भौंहनि त्रासति मुख नटति, आँखनि सो लपटाति।
ऐंचि छुड़ावति कर इँची, आगे आवति जाति॥
डराती भौंह से, मुख पर नहीं, आँखों से लपटाती।
छुटाती खेंचकर है कर, खिंची सी पास है आती॥

[३३३]

दीप उँजेरे हूं पतिहिं, हरत बसन रति काज।
रही लपटि छवि की छटनि, नेको छुटी न लाज॥
शमा रोशन बरहना तन लगे करने पिया प्यारी।
लपट छवि की छटा से शरमगीं सिमटी बनी सारी॥

[३३४]

लखि दौरत पिय कर कटक, बास छुड़ावन काज।
बरुनी बन दृग गढ़नि में, रही गुढ़ो करि लाज॥
पिया का लश्कर यद बास हरते लख पसर करते।
हया छिप हिस्न चश्मों मिज्ज़ः बनमें रह गई डरते॥

[३३५]

सकुचि सरकि पिय निकट तें, मुलकि कछू तन तोरि ।
कर आँचर की ओट करि, जमुआई मुख मोरि ॥
सरक पिय पास से सकुचा, लजा ली उसने अँगड़ाई ।
किया हाथ ओट अंचल के व फिर मुहँ मोड़ जमुहाई ॥

[३३६]

सकुचि सुरत आरंभ हीं, बिछुरी लाज लजाय ।
ढरकि ढार ढरि ढिग भई, ढीठ ढिठाई आय ॥
सिमट बिछुड़ी शुरूए वस्ल ही में शर्म शरमाकर ।
खिसक खुश पास आई शोख़ शोख़ी आंख में लाकर ॥

[३३७]

पति रति की बतियां कहीं, सखी लखी मुसुक्याय ।
कै कै सबै टलाटली, अली चली सुख पाय ॥
कही पतिने जो रति सुख की सखी मुख देख, मुसकाई ।
चला चल चंचलों ने की अलग टल पीठ दिखलाई ॥

[३३८]

चमक तमक हांसी सिसक, मसक झपट लपटानि ।
ए जिहिं रति सो रति मुकति, और मुकति अति हानि ॥
सिसकना, तन चुराना, हट, झपट, हँसकर, लपट जाना ।
इसी को आशिक़ों ने है हयाते जाविदाँ माना ॥

[३३९]

यदपि नाहिं नाहीं नहीं, बदन लगी जक जाति ।
तदपि भौंह हांसी भरी, हां सी ए ठहराति ॥
नहीं है, गो लगी हरदम दहन से तेरे रहती है ।
तेरी हांसी भरी अब्रू मगर हां सी ही कहती है ॥

[३४०]

पर्‍यो जोर बिपरीत रति, रुपी सुरत रनधीर।
करत कोलाहल किंकिनी, गह्यौ मौन मंजीर॥
कमर बस्ता थमी विपरीति रति में सख़्त जोरों पर।
कुलाहल किंकिणी करतीं है बिछिया चुप हैं पोरों पर॥

[३४१]

बिनती रति विपरीत की, करी परसि पिय पाय।
हँसि अनबोले हीं रही उत्तर दियो बताय॥
चरण गहि पी ने की विपरीत रति की इल्तिजा आली।
दिया हँसकर बता उत्तर रही ख़ामोश ही ख़ाली॥

[३४२]

मेरे बूझत बात तूं, कत बहरावति बाल।
जग जानी विपरीत रति, लखि बिंदुली पिय भाल॥
मेरे पूछे भुलावा दै, नहीं तुम मानती रानी।
पिया के भाल लख बिँदुली जगत विपरीत रति जानी॥

[३४३]

राधा हरि हरि राधिका, बनि आये संकेत।
दंपति रति बिपरीत सुख, सहज सुरत हूं लेत॥
प्रिया प्रीतम व प्रीतम बन प्रिया संकेत बन आए।
सुरत ही में सहज विपरीत रति सुख दम्पती पाए॥

[३४४]

रमन कह्यौ हठि रमनि सों, रति विपरीत विलास।
चितई करि लोचन सतर, सलज सरोस सहास॥
रमन रमनी से की विपरीत रति की चाह बरज़ोरी।
लजा, तेवर चढ़ा, लोचन नचा, फिर हँस गई गोरी॥

[३४५]

रँगी सुरत रँग पिय हिये, लगी जगी सब राति।
पैंड़ पैंड़ पर ठठिकि कैं, ऐंड़ भरी ऐंडाति॥
रँगी रसरंग में सीने से लग जागी है छबि छाई।
ठठक हर हर क़दम पर ऐंड सी लेती है अँगड़ाई॥

[३४६]

लहि रति सुख लगिये गरें, लखी लजौंहीं नीठि।
खुलत न मो मन बँधि रही, वहै अधखुली डीठि॥
सुरति कर लग गले, चितई लजीली, डीठ नव जोबन।
नहीं खुलतो, मेरे मन बँध रही, वह अधखुली चितवन॥

[३४७]

कर उठाय घूंघट करत, उसरत पट गुझरोट।
सुख मोटैं लूटी ललन लखि ललना की लोट॥
खुली गुभरोट घूँघट पट सँभाले से, सरक जूटा।
ललन लख लोट ललना की ललक लोना मज़ा लूटा॥

[३४८]

हँसि ओठनि बिच कर उचै, किये निचौंहें नैन।
खरे अरे पिय के प्रिया, लगी बिरी मुँह दैन॥
लबों बिच हाथ ऊँचा कर निचौंहें नैन से हंसकर।
पिया के मुँह गिलौरी पुरवज़िद देने लगी दिलबर॥

[३४९]

नाक मोरि नाहीं ककै, नारि निहोरे लेय।
छुवत ओंठ पिय आँगुरिन, बिरी बदन तिय देय॥
सिकोड़े नाक नट नट कर, निहोरे लै रही छम छम।
छुवा उँगली अधर बीरी प्रिया मुख दे रहे प्रीतम॥

[३५०]

सरस सुमिल चित तुरँग की, करि करि अमित उठान।
गोय निबाहें जीतिये, प्रेम खेल चौगान ॥
दिले आशिक़ उठाकर सर चले बन अशहवे ताज़ी।
निबाहे गोय जीतौ इश्क़ के चौगान की बाज़ी ॥

[३५१]

दृग मीजत मृगलोचनी, धर्‌यो उलटि भुज बाथ।
जानि गई तिय नाथ के, हाथ परसहीं हाथ ॥
झिझक मृगलोचनी दृग मीचते, भुज भर उलट शाना।
परसते साथ ही "निज नाथ का है हाथ" पहिचाना ॥

[३५२]

प्रीतम दृग मीचत प्रिया, पानि परस सुख पाय।
जानि पिछानि अजान लों, नेकु न होति लखाय ॥
प्रिया प्रीतम के दृग मीचे परस पानों का सुख पाकर।
बने अनजान हैं पहिचान कर होते नहीं अज़हर ॥

[३५३]

कर मुँदरी की आरसी, प्रतिबिम्बित प्यौ पाय।
पीठि दिये निधरक लखै, इक टक डीठि लगाय ॥
पिया को मुनअकस अँगुश्तरी की आरसी में तक।
दिये ही पीठ इक टक देखती है डीठ ला निधरक ॥

[३५४]

मैं मिसहीं सोयो समुझि, मुँह चूम्यौ ढिग जाय।
हँस्यौ खिस्यानी गर गह्यौ, रही गरे लपटाय ॥
समझ सोया छली को पास जा, मुख चूम रस पागी।
हँसा, शरमाई, दी गलबाहँ तब मैं कण्ठ हँस लागी ॥

[३५५]

मुँह उघारि प्यौ लखि रह्यौ, रह्यौ न गो मिस सैन।
फरके ओठ उठे पुलक, गये उघरि जुरि नैन॥
पड़ी थी सैन, मिस, चादर से चुपके नैन छिप खोले।
मिली नज़रें इधर हिल अंग सब रस रंग से डोले॥

[३५६]

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहन हँसै, देन कहै नटि जाय॥
चुराई लाल की मुरली कि कुछ बतरस का रस पाए।
क़सम खा खा नचा अब्रू, कहै देने, पलट जाए॥

[३५७]

नेकु उतै उठि बैठिए, कहा रहे गहि गेहु।
छुटी जाति नहदी छिनक, मेंहदी सूखन देहु॥
ये घर की चूम चौखट क्या रहे उठ और कुछ कीजे।
छुटी जाती है पिय नाख़ुन की मेंहदी सूखने दीजे॥

[३५८]

मानु तमासो करि रही, बिबस बारुनी सेय।
झुकति हँसति हँसि २ झुकति, झुकि २ हँसि २ देय॥
मए गुलरंग पी, बेख़ुद, तमाशा सा दिखाती है।
कभी झुक झुक के हँसती है कभी हँस हँस झुक आती है॥

[३५९]

हँसि हँसि हेराति नवल तिय, मद के मद उमदाति।
बलकि बलकि बोलति बचन, ललकि २ लपटाति॥
नवेली रति समय हँस हँस है मद के मद से उमदाती।
बलक बोले बचन ललना ललक लालन से लपटाती॥

[३६०]

खलित बचन अधखुलित दृग, ललित स्वेदकन जोति।
अरुन बदन छवि मद छकी, खरी छबीली होति॥
अधूरे से वयन अधखुल नयन श्रम स्वेदकन जारी।
छकी छवि से छबीली मुख अरुन शोभा की बलिहारी॥

[३६१]

निपट लजीली नवल तिय, बहकि बारुनी सेय।
त्यौं त्यौं अति मीठी लगति, ज्यों ज्यौं ढीठचौ देय॥
निहायत शर्मगीं नव नाज़नी, सहबा से माती है।
मिटाती हैं अदाएँ शोख़ियाँ ज्यों ज्यों दिखाती है॥

[३६२]

बढ़ति निकासि कुच कोर रुचि, कढ़त गौर भुजमूल।
मन लुटिगो लोटन चढ़त, चौंटति ऊँचे फूल॥
समनबर, उच्च कलियाँ चुन रही खिलते हैं गुल बूटे।
चतुर हट, गौर भुज कुच कोर लोटन खुल मजे लूटे॥

[३६३]

घाम घरीक निवारिए, कलित ललित अलि पुंज।
जमुना तीर तमाल तरु, मिलत मालती कुंज॥
लबे जमुना ठहर लो धूप में, क्या कुंज छाई है।
तमालों से मिली है मालती अलि से सुहाई है॥

[३६४]

चलित ललित श्रम स्वेदकन, कलित अरुन मुख तैन।
बन बिहार थाको तरुनि, खरे थकाए नैन॥
ललित श्रम स्वेदकन झलकें अरुन मुख पर छटा छाई।
थकी रस-केलि बन कुंजन थके लख नैन रैनाई॥

[३६५]

अपने कर गुहि आपु हठि, हिय पहिराई लाल ।
नौलसिरी औरै चढ़ी, मौलसिरी की माल ॥

गुही अपनेही हाथों, हठ गले पहिनाई नँदलाला ।
नई रौनक़ चढ़ी गुलरू पै पहिने मौलसर माला ॥

[३६६]

लै चुभकी चलि जाति जित, जित जलकेलि अधीर ।
कीजत केसर नीर से, तित तित के सरनीर ॥

लगा डुबकी जिधर जलकेलि में जाती है वो शीरीं ।
वहीं, सर नीर, केसर-नीर सा होता है बस रंगीं ॥

[३६७]

छिरके नाह नवोढ़ दृग, कर पिचिकी जल जोर ।
रोचन रँग लाली भई, विय तिय लोचन-कोर ॥

छिड़क दृग-कोर पिचकी जोर कर प्रीतम प्रिया वाली ।
हुई हमचश्म के चश्मों में रोचन रंग सी लाली ॥

[३६८]

हेरि हिंडोरे गगन तें, परी परी सी टूटि ।
धरी धाय पिय बीचही, करी खरी रस लूटि ॥

परी टूट आसमाँ से, वो परीरू लख हिंडोले से ।
धरी धा बीच प्रीतम लूट रस, कस कर झकोले से ॥

[३६९]

बरजे दूनी हठि चढ़ै, ना सकुचै न सँकाय ।
टूटत कटि द्रुमची मचक, लचकि लचकि बचि जाय ॥

दुगुन चढ़ती है हठ हटके न डरती है न शरमाती ।
मचक से लौंद सी टूटै कमर लच लच है बच जाती ॥

[३७०]

दोऊ चोर मिहीचनी, खेल न खेलि अघात।
दुरत हिये लपटाय कै, छुवत हिए लपटात॥
रहे खेल आँख-मिचनी, पर अघाते हैं न घर जाते।
लिपट छाती से छुटते हैं, झपट छतियाँ हैं लिपटाते॥

[३७१]

लखि लखि अँखियनि अधखुलिन, आँग मोरि आँगिराय।
आधिक उठि लेटति लटकि, आरस भरी जँभाय॥
हैं लख लख अधखुली अंखियान अँग अँग मोर अँगड़ाती।
भरी आलस जँभाई लै, उठ आधक है लटक जाती॥

[३७२]

नीठि नीठि उठि बैठि कै, प्यौ प्यारी परभात।
दोऊ नींद भरे खरे, गरे लागि गिरि जात॥
सुबह उठ, बैठ सुख सेजों प्रिया प्रीतम सुरँग राते।
ढले हैं नींद के साँचे गले लग कर हैं गिर जाते॥

[३७३]

लाज गरब आलस उमँग भरे नैन मुसुक्यात।
राति रमी रति देत कहि, औरै प्रभा प्रभात॥
लजीले नैन गरबीले उनीदे रसमसे भारी।
सुबह का नूर कहता है रमी रति रात को प्यारी॥

[३७४]

कुंज-भौन तजि भौन को, चलिये नंद किसोर।
फूलति कली गुलाब की, चटकाहट चहुँ ओर॥
ज़रा चलिये तो मन्दिर छोड़, माधौ मधु निकुंजन में।
चटखते गुंचए गुल हैं मची है धूम गुलशन में॥

[३७५]

नाट न सीस साबित भई, लुटी सुखनि का मोट।
चुप करिये चारी करति, सारी परी सरोट ॥
मज़ा की लूट सर साबित हुई मत कर सुखनसाज़ी।
ये चुपके पुरशिक़न सारी तेरी करती है ग़म्माज़ी ॥

[३७६]

मोसों मिलवति चातुरी, तू नहिं भानति भेव।
कहे देत यह प्रगट हीं, प्रगट्यौ पूस पसेव ॥
कुलाबे क्या मिलाती है न क्या खुल भेद जाता है।
पसीना पूस का प्रकटा प्रकट ही सब बताता है ॥

[३७७]

सही रँगीली रति जगे, जगी पगी सुख चैन।
अलसौंहैं सौंहैं किये, कहैं हँसौंहैं नैन ॥
रँगीली रतजगे जागी हैं लूटे हैं मज़े शब भर।
हँसौंहैं नैन अलसौंहैं ये कहते सौंह ही खाकर ॥

[३७८]

यौं दलमलियत निरदई, दई कुसुम से गात।
कर धर देखो धरधरा, अजौं न उर को जात ॥
कहीं इस रंग ज़ालिम गुलबदन मसली भी जाती है।
धरो तो हाथ छाती पर अभीतक धकधकाती है ॥

[३७९]

छनक उघारति छन छुवति, राखति छनक छपाय।
सब दिन पिय खंडित अधर, दरपन देखत जाय ॥
कभी तो खोलती, छूती कभी, फिर से छिपाती है।
लबे ख़ाईदा तक तक आइना में दिन गँवाती है ॥

[३८०]

औरै ओप कनीनकनि, गनी घनी सिरताज।
मनी धनी के नेह की, बनी छनी पट लाज॥
ज़ियाए मर्दुमे चश्म आज है सरताज महबूबाँ।
छनी सी कुछ हया है काशफ़े मतस्तीय-मजज़ूबाँ॥

[३८१]

कियो जु चिबुक उठाय के, कम्पित कर भरतार।
टेढ़ी ए टेढ़ी फिरति, टेढ़े तिलक लिलार॥
लगाया दस्तलरजाँ से तिलक टेढ़ा जो प्रीतम ने।
तू फिरती टेढ़ी ही टेढ़ी किया बेखुद है दमख़म ने॥

[३८२]

वेई गड़ि गाड़ें परी, उपट्यौ हार हिये न।
आन्यो मोरि मतंग मनु, मारि गुरेरन मैन॥
हैं उभरे गुल ये सीना पर, नहीं ये हार उभर आया।
गुल्ला मारकर क्यूपिड (cupid) ने फ़ीलेमस्त लौटाया॥

[३८३]

पलनि पीक अंजन अधर, धरे महावर भाल।
आजु मिले जु भली करी, भले बने हो लाल॥
महावर भाल, लब सुरमा, पलक पीकों से, रँग डाला।
मिले आज आप क़िस्मत से बने हो ख़ूब नँदलाला॥

[३८४]

गहकि गांस औरै गहे, रहै अधकहे बैन।
देखि खिसौंहैं पिय नयन, किये रिसौंहैं नैन॥
खिसौंहें नैन पिय के लख रिसौंहें नैन कर हेरी।
रही अध ही कही कुछ और समझी बात मत फेरी॥

[३८५]

तेह तरेरे त्यौर करि, कत करियत दृग लोल ।
लीक नहीं यह पीक की, श्रुतिमनि झलक कपोल ॥
बदल कर रंग आँखों का गिरह ऊपर ये क्यों डाली ।
नहीं यह लीक गालों पीक की श्रुतमन झलक लाली ॥

[३८६]

बाल कहा लाली भई, लोयन कोयन माँह ।
लाल तिहारे दृगन की, परी दृगनि में छाँह ॥
हुनी क्यों गोशए चश्माँ में ऐ गुलरू तेरे लाली ।
पड़ा है आप की आँखों का इन में अक्स बनमाली ॥

[३८७]

तरुन-कोकनद बरन बर, भये अरुन निसि जागि ।
वाही के अनुराग दृग, रहे मनो अनुरागि ॥
तरोताज़ा कमल सी सुर्ख़ आँखें हैं ये शब जागीं ।
समझ पड़ता है फिर हम रंग ही के रंग अनुरागीं ॥

[३८८]

केसर-केसरि कुसुम के, रहे अंग लपटाय ।
लगे जानि नख अनखली, कत बोलत अनखाय ॥
कुसुम केसर की यह केसर है लिपटी अंग से प्यारी ।
इन्हें नखजान तू ए अनखुली अनखा रही भारी ॥

[३८९]

सदन सदन के फिरन की, सद न छुटै हरिराय ।
रुचै तितै बिहरत फिरौ, कत बिहरत उर आय ॥
ये घर घर घूमने की आपकी आदत नहीं जाती ।
जिधर चाहो उधर बिहरो, न बिहरो पर मेरी छाती ॥

[३९०]

पट कै ढिग कत ढाँपियत, सोभित सुभग सुबेख।

हद रद छद छबि देत यह सद रदछद की रेख॥

तू घूंघट पट से प्यारी क्यों इसे झट ढाँक लेती है।
ये सद रद-छद-की-रेखा हद से ज़्यादा ज़ेब देती है॥

[३९१]

मोहू सों बातनि लगे, लगी जीहि जिहि नाँय।

सोई लै उर लाइए, लाल लागियत पाँय॥

लगे बातों में, मुझ से वह लगी लब, बात मत कीजे।
क़दम लगती हूँ उसको ही गले जाकर लगा लीजे॥

[३९२]

लालन लहि पाये दुरै, चोरी सोहँ करै न।

सीस चढ़े पनिहां प्रगट, कहत पुकारे नैन॥

ये चोरी छिप नहीं सकती क़सम क्यों आप खाते हैं।
सुराग़ इसका ये दीदे साफ़ ही सर चढ़ बताते हैं॥

[३९३]

तुरत सुरत कैसे दुरत, मुरत नैन जुरि नीठि।

हौंड़ी दै गुन रावरे, कहत कनौड़ी डीठि॥

तुरत का यह सुरत कैसे दुरे मुड़ डीठ रहती है।
लजीली डीठ गुन हज़रत मुनादी पीट कहती है॥

[३९४]

मरकत भाजन-सलिल गत, इन्दु कला के वेष।

झीन झँगा में झलमलै, स्याम गात नख रेष॥

हिलाले आब ज़रफे नील मन सी झिलमिलाती है।
झँगा झीने में नख रेखा सलोने तन सुहाती है॥

[३९५]

ऐसी यै जानी परति, झँगा ऊजरे माँहिं।
मृगनैनी लपटी जु हिय, बेनी उपटी बाँहिं॥
लिबासे साफ़ में वह वैसी ही देती है दिखलाई।
जो आहू चश्म लपटी जुल्फ़ बाज़ू पर उभर आई॥

[३९६]

वाही की चित चटपटी, धरत अटपटे पाय।
लपट बुझावति बिरह की कपट भरे हू आय॥
उसी की दिल में बेताबी, क़दम क्यों लड़खड़ाते हौ।
दगा दिल में भरे, आ, आतिशे फुरक़त बुझाते हौ॥

[३९७]

कत बेकाज चलाइयत, चतुराई की चाल।
कहे देत गुन रावरे, सब गुन बिनगुन माल॥
अबस तक़रीर ला हासल, कहौ, किस काम आती है।
यें बिनगुन माल सब गुन आपके हज़रत! बताती है॥

[३९८]

पावक सो नैननि लग्यो, जावक लाग्यो भाल।
मुकुर होहुगे नेकु में, मुकुर बिलोको लाल॥
लगी है आग सी आँखों महावर देख माथे पर।
मुकर जावौगे फिर हज़रत अभी देखौ मुकर लेकर॥

[३९९]

रही पकरि पाटी सरिस, भरे भौंह चित नैन।
लखि सपने प्रिय आन-रत, जगतहुँ लगति हियै न॥
रही पाटी पकड़, रिस से भरी भौंहें नयन और दिल।
रमन सौकिन का लख सपने न जग लगती हिये हिलमिल॥

[४००]

रह्यौ चकित चहुँवा चितै, चित मेरो मति भूलि।
सूर उदै आये रही, दृगनि माँझ सी फूलि॥
मेरी अक्ल आपकी सूरत से शशदर होके भूली है।
सुबह तशरीफ लाये शाम सी आँखों में फूली है॥

[४०१]

अनत बसे निस की रिसानि, उर बरि रही बिसेषि।
तऊ लाज आई उझकि, खरे लजौंहैं देखि॥
सवत घर शबगुज़ारी पर लगी इक आग सी तन में।
खड़े जब मुनफ़अल देखे हया आई उझक मन में॥

[४०२]

सुरँग महावर सौति-पग, निरखि रही अनखाय।
पिय अँगुरिन लाली लखे, खरी उठी लगि लाय॥
सुरँग जावक निरख सौकिन के पग उपजी अनख भारी।
पिया की उँगलियों पर देख सुरख़ी जल उठी प्यारी॥

[४०३]

कत सकुचत निधरक फिरौ, रतिऔ खोरि तुमैं न।
कहा करौ जो जाय ए, लगे लगौंहैं नैन॥
नहीं तक़सीर मुतलक़ आपकी, मत आप शरमाएँ।
करें क्या आप जो यह दीदए मफ़तूँ हीं लैजाएँ॥

[४०४]

प्रान पिया हिय में बसै, नखरेखा-ससि भाल।
भलौ दिखायौ आनि यह, हरि-हर-रूप रसाल॥
जबीं पर है हिलाले नाख़नो दिल पर शिरी (श्री) छाई।
हरी-हर की ये झाँकी आपने क्या खूब दिखलाई॥

[४०५]

ह्यां न चलै बलि रावरी, चतुराई की चाल ।
सनख हिये खिनखिन नटन, अनख बढ़ावत लाल ॥
यहाँ चतुराई की ये चाल चलना काम आता है ।
ये इनकार और नाख़ुन सीनः पर गुस्सा दिलाता है ॥

[४०६]

न करु न डरु सब जग कहत, कत बे काज लजात ।
सौहैं कीजै नैन जौ सांची सौहैं खात ॥
नहीं कर, डर ही क्या, फिर आप क्यों साहब लजाते हौ ।
ज़रा आंखें मिलाओ तुम जो सच सौगंध खाते हौ ॥

[४०७]

कत कहियत दुख देन को, रचि रचि बचन अलीक ।
सबै कहा डर है लखै, लाल महाउर—लीक ॥
हमारा दिल दुखाने को ये क्यों बातें बनाते हौ ।
दिखाकर रेख जावक की जिगर मेरा जलाते हौ ॥

[४०८]

नख रेखा सोहै नई, अलसौहैं सब गात ।
सौहैं होत न नैन ए, तुम सौहैं कत खात ॥
नई नाख़ुन की रेखा रंगे-शब से अंग अलसाते ।
करौ तौ सामने आँखें जो सच सौगंध हौ खाते ॥

[४०९]

लाल सलोने अरु रहे, अति सनेह सों पागि ।
तनिक कचाई देत दुख, सूरन लों मुह लागि ॥
सलौने श्याम सुंदर पग रहे नव नेह में नामी ।
ज़मीकँद की तरह दुख दै रहौ मुँह लग ज़रा ख़ामी ॥

[४१०]

पल सोहैं पगि पीक रँग छल सों हैं सब बैन।
बल सौहैं कत कीजियत, ए अलसोहैं नैन ॥
रँगी पगि पीकपल सोहैं, सने सब बैन छल सो हैं।
लजीले नैन अलसोहैं, सकुच कीजे न बल सो हैं ॥

[४११]

कत लपटैयत मो गरे, सो न जु ही निसि सैन।
जिहि चंपक बरनी किए, गुल अनार रँग नैन ॥
न लपटो मो गरे, लपटौ जो हिय लपटी थी शब प्यारी।
रँगे लोचन थे जिस चंपक बरन ने रंग गुलनारी ॥

[४१२]

भये बटाऊ नेह तजि, बादि बकति बे काज।
अब आलि देत उराहनो, उर उपजत अति लाज ॥
तअल्लुक़ तोड़ बेगाना बने बातें बनाते हैं।
गिला करते हुए मधकुर हम अब ब्रज जन लजाते हैं ॥

[४१३]

सुभरु भर्‍यो तुव गुन–कननि,पचयो कपट कुचाल।
क्यों धैं दार्‍यौ लौं हियो, दरकत नाहिन लाल ॥
दग़ा से पक गया तेरे भरे भरपूर गुन दाने।
अनार अब बन नहीं फटता है सीना क्यों, खुदा जाने ॥

[४१४]

मैं तपाय त्रै ताप सों, राख्यौं हियो हमाम।
मकु कबहूं आवै इहां, पुलकि पसीजै स्याम ॥
ये नौ हम्माम सीना तीन तापों से है गरमाया।
पसीजें श्याम घन शायद करें इस दीन पर दाया ॥

[४१५]

आज कछू औरै भये, ठये नये ठिक ठैन।
चित के हितके चुगुल ए, नितके होंहिं न नैन॥
हुए कुछ और ही दीदे नए ही ढंग डाले हैं।
ये राज़े दिल के हैं गम्माज़ हर दिन से निराले हैं॥

[४१६]

फिरत जु अटकत कटनि बिन, रसिक सुरस नहिं ख्याल।
नए नए निति निति हितनि, कत सकुचावत लाल॥
नहीं कुछ शर्म बे मतलब जो घर घर आप जाते हो।
नया हर दिन हर इक से नेह कर, उफ़! क्यों लजाते हो॥

[४१७]

जो तिय तुव मन भावती, राखी हिये बसाय।
मोहिं खिजावति दगनि ह्वै, वहिये उझुकति आय॥
बसाई दिल में जो मन भावती यह रङ्ग राती है।
उझक आंखों की पुतली बन झिझक मुझको खिजाती है॥

[४१८]

मोहिं करत कत बावरी, करें दुराव दुरै न।
कहैं देति रँग राति के, रँग निचुरत से नैन॥
नहीं रँग रैन के छिपते मुझे तू क्या बताती है।
निचुरते रंग से नैनों में रंगीनी दिखाती है॥

[४१९]

पट सौं पोंछि परे करौ, खरी भयानक-भेष।
नागिन ह्वै लागति दगनि, नागबेलि की रेख॥
बहुत कुछ बदनुमा है कीजिये पट पोंछ परहेली॥
दृगन नागन सी लगती है खिंची वह नाग की बेली।

[४२०]

ससि बदनी मोकों कहत, हौं समुझी निज बात ।
नैन-नलिन प्यौ रावरे, न्याय निरखि नै जात ॥
मुझे जो माहरू कहते हो, समझी वजह रँगराते ।
सकुच लोचन कमल सचमुच मेरे सन्मुख हैं झुक जाते ॥

[४२१]

दुरै न निघरघट्यौ दिये, ए रावरी कुचाल ।
विष सी लागति है बुरी, हँसी खिसी की लाल ॥
नहीं ये बद रविश छिपती है झुँझलाने से क्या हासिल ।
ये ख़श्म-आलूदा खन्दा ज़हर के मानंद है क़ातिल ॥

[४२२]

जिहि भामिनि भूषन रच्यो, चरन–महावर भाल ।
वही मनो अँखिया रँगी, ओठनि के रँग लाल ॥
चरन जावक रचाया जिसने मस्तक मान कर भारी ।
उसी के सुर्ख ओंठों ने रंगी अँखियाँ ये गुलनारी ॥

[४२३]

चितवनि रूषे दृगनि की, बिन हाँसी मुसुक्यान ।
मान जनायो मानिनी, जानि लियो पिय जान ॥
रुखाई की वो चितवन, बिन हँसी ही के वो मुसकाना ।
जनाया मानिनी ने मान पिय रसखान ने जाना ॥

[४२४]

बिलखी लखी खरी खरी, भरी अनख बैराग ।
मृगनैनी सैन न भजै, लखि बेनी के दाग ॥
खड़ी बैराग गुस्सा से भरी, लखती है बिलखाती ।
निरख कर दाग बैनी सेज मृगनैनी नहीं जाती ॥

[४२५]

हँसि हँसाय उर लाय उठि, कहे जु रूषे बैन।
जकित थकित ह्वै तकि रहे, तकति तिरीछे नैन॥
तेरे रूखे बयन, तिरछे नयन तक, जक रहे आली।
हँसा, हँस, उठ, लगाले कण्ठ ए गुलफाम बनमाली॥

[४२६]

रिस की सी रुष ससिमुखी, हँसि हँसि बोलति बैन।
गूढ़ मान मन क्यों रहै, भये बूढ़ रँग नैन॥
तू हँस हँस बोलती है पर हैं तेरी रिस भरी आँखें।
छिपै क्या मान खुफिया बीरबूटी होगईं आँखें॥

[४२७]

मुँह मिठास दृग चीकने, भौंहें सरल सुभाय।
तऊ खरे आदर खरो, खिन खिन हियो सँकाय॥
ज़बाँ शीरीं व चश्मे पुर तरःहुम बेशिकन अब्रू।
मगर फिर भी मुख़ौवफ़ से खड़े हैं देख, ऐ बदख़ू॥

[४२८]

पति-रितु-औगुन गुन बढ़त, मान माह की सीत।
जात कठिन ह्वै अति मृदौ, रमनी-मन-नवनीत॥
अयूबोवस्फ, शर मौसम से बढ़कर माघ मानो नम।
दिले माशूक़ व मक्खन को कड़ा करते हैं मिल बाहम॥

[४२९]

कपट सतर भौंहैं करी, मुख़ सतरौहैं बैन।
सहज हँसौहैं जानि कै, सौंहैं करति न नैन॥
चढ़ाई गोकि भौंहें, है शकररंजी का दम भरती।
सहज ही पर हँसोहैं जान दृग सौहें नहीं करती॥

[४३०]

सोवत लखि मन मान धरि, ढिग सोयो प्यौ आय।
रही सुपन की मिलन मिलि, तिय हियसों लपटाय॥
है सोती मान ठाने लख, पिया भी साथ जा सोये।
मिलन मिल स्वप्न की, छतिया लपट तिय दाग़ दिल धोये॥

[४३१]

दोऊ अधिकाई भरे, एकै गौं गहराय।
कौन मनावै कौ मनै, मानै मत ठहराय॥
अड़े हैं अपनी अपनी, गौं नहीं कम ज़ौम-व-खुदराई।
मनावे कौन माने हठ में दोनों की है बन आई॥

[४३२]

लग्यौ सुमन ह्वै है सुफल, आतप रौस निवारि।
बारी बारी आपनी, सींच सुहृदता-बारि॥
सुफल होगा सुमन जो लग रहा रिस ताप तज प्यारी।
मुरौवत के सुजल से सींच बारी, प्रेम की बारी॥

[४३३]

गह्यौ अबोलो बोलि प्यौ, आपै पठै बसीठ।
दीठि चुराई दुहुन की, लखि सकुचौंही दीठ॥
बुलाया भेज खुद ही क़ासिदा आने पै चुप ठानी।
बुराई डीठ लख दोनों की मुखड़ों पर फिरा पानी॥

[४३४]

खरी पातरी कान की, कौन बहाऊँ बानि।
आक कली न रली करै, अली अली जिय जानि॥
निहायत कान की कच्ची है, इस आदत पै शर्म आए।
अकौवा की कली का कब भँवर रस चूसने जाए॥

[४३५]

मान करति बरजति न हौं, उलटि दिवावति सौंह ।
करी रिसौंही जाँयगी, सहज हँसौंहीं भौंह ॥
नहीं मैं मनअ् करती मान, उलटी सौंह दिलवाती ।
सहज भौंहें हँसौहें ये रिसौंहैं क्यों हैं की जाती ॥

[४३६]

रुख रूखी मिस रोख मुख, कहति रुखौंहैं बैन ।
रूखे कैसे होत ए, नेह चीकने नैन ॥
बचन रूखे, रुखाई रुख़, रुखाहट की झलक मुखपर ।
मगर ये नेह चिकने नैन रूखे हों तौ हों क्योंकर ॥

[४३७]

सौंहें हूँ चाह्यौ न तैं, केती द्याई सौंह ।
ए हो क्यौं बैठी किये, ऐंठी मैंठी भौंह ॥
दिलाई सैकड़ों सौंहैं, हुई सौहैं न तू बदख़ू ।
तू ऐंठी भोंह कर बैठी हुई है क्यों कमाँ अब्रू ॥

[४३८]

ए री यह तेरी दई, क्यौं हूँ प्रकृति न जाय ।
नेह भरे ही राखिये, तूँ रूखिये लखाय ॥
खुदा शाहिद, हमेशा खुश्क ही देतो है दिखलाई ।
रखा पुर नेह सीने में मगर रूखी नज़र आई ॥

[४३९]

विधि विधि कै निकरै टरै, नहीं परे हूँ पान ।
चितै कितै तैं लै धरौ, इतै इतो तन मान ॥
खुदा के हाथ है अब बात, मैं तो पाँव पै हारी ।
ज़रा देखो तौ इतने तन में कितना मान है भारी ॥

[४४०]

तो-रस-राच्यौ आन बस, कहैं कुटिल मति क्रूर ।
जीभ निबौरी क्यौं लगै, बौरी चाखि अँगूर ॥
रँगा रसरंग में तेरे खयाले ग़ैर क्या रक्खे ।
निबौरी कब रुचै बौरी सरस अंगूर जो चक्खै ॥

[४४१]

हा हा बदन उघारि दृग, सुफल करैं सब कोय ।
रोज सरोजनि कै परै, हँसी ससी की होय ॥
ज़रा आंखों को ठण्डा कर दिखा मुंह खोलकर झांकी ।
कमल पर ओस पड़ जाये, हँसी हो माह ताबाँ की ॥

[४४२]

गहिली गरब न कीजिये, समैं सुहागहिं पाय ।
जिय की जीवनि जेठ ज्यौं, माह न छांह सुहाय ॥
सुहाग अच्छे समय पाकर ग़रूरी कर न मदमाती ।
जो जिय की जेठ जीवन माव में छाया नहीं भाती ॥

[४४३]

कहा लेहुगे खेल में, तजौ अटपटी बात ।
नैंकु हँसौंहीं हैं भई, भौंहैं सौंहैं खात ॥
मज़ाक अच्छा नहीं, बिगड़ै है दिल फबती सुनाने पर ।
हँसोहीं कुछ हुई भौंहें मेरे सौगंध खाने पर ॥

[४४४]

सकुचि न रहिए स्याम सुनि, ए सतरौंहैं बैन ।
देत रचौंहैं चित कहें, नेह-नचौंहैं नैन ॥
ठिठक रहिये न सुनकर श्याम, ये अल्फ़ाज़ ला तायल ।
निचोहैं नेह के यह नैन कहते है, "रचा है दिल" ॥

[४४५]

चलो चलैं छुटि जाइ गो, हठ रावरे सकोच।
खरे चढ़ाये हे तबै, आए लोचन लोच॥
चलौ, चलने से छुट जायेगी हठ, हाँ! आपकी ख़ातिर।
चढ़े थे तब तो तेवर, लोच लोचन लाई है शातिर॥

[४४६]

अनरस हूं रस पाइये, रसिक रसीली पास।
जैसे सांठे की कठिन, गांठैं खरी मिठास॥
कुरस में भी रसीली की हलावत है वो रसभीनी।
गिरह में नैशकर के जिसतरह होती है शीरीनी॥

[४४७]

क्यौं हू सह बात न लगै, थाके भेद उपाय।
हठ दृढ़ गढ़ गढ़वै सुचलि, लीजै सुरँग लगाय॥
नहीं सह बातही लगती, थकी है भेद की भी कल।
हिसार असरार मुस्तहकुम, सुरँग से तोड़िये खुद चल॥

[४४८]

वाही दिन तैं ना मिट्यौ, मान कलह को मूल।
भलैं पधारे पाहुने, ह्वै गुड़हर को फूल॥
उसी दिन से जमी है जड़ कलह का मान नित ठन कर।
भले मेहमान आए आप, गुड़हर का सुमन बन कर॥

[४४९]

आये आपु भली करी, मेटन मान मरोर।
दूरि करौ यह देखि है, छला छिगुनिया छोर॥
मनाने आप आए, आइए, हज़रत! करम कीजे।
छला छिंगुरी किनारे का किनारे आप कर दीजे॥

[४५०]

हम हारीं कै कै हहा, पायनि पार्यो प्यौर ।
लेहु कहा अजहूं किये, तेह तरेरे त्यौर ॥
पिया को पाँव पाड़ा और हा हा करके मैं हारी ।
मिलैगा अब भी क्या तेवर चढ़ाने से तुम्हें प्यारी ॥

[४५१]

लखि गुरु जन बिच कमल सों, सीस छुवायो स्याम ।
हरि सनमुख करि आरसी, हिये लगाई बाम ॥
कवल सर से छुवाया श्याम ने गैरों में लख जाती ।
लगाई आरसी अंगुश्तरी की बाम ने छाती ॥

[४५२]

मन न मनावन को करै, देत रुठाय रुठाय ।
कौतुक लागे प्रिय प्रिया, खिझहूँ रिझवति जाय ॥
नहीं मन मनाना, इसलिये फिर फिर रुठाते हैं ।
मज़ा है खीझने में, रीझने का हज़ उठाते हैं ॥

[४५३]

सकत न तुव ताते बचन, मो रस को रस खोय ।
खिन खिन औटे छीर लौं, खरो सवादिल होय ॥
तेरी ताती सी बातें खो नहीं सकतीं मज़ा मेरा ।
मुलज़्ज़िज़ शीर औटे से हुआ करता है बहुतेरा ॥

[४५४]

खरे अदब इठलाहठी, उर उपजावति त्रास ।
दुसह संक बस की करै, जैसे सोंठि मिठास ॥
खड़े हैं बा अदब, पर तेरी इठलाहट में भी है डर ।
है जैसे इश्तबाहे ज़हर रखती सोंठ की शक्कर ॥

[४५५]

राति द्यौस हौंसें रहति, मान न ठिकु ठहराय।
जेतो औगुन ढूंढ़िये, गुनै हाथ परि जाय॥
है हरदम मान का अरमान लेकिन जम नहीं पाता।
जहां तक ऐब लखती हूँ हुनर ही है नज़र आता॥

[४५६]

सतर भौंह रूखे बचन, करत कठिन मन नीठि।
कहा करौं ह्वै जात हरि, हेरि हँसौंही डीठि॥
कठिन मन, बात रूखी, भौंह भी तेवर चढ़ाती है।
करूँ क्या आँख मिलते ही हँसौंहीं हो ही जाती है॥

[४५७]

तो ही को छुटि मान गो, देखत ही ब्रजराज।
रही घरिक लौं मान सी, मान करे की लाज॥
झलक ब्रजचंद के सन्मुख पड़ी सब मानकी फीकी।
निदामत मान सी मन में रही छिन मानसी पीकी॥

[४५८]

दहैं निगोड़े नैन ये, गहैं न चेत अचेत।
हौं कसि कै रिस के करौं, ए निसिखै हँसि देत॥
निगोड़े बेअदब दीदे निहायत ही अचेते हैं।
बहुत मैं ज़ब्त करती हूं मगर फिर हँस ही देते हैं॥

[४५९]

तुहूं कहे हौं आपु हूं, समुझति सबै सयान।
लखि मोहन जो मन रहै, तो मैं राखौं मान॥
समुझती आपही हूं औ मुझे तू भी है समझाता।
रहे जो देख मोहन मन तो ठानू मान मन भाता॥

[४६०]

मोहि लजावत निलज ए, हुलसि मिलत सब गात।
भान उँदै की ओस लौं, मान न जान्यौ जात ॥
मेरे शरमिन्दः कुन आज़ा मिले उनसे तड़प बाहम।
हुआ यों मान मख़फी ज्यों तुलूए मेह्र से शबनम ॥

[४६१]

खिंचे मान अपराध तैं, चलिगे बढ़ै अचैन।
जुरत दींठि तजि रिस खिसी, हँसे दुहुन के नैन ॥
खिंचे है मान और तक़सीर से पर चल पड़े बेकल।
मिली नज़रें तौ शर्म औ रिस को तज नैना हँसे चंचल ॥

[४६२]

नभ लाली चाली निसा, चटकाली धुनि कीन।
रति पाली आली अनत, आये बनमाली न ॥
गगन लाली निशाचली मचाया शोर चटकाली।
रही सुख सेज शब खाली न आली आए बनमाली ॥

[४६३]

दच्छिन पिय के बाम बसि, बिसराई तिय आन।
एकै बासर के बिरह, लागे बरष बिहान ॥
हुए दक्षिण पिया अब बाम बस हम दुख से मरती हैं।
फक़त इक दिन की बिछुरन से ही बरसैं सी गुज़रती हैं ॥

[४६४]

आपु दियो मन फेरि लै पलटै दीनी पीठ।
कौन चाल यह रावरी, लाल दुकावत दीठ ॥
दिया दिल लेलिया, फिर पीठ पलटे में दिखाते हो।
ये क्या रस्मे-मुहब्बत है, बज़र कैसी चुराते हो ॥

[४६५]

मोहि दियो मेरौ भयो, रहत जु जिय मिलि साथ ।
सो मन बांधि न सौंपिये, पिय सौतिन के हाथ ॥
दिया मुझको, हुआ मेरा, रहा करता है दिल से मिल ।
जबरदस्ती न सौतों हाथ दीजे बांधकर वह दिल ॥

[४६६]

मान्यौ मनहारिनि भई, गान्यौ खरी मिठाहि ।
वाको अति अनखाहटो, मुसक्याहट बिन नाहि ॥
हलावत खेज़ है दुशनाम, दिलवर मार मन हारी ।
तबस्सुम से सनी रहती है उसकी तल्ख़-गुफ़्तारी ॥

[४६७]

प्रिय सौतिनि देखत दई, अपने हिय तें लाल ।
फिरति डहडही सबनि में, वही मरगजी माल ॥
उतार अपने गले से रूबरू सौतों के पहिनाई ।
शिगुफ़्ता फिर रही पहिने हुए वह माल मुरझाई ॥

[४६८]

बालम बारे सौति के, सुनि पर नारि बिहार ।
भौ रस अनरस रिस रली, रीझ खीझ इकबार ॥
गये पर नारि घर प्रीतम सुना शब सौत की बारी ।
हुई इक साथ रिस रस रँगरली तसख़ीर बेज़ारी ॥

[४६९]

सुघर सौति बस पिय सुनति, दुलहिन दुगुन हुलास ।
लखी सखी तन दीठि करि, सगरब सलज सहास ॥
सुघर सौकिन के बस पिय सुन, दुगुन दुलहिन जी हुलसानी ।
गुरूर ओ शर्म से सजनी, तरफ कुछ देख मुसुकानी ॥

[४७०]

हठि हित करि प्रीतम लियौ, कियो जु सौति सिंगार ।
अपने कर मोतिन गुह्यो, भयो हरा हरहार ।
किया श्रृंगार सौकिन जे वो हठ हित पी से ली बाला ।
बनी हरहार अपने हाथ की गूंधी जलज माला ॥

[४७१]

बिथुर्‌यो जावक सौति पग, निरखि हँसी गहि गांस ।
सलज हंसौंहीं लखि लियौ, आधी हसी उसास ॥
हँसी बिथरा महावर सौत पग लख रश्क से जलकर ।
लजाते मुसकुराते देख अध हँस आह ली हँस कर ॥

[४७२]

बाढ़त तो उर उरज-भरु भरु तरुनई बिकास ।
बोझन सौतिन के हिये, आवत रूँधि उसास ॥
नए जोबन के भरने से कुछ अब उभरी सी छाती है ।
दबक सौतों के सीने से दबी सी साँस आती है ॥

[४७३]

ढीठि परोसिनि ईठ ह्वै, कहे जु गहे सयान ।
सबै सँदेसे कहि कह्यो, मुसुक्याहट में मान ॥
चतुर प्रीतम सुने यों मीडियम ठहरा के हमसाया ।
सबै सन्देस कह मुसक्यान में कुछ मान दरसाया ॥

[४७४]

चलत देत आभार सुनि, वही परोसिहिं नाह ।
लसी तमासे के हगनि, हाँसी आँसुन माह ॥
खबरगीर उस पड़ोसी ही को चलते सुन जो था शैदा ।
तबस्सुम तुरफ़ा तर अश्कों के झुरमट में हुआ पैदा ॥

[४७५]

छला परोसिनि हाथ तैं, छल करि लियो पिछानि।
पियहिं दिखायो लखि बिलखि, रिस सूचक मुसुकानि॥
छला छल कर परोसिन हाथ से लै साफ पहिचाना।
दिखा पिय रिसभरी मुसक्यान से कुछ मान सा ठाना॥

[४७६]

रहिहैं चंचल प्रान ये, कहि कौन की अगोट।
ललन चलन की चित धरी, कलन पलनि की ओट॥
रहैगी किस तरह ये जान मुज़तर वन में अब जाना।
नहीं पल ओट कल, चलना ललन ने दिल में है ठाना॥

[४७७]

पूस मास सुनि सखिन सों, साईं चलत सवार।
गहिकर बीन प्रवीन तिय, राग्यौ राग मलार॥
सुना सखियों से पिय का पूस में परदेश को जाना।
खुश अलहाँ नाज़नी ने बीन लै मल्लार दै ठाना॥

[४७८]

ललन चलन सुनि चुप रही, बोली आप न ईठ।
राख्यौ गहि गाढ़े गरै, मनो गलगली दीठ॥
ललन का सुन चलन चुप रह गई बोली न कुछ बानी।
दबाया हल्क़ गोया चश्म पुरनमने बहा पानी॥

[४७९]

बिलखी डबकौंहैं चखनि तिय, लखि गमन बराय।
पिय गहबर आये गरें, राखी गरें लगाय॥
बराये डबडबाते अश्क प्रीतम का गमन लख कर।
गला भर कर लिया लपटा प्रिया कर सीस पर रख कर॥

[४८०]

चलत चलत लौं ले चले, सब सुख संग लगाय।
ग्रीषम-बासर सिसिर-निस, पिय मो पास बसाय॥
चले लै साथ प्रीतम सुख सकल कर प्रेम की घातें।
बसाकर पास मेरे जेठ के दिन पूस की रातें॥

[४८१]

अजौं न आये सहज रँग, बिरह दूबरे गात।
अबहीं कहा चलाइये, ललन चलन की बात॥
तने महजूर पर अब तक सहज रंगत न आई है।
अभी से लाल चलने की ये क्या चरचा चलाई है॥

[४८२]

ललन चलन सुनि पलनि मैं, अँसुआ झलके आय।
भई लखाय न सखिनि हूँ, झूठे ही जँभुआय॥
ललन का सुन चलन आँखों में अश्कों का घिरा झुरमट।
छिपा हमजोलियों से ली जँभाई ओट कर घूंघट॥

[४८३]

चाह भरी अति रस भरी, बिरह भरी सब बात।
कोरि सँदेसे दुहुन के, चले पौरि लौं जात॥
मुहब्बत शौक रस फुरक़त भरे दोनों ही रंग राते।
सँदेशे सैकड़ों कहते हुए हैं पौर तक जाते॥

[४८४]

मिलि चलि चलि मिलि मिलि चलत, आँगन अथयो भान।
भयो मुहूरत भोर को, पौरिहि प्रथम मिलान॥
चले मिलि, मिल चले सूरज अथै आँगन में ही हिलमिल।
मुहूरत भोर का था पौर में पहिली हुई मंज़िल॥

[४८५]

दुसह बिरह दारुन दसा, रह्यौ न और उपाय।
जात जात ज्यौं राखिये, पिय की बात सुनाय॥
बियोगिन की व्यथा लख फिर न नुसख़ा कुछ नज़र आते।
सुना प्रीतम की बोली प्राण रक्खे जाते ही जाते॥

[४८६]

प्रजर्‌यौ आगि बियोग की, बह्यौ विलोचन नीर।
आठौ जाम हिये रहै, उठ्यौ उसास समीर॥
भरा है आबदीदा, आतिशे फ़ुरक़त रही है जल।
नफ़स की भाप से आठों पहर सीने में है हलचल॥

[४८७]

पलनि प्रगट बरुनीनि बढ़ि, नहिं कपोल ठहरात।
अँसुआ परि छतिआनि पै, छिनछिनाय छपि जात॥
छलक पलकों में, चढ़ मिज़गाँ पै, आरिज़ पर से ढलते हैं।
छनाछन अश्क गिर गिर सीनए सोज़ां पै जलते हैं॥

[४८८]

करि राख्यौ निरधार यह, मैं लखि नारी ज्ञान।
वही बैद औषध वहै, वही जु रोग निदान॥
यही तशख़ीस कर रक्खी है मैंने, देखकर नारी।
वही है बैद औ दरमा वही है वज्ह बीमारी॥

[४८९]

मरिबे को साहस ककै, बढ़ै बिरह की पीर।
दौरति है समुहैं ससी, सरसिज सुरभि समीर॥
बिरह की पीर बढ़ते लख तुली मरने पै मरदानी।
नसीमो माह नीलोफ़र पै ठानी दौड़ कुरबानी॥

[४९०]

ध्यान आनि ढिग प्रानपति, मुदित रहति दिन राति ।
पल कम्पति पुलकति पलक, पलक पसीजति जाति ॥
तसौवर ही में मिलकर प्राण-प्रीतम से है खुश रहती ।
कभी लरजाँ कभी शादाँ, पसीने से कभी बहती ॥

[४९१]

सकै सताय न बिरह तम, निसदिन सरस सनेह ।
रहै वहै लागी दृगनि, दीपसिखा सी देह ॥
सरस है नेह से तारी किए-फ़ुरक़त सताए क्या ।
लगा है शमअ़रू आखों अँधेरा पास आए क्या ॥

[४९२]

बिरह जरी लखि जीगननि, कही न उहि कइ बार ।
अरी आव भाजि भीतरैं, बरसत आजु अँगार ॥
जलेतन जुगनुओं को देख कितना हम न कह हारे ।
चल्-आ, अन्दर बरसते हैं आँगन में आज अंगारे ॥

[४९३]

अरी परे न करे हियो, खरे जरे पर जार ।
डारति बोरि गुलाब सौं, मलै मिलै घनसार ॥
जले पर मत जला, छाती मेरी बेहद दहकती है ।
मिला काफ़ूर में सन्दल तू अर्के-गुल छिड़कती है ॥

[४९४]

कहे जु बचन बियोगिनी, बिरह बिकल अकुलाय ।
किये न को अँसुआ सहित, सुआ सु बोल सुनाय ॥
सुना ख़िलवत में बिरहिन के जो मुख से दर्दे पिनहानी ।
सुआ ने कर दिये अँसुआ सहित दुहरा के वह बानी ॥

[४९५]

सीरे जतननि सिसिर रितु, सहि बिरहनि तन ताप।

बसिबे को ग्रीषम दिननु, पर्‌यौ परोसिनि पाप॥

बिरहनी की तपन तन से शिशिर शीतल सी तदबीरें।

परौसिन को पड़ा बसना, ग़ज़ब गरमा की सह पीरें॥

[४९६]

प्रिय प्राननि की पाहरू, करति जतन अति आप।

जाकी दुसह दसा पर्‌यौ, सौतिनि हूँ संताप॥

पिया की जान का तावीज़ उसको जान कर सारी।

जो देखा जां-बलब सौतें हुई ग़म से बिकल भारी॥

[४९७]

आड़े दै आले बसन, जाड़े हूँ की राति।

साहस कै कै नेह बस, सखी सबै ढिग जाति॥

बसन गीले से आड़े दै सँभल जाड़े की रातों में।

सखी नज़दीक जाती है फँसा दिल नेह नातों में॥

[४९८]

सुनत पथिक मुँह माह निस, लुवैं चलत वहि गाम।

बिन बूझे बिनहीं कहे, जियति बिचारी बाम॥

ये सुन राही से, उस देह, माघ शब चलती है लू भारी।

बिला पूछे, कहे, समझा; अभी जीती है बेचारी॥

[४९९]

इत आवति चलि जात उत, चली छसातक हाथ।

चढ़ी हिंडोरे सी रहै, लगी उसासनि साथ॥

इधर छै सात हाथ आती, उधर फिर से है खिंचजाती।

हिंडोलेसी चढ़ी दम की कशाकश में है दिखलाती॥

[५००]

नेह कियो अति डहडहौ, बिरह सुकाई देह ।
जरै जवासा जोज में, जैसे बरिसै मेह ॥
जुदाई ने सुखाया तन, हरा कर नेह का नाता ।
जवासा जिस तरह जम जौज़ के जल में है जल जाता ॥

[५०१]

आनि इहाँ बिरहा धर्‍यौ, स्यौं बिजुरी जनु मेंह ।
दृग जु बरत बरिसत रहत, आठौं जाम अछेह ॥
किए हैं हिज्र ने याँ बर्को बाराँ मुत्तफ़िक बाहम ।
झड़ी सी लग रही आँखों से जलती हरघड़ी हरदम ॥

[५०२]

बिरह बिपति दिन परत ही, तजे सुखनि सब अंग ।
रहि अबलौंऽब दुखौ भये, चला चले जिय संग ॥
खुशी ने आतेही फुरक़त के तन से कूच था ठाना ।
ले-हमदर्द का ठहरा जान के अब साथ है जाना ॥

[५०३]

नये बिरह बढ़ती बिथा, खरी बिकल जिय बाल ।
बिलखी देखि परोसिन्यौ, हरष हँसी तिहि काल ॥
नई फुरक़त ग़म-अफ़्ज़ूना, निहायत दिल को बेचैनी ।
हँसी खुश हो पड़ोसिन को तड़पता देख मृगनैनी ॥

[५०४]

छतो नेह कागद हिये, भई लखाय न टाँक ।
बिरह तचें उघर्‍यौ सु अब, सेहुँड कैसौ आँक ॥
मुहब्बत मुरतसिम क़िरतास सीना पर थी पिनहानी ।
ज़कूम-आसा नुमायाँ नारे-हिजराँ से हुई जानी ॥

[५०५]

करके मीड़े कुसुम लौं, गई बिरह कुँभिलाय।
सदा समीपिन सखिन हूँ, नीठि पिछानी जाय॥
गुले मालीदा बरकफ़ की तरह हिजराँ से कुम्हलानी।
सदा की हमनशीनों से नहीं जाती है पहिचानी॥

[५०६]

लाल तिहारे बिरह की, अगिन अनूप अपार।
सरसै बरसै नीर हूँ, मिटै न झरहूँ झार॥
अजब कुछ आतिशे दूरी में तेरे पेशदस्ती है।
न झर से झार मिटती है बरसने से बरसती है॥

[५०७]

याके उर औरै कछू, लगी बिरह की लाय।
पजरै नीर गुलाब के, पिय की बात बुझाय॥
ग़ज़ब सीने में उसके आतिशे फ़ुरक़त उबलती है।
पिया की बात से बुझती है अर्क़े गुल से जलती है॥

[५०८]

मरी डरी कि टरी बिथा, कहा खरी चल चाहि।
रही कराहि-कराहि अति, अब मुख आहि न आहि॥
है जीती या कि चल बीती, खड़ी क्या, हाथ धर छाती।
कराही अबतलक, अब आह तक लब पर नहीं आती॥

[५०९]

कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ।
उड़ी जाति कित हूँ गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ॥
हुआ बिछुड़े से क्या, दिल आपही के साथ है मेरा।
पतंग उड़कर कहीं जाए उड़ायक हाथ है डेरा॥

[५१०]

जब जब वै सुधि कीजिये, तब सबही सुधि जाँहि ।

आँखिन आँखि लगी रहै, आँखौ लागति नाँहि ॥

वो सुधि करते हैं जब जब, तबही सब सुध भूल भगती है।

लगी है आँख आँखों से न हरगिज़ आँख लगती है॥

[५११]

कौन सुनै कासों कहौं, सुरति बिसारी नाह ।

बदाबदी जिय लेत हैं, ए बदरा बदराह ॥

कहूँ किसको सुनैगा कौन, चिट्ठी तक न देते हैं।

बदी बदबद के ये बदराह बद्दल जान लेते हैं॥

[५१२]

औरै भाँति भए ऽब ये, चौरस चन्दन चन्द ।

पति बिन अति पारत बिपति, मारत मारुत मन्द ॥

हुए कुछ और ही अब चंद चन्दन चौसरी माला।

पिया बिन मन्दमारुत ने मुझे तौ मार ही डाला॥

[५१३]

नेकु न झुरसी बिरह झर, नेह लता कुम्हिलाति ।

निति निति होति हरी हरी, खरी झालराति जाति ॥

झुलसती ये नहीं हरगिज़, है नारे हिज्र की झेली।

हरी हर वक़्त होकर फैलती है प्रेम की बेली॥

[५१४]

यह बिनसत नग राखि कै, जगत बड़ो जस लेहु ।

जरी बिषम जुर ज्याइए, आय सुदरसन देहु ॥

ये बिनसत नग बचाकर रावरे जग में सुयस लीजे।

विषम जुर से जिया प्रीतम सुदर्शन आके अब दीजे॥

[५१५]

नित संसो हंसो बचतु, मनहुँ सु इहि अनुमान ।
बिरह अगिनि लपटनि सकत, झपटि न मीच सिचान ॥
ये शक है हंस कैसे बच रहा फिर ख्याल है आता ।
नहीं बाज़े अजल लपटों से फ़ुरक़त के झपट पाता ॥

[५१६]

करी बिरह ऐसी तऊ, गैल न छांडत नीच ।
दीने हूँ चसमा चखनि, चाहै लहै न मीच ॥
ये की फ़ुरक़त ने हालत पिंड तज लेकिन नहीं जाती ।
अजल ऐनक दिये है खोजती, फिर भी नहीं पाती ॥

[५१७]

मरन भलो बरु बिरह तें, यह बिचार चित जोय ।
मरन मिटै दुख एक को, बिरह दुहू दुख होय ॥
अजल बहतर है फ़ुरक़त से, यही कुछ दिल में है आती ।
जिए तकलीफ़ दोनों को, मरे इक की है मिट जाती ॥

[५१८]

बिगसत नव बल्ली कुसुम, निकसत परिमल पाय ।
परसि पजारति बिरहि हिय, बरासि रहे की बाय ॥
नई बेलों में कलियां खिल रहीं खुशबू निकलती है ।
शमीमे बर्षकाली लग, लगन की आग जलती है ॥

[५१९]

औंधाई सीसी सुलखि, बिरह बरति बिललात ।
बीचहिं सूखि गुलाब गौ, छींटौ छुयौ न गात ॥
उसे गिरियाँ व विरियाँ देख दी शोशी उलट ऊपर ।
छुवा छींटा न तन, अधबीच ही था गुलाबे तसूर ॥

[५२०]

हौंही बौरी बिरह बस, कै बौरो सब गांव।
कहा जानिये कहत हैं, ससिहिं सीतकर नांव॥
ये पागल हो गई बस्ती कि मैं ही खुद हूँ बौरानी।
कहा करते है शशि को शीतकर, करते हैं नादानी॥

[५२१]

सोवति जागति सुपन बस, रस रिस चैन कुचैन।
सुरति स्याम घन की सुरति, बिसरै हूँ बिसरै न॥
खुशी ग़म खश्म लज़्ज़त ख़्वाब में क्या जागते सोते।
सुरत सूरत की रहती है जुदा नटवर नहीं होते॥

[५२२]

दृग मलंग डारे रहैं, कीने बदत निमूँद।
करि साँकरि बरुनी सजल कौड़ा आँसू बूँद॥
मलंगे मन निमुंद आंखों पड़ा तकिया दिमाना है।
सलासल मौज मिज़गाँ ताजियाना अश्क़ दाना है॥

[५२३]

जिहिं निदाघ दुपहर रहै, भई माह की राति।
तिहिं उसीर की रावटी, खरी आवटी जाति॥
दुपहरी जेठ की शब माघ कैसी जिसमें थी भाती।
उसी ख़स रावटी में सोज़ से अब है जली जाती॥

[५२४]

तच्यौ आँच अति बिरह की, रह्यो प्रेम रस भींजि।
नैननि के मग जल बहै, हियो पसीजि पसीजि॥
पिघल बिछुरन की आँचों से सरस बन प्रेम के सर से।
जिगर की बर्फ़ घुल घुल बह रही है दीदए तर से॥

[५२५]

स्याम सुरति करि राधिका, तकति तरनिजा तीर ।
अँसुअनि करति तरोस के, खिनक खरौहौं नीर ॥
जमुन का तीर तक राधे सुरत कर श्याम सुन्दर की ।
किया करती हैं जल खारा बदौलत दीदए-तर की ॥

[५२६]

गोपिनि के अँसुअनि भरी, सदा असोस अपार ।
डगर डगर नै ह्वै रही, बगर बगर के बार ॥
न कुछ ब्रज देवियों की पूछिये, माधव ! दशा हम से ।
नदी सी बह रही हर हर क़दम पर चश्मे-पुरनम से ॥

[५२७]

बन बाटनि पिक बटपरा, तकि बिरहिनि मत मैन ।
कुहौ कुहौ कहि कहि उठै, करि करि राते नैन ॥
अतन को साथ लै लख विरहनी ब्रजराज बिन मधुबन ।
कुहू कहि कहि के रँग राते नयन करता है पिक रहज़न ॥

[५२८]

दिस दिस कुसुमिति देखियत, उपवन बिपिन समाज ।
मनो बियोगिनि कौ किये, सरपंजर ऋतुराज ॥
चमन बन खिल रहे गुल हाय रंगारंग से यकसर ।
बनाया है बियोगिन के लिए ऋतुराज सरपंजर ॥

[५२९]

हिये औरि सी ह्वै गई, टली औधि के नाम ।
दूजे कर डारी खरी, बौरी बौरे आम ॥
अवध आवन की टलते सुन थी इक तौ खुद ही दीवानी ।
फिर इसपर आम बौरे देखकर वह और बौरानी ॥

[५३०]

मौ यह ऐसोई समौ, जहां सुखद दुख देत।
चैत चांद की चांदनी, डारति किये अचेत॥
मुफ़र्रह थे जो, मूज़ी कर दिये दौरे सितमगर ने।
अचेत अब चैत की यह चाँदनी चित को लगी करने॥

[५३१]

गनती गनिबे तें रहे, छत हूं अछत समान।
अब आलि ये तिथि औम लौं, परे रहौ तन प्रान॥
तेरा हौना न हौना क्या, नहीं खेला है जीवन में।
पड़ी ऐ जान रह बेकार छुततिथि की तरह तन में॥

[५३२]

जाति मरी बिछुरति घरी, जल सफरी की रीति।
छिन छिन होति खरी खरी, अरी जरी यह प्रीति॥
घड़ी भर भी बिछुरने से ये मछली सा है तड़पाए।
खरी होती है छिन छिन उफ़ मुहब्बत भाड़ में जाए॥

[५३३]

मार सुमार करी खरी, मरी मरीहि न मारि।
सींचि गुलाब घरी घरी, अरी बरीहि न बारि॥
सितमगर मार ने मारा मरी को, अब तू मत मारै।
गुलाब अब सींच सींच इसपर बरी को आह! क्यों बारै॥

[५३४]

रह्यौ ऐंचि अंत न लह्यौ, अवधि दुसासन बीर।
आली बाढ़त बिरह ज्यौं, पंचाली कौ चीर॥
रहा है खैंच दुःशासन अवध बे इन्तिहा आली।
बिरह बढ़ही रहा है पर मिसाले चीर पंचाली॥

[५३५]

बिरह बिथा जल परस बिनु, बसियत मो हिय ताल ।
कछु जानत जलथंभ बिधि, दुरजोधन लौं लाल ॥
बिला महसूस आबे हिज्र बस्ते हो ग़दीरे (तालाब) दिल ।
मगर हो इन्सिदादे-आब में कुरुराज साँ कामिल ॥

[५३६]

सोवति सुपने स्याम घन, हिलि मिलि हरति बियोग ।
तबहीं टरि कितहूं गई, नींदौ नींदन जोग ॥
हरी हर ही रहे थे दर्दे फ़ुरक़त ख़्वाब में हिलमिल ।
गई इतने में टल उफ़ नींद पापिन नींदने काबिल ॥

[५३७]

पिय बिछुरन कौ दुसह दुख, हरष जात प्यौसाल ।
दुरजोधन लौं देखियत, तजत प्रान यह बाल ॥
खुशी नैहर के ज़ाने की, पिया बिछुरन का भी ग़म है ।
है दुबिधा मिस्ल दुरजोधन निकलता बाल का दम है ॥

[५३८]

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेस लजात ।
कहिहै सब तेरो हियौ, मेरे हिय की बात ॥
लिखा जाता नहीं काग़ज़ पै, कहते शर्म ने घेरा ।
कहैगा आप का दिल आप से कुल हाल दिल मेरा ॥

[५३९]

बिरह बिकल बिनु हीं लिखी, पाती दई पठाय ।
आँक बिहीनी यौं सुचित, सूने बाँचत जाय ॥
बिरह बेहोश मेहजूरा ने भेजी बिन लिखी पाती ।
बिला हरफों के बेदिल को है लिक्खी सी नजर आती ॥

[५४०]

रँग राती राते हिये, प्रीतम लिखी बनाय।
पाती काती बिरह की, छाती रही लगाय॥
लिखी रंगीन काग़ज़ पर प्रिये प्रीतम, बना पाती।
समझ सफ्फ़ाक-हिजराँ रहगई पाती लगा छाती॥

[५४१]

तर झुरसी ऊपर गरी, कज्जल जल छिरिकाय।
पिय पाती बिनहीं लिखी, बाँची बिरह बलाय॥
तले झुलसी गली ऊपर से कज्जल जल से छिड़काई।
पिया पाती में बिन लिक्खी पढ़ी तकलीफ तनहाई॥

[५४२]

कर लै चूमि चढ़ाय सिर, उर लगाय भुज भेंटि।
लहि पाती पिय की तिया, बाँचति धरति समेटि॥
चढ़ा सिर, हाथ लै, छाती लगा, भुज भेंट अँगड़ाती।
कभी पढ़ती कभी धरती है तह कर फिर पिया पाती॥

[५४३]

मृग नैनी दृग के फरक, उर उछाह तन फूल।
बिनही पिय आगम उमँगि, पलटन लगी दुकूल॥
भड़कते आँख आहू चश्म के तन मन न सुख थोड़ा।
पिया के आगमन बिन ही बदलने लग गई जोड़ा॥

[५४४]

बाम बाहु फरकत मिलै, जौ हरि जीवन मूर।
तौ तोंहीं सों भेटिहौं, राखि दाहिनी दूर॥
फड़कते हाथ बाएँ जो मिलें प्रीतम पिया प्यारे।
तौ भेटूंगी तुझी से, दाहिने रख दूर गम सारे॥

[५४५]

कियो सयानी सखिन सों, नहिं सयान यह मूल ।
दुरै दुराई फूल लौं, क्यौं पिय आगम फूल ॥
परीरू हम से बे पर की उड़ा तुमने जो ये कद की ।
छिपै क्यों फूल सी ये फूल, प्यारी ! पीके आमद की ॥

[५४६]

आयो मीत बिदेस तैं, काहू कह्यौ पुकारि ।
सुनि हुलसी बिहँसी हँसी, दोऊ दुहुनि निहारि ॥
पिया परदेश से आए ? कोई "हाँ" कह पुकारा है ।
ये सुन हुलसी-हँसी-विहँसी, किया बाहम इशारा है ॥

[५४७]

मलिन देह बेई बसन, मलिन बिरह के रूप ।
पिय आगम औरै चढ़ी, आनन ओप अनूप ॥
मलिन मन औ वही कपड़े विरह का रूप भी धारे ।
छटा अनुपम छई मुख पर, ये सुन "आए पिया प्यारे" ॥

[५४८]

कहि पठई जिय भावती, पिय आवन की बात ।
फूली आँगन में फिरै, आँग न आँगि समात ॥
पिया प्यारे ने कह भेजी कि अब हम जल्द आते हैं ।
फिरै फूली सी अंगन में न अँग अँग में समाते हैं ॥

[५४९]

रहे बरोठे में मिलत, पिय प्रानानि के ईसु ।
आवत आवत की भई, बिधि की घरी घरी सु ॥
विज़ीटिंग-रूम में हिल मिल मिले मुझसे वो रँग-राते ।
हुई महसूस विधि की सी घड़ी वो आते ही आते ॥

[५५०]

जदपि तेज रोहाल बल, पलकौ लगी न बार।
तउ ग्वैंड़ो घर को भयो, पैंड़ो कोस हजार॥
समन्दे-बाद-पा पर, गो नहीं आते लगी देरी।
हुई देहली मगर मालूम घर की मिस्ल जग फेरी॥

[५५१]

बिछुरे जिये सकोच यह, बोलत बनै न बैन।
दोऊ दौरि लगे हिये, किये निचौहैं नैन॥
जिये बिछुरन में भी संकोच से कुछ कह नहीं सकते।
लगे उर दौड़ दोनों जुर, निचौहें नैन हैं तकते॥

[५५२]

ज्यों ज्यों पावक लपट सी, तिय हिय सों लपटाति।
त्यों त्यों छुई गुलाब सों, छतियां अति सियराति॥
लपक पावक लपट सी ज्योंही सीने से है लपटाती।
जुड़ाती त्यों ही अर्क़ गुल से छिड़की सी है वह छाती॥

[५५३]

पीठि दिये ही नेकु मुरि कर घूँघट पट टारि।
भरि गुलाल की मूठ सों, गई मूठि सी मारि॥
ज़रा मुड़कर, दिये ही पीठ, कुछ मुख से हटा घूंघट।
गुलाली मूठ मारी मूठ सी, फिर हट गई झट पट॥

[५५४]

दियो जु पिय लखि चखन मैं, खेलत फागु खियाल।
बाढ़त हूँ अति पीर सु न, काढ़त बनत गुलाल॥
पिया ने लख के चख चंचल जो फाग अनुराग से खेली।
न काढ़े पीर बढते भी गुलाल आँखों से अलबेली॥

[५५५]

छुटत मुठी सँग ही छुटै, लोकलाज कुल चाल ।

लगे दुहुनि इक बेर ही, चल चित नैन गुलाल ॥

तरीक़े ख़ानदाँ, शर्मे जहाँ, यक मुश्त ही छूटे ।

गुलालो चश्मोदिल के साथही लगते मज़े लूटे ॥

[५५६]

जु ज्यों उझकि झांपति बदन, झुकति बिहँसि सतरात ।

तु त्यों गुलाल मुठी मुठी, झझकावत पिय जात ॥

विहँस उर झुक झपक मुख झाँपती है वो उझक ज्यों ज्यों ।

गुलाली मूठ मुट्ठी से रहे झिझका पिया त्यों त्यों ॥

[५५७]

रस भिजये दोऊ दुहुनि, तऊ ठिक रहैं टरैं न ।

छबि सों छिरकत प्रेम रँग, भरि पिचकारी नैन ॥

हुए शरबोर रस रंगों नहीं हटते पिया प्यारी ।

रहे छबि छक, छिड़क फिर प्रेम रँग से नैन पिचकारी ॥

[५५८]

गिरे कंप कछु कछु रहे कर पसीजि लपटाय ।

लीनी मूँठि गुलाल भरि, छुटत झुठी ह्वै जाय ॥

गिरी कुछ कम्प से कुछ कुछ लपट चिपटी पसीजे कर ।

है छुटते झूठ हो जाती गुलालों मूठ वह भर भर ॥

[५५९]

ज्यों ज्यों पट झटकति हठति, हँसति नचावति नैन ।

त्यों त्यों निपट उदार हू, फगुआ देत बनै न ॥

नचाकर नैन हँस पट की झटक से रंग है छनता ।

बहुत फ़य्याज़ हैं, फगुआ मगर देते नहीं बनता ॥

[५६०]

झुकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधुरी गंध।
ठौर ठौर झूमत झपत, भौंर भौंर मधु अंध॥
छके मकरंद रस पी पी मधुप मधु अंध मद-माते।
मुअत्तिर आम मौरों के हैं घौरों घिर के झुक जाते॥

[५६१]

यह बसंत न खरी गरम, अरी न सीतल बात।
कहि क्यों प्रगटे देखिये, पुलक पसीजे गात॥
न गर्मी है न सर्दी है बसंत अब चारसू छाया।
तेरे तन पर खड़े रोंगटे, पसीना क्यों झलक आया॥

[५६२]

फिरि घर को नूतन पथिक, चले चकित चित भागि।
फूल्यो देखि पलास बन, समुहें समुझि दवागि॥
नये रहरो पलट घर को चकित उलटे क़दम भागे।
खिले टेसू के बन, समझे लगी है आग इक आगे॥

[५६३]

अंत मरैंगे चलि जरैं, चढ़ि पलास की डार।
फिरि न मरै मिलि हैं अली, ये निरधूम अँगार॥
चलें, चढ़ कर जलें टेसू पै आखिर मौत है, बारे।
मिलेंगे फिर न वादे मर्ग ये बेदूद अंगारे॥

[५६४]

नाहिन ये पावक प्रबल, लुवैं चलत चहुँ पास।
मानहुँ बिरह बसंत के, ग्रीषम लेत उसास॥
नहीं लू चारसू झकझोर ग्रीषम में ये चलती है।
ज़े हिज्रे फस्ल-गुल ये आह गरमा से निकलती है॥

[५६५]

कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोबन सो कियो, दीरघ दाघ निदाघ ॥
ग़िज़ालो शेर, मोरो मार, यकजा बसते हैं बाहम।
तपोबन गरमिये आतिशफ़िशां ने कर दिया आलम ॥

[५६६]

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन तन मांह।
निरखि दुपहरी जेठ की, छाहौं चाहत छांह ॥
सघन बन खानएतन में दबक कर जा छुपाया है।
दुपहरी जेठ की लख चाहती छाया भी छाया है ॥

[५६७]

तिय तरसौंहें मन किये, करि सरसौंहें नेह।
धर परसौंहे ह्वै रहे, झर बरसौंहे मेह ॥
हुई सर सब्ज़ उल्फ़त, डब डबाये अश्क चश्मेतर।
नई काली घटा उनई छई झुक झूम कर छत पर ॥

[५६८]

पावस सघन अँधारि में, रह्यो भेद नहिं आन।
रात द्यौस जान्यौ परत, लखि चकई चकवान ॥
नहीं लैलो निहार अब अब्रतीरः में नजर आते।
तमीज़ इक जुफ्त से सुरखाब ही के हैं किए जाते ॥

[५६९]

छिनक चलति ठठकति छिनक, भुज प्रीतम गर डारि।
चढ़ी अटा देखति घटा, बिज्जु-छटा सी नारि ॥
दिए गलबाँह प्रीतम चल ठुमक छिन पैर धरती है।
अटा विज्जुच्छटा चढ़ घन-अटा की सैर करती है ॥

[५७०]

पावक झर तें मेह झर, दाहक दुसह विशेष ।
दहै देह वाके परस, याहि दृगनि ही देख ॥
मुहर्रक़ आग की झर से बहुत कुछ मेह की झर है ।
ये छूकर तन जलाती है वो देखे ही मुयस्सर है ॥

[५७१]

कुढँग कोप तजि रँग रली, करति जुवति जग जोय ।
पावस बात न गूढ़ यह, बूढ़न हू रँग होय ॥
रँगीली रंगरलियाँ कर रहीं, चल छोड़ खुश्बीनी ।
खुली ये बात पावस में हो बूढ़ों को भी रँगीनी ॥

[५७२]

धुरवा होंहिं न आलि यहै, धुआँ धरनि चहुँ कोद ।
जारत आवत जगत कौं, पावस प्रथम पयोद ॥
नहीं ये अब्रतीरा है धुआँ घेरे हुए जल थल ।
लगाते आग आते हैं चढ़े आषाढ़ के बादल ॥

[५७३]

हठ न हठीली कर सकै, यह पावस ऋतु पाय ।
आन गाँठ घुटि जाति ज्यों, मान गाँठ छुटि जाय ॥
हठीली भी नहीं हठ मौसमे बारिश में कर पाती ।
है घुटती आन ग्रह पर मान ग्रह है साफ़ छुट जाती ॥

[५७४]

वेई चिरजीवी अमर, निधरक फिरौ कहाय ।
छिन बिछुरैं जिनकी नहीं, पावस आयु सिराय ॥
वही इन्साँ हैं आलम में, दराज़उम्र और लाफ़ानी ।
बिछुड़ते जिनकी बरषा में न उम्र आख़िर हुई जानी ॥

[५७५]

अब तजिं नाव उपाव कौ, आयो सावन मास।
खेल न रहिबो खेम सों, कैम कुसुम की बास॥
लगे सावन सुहावन छोड़ दे तदबीर अब सारी।
क़दम की बू से है अब खेल, तज रस केल की बारी॥

[५७६]

बामा भामा कामिनी, कहि बोलो प्रानेस।
प्यारी कहत लजात नहिं, पावस चलत बिदेस॥
कहा करते हो बामा भामिनी कामिन प्रिया प्यारी।
चले परदेस पावस में ज़रा सोचौ तो बनवारी॥

[५७७]

उठि ठकठक एतो कहा, पावस के अभिसार।
देखि परी यौं जानिबी, दामिनि घन अँधियार॥
ज़रूरत क्या है, ऐ अभिसारके! पावस में ठकठक की।
सघन घन बिच समझ दामिन सी करलेंगे दवा शक की॥

[५७८]

फिरि सुधि दै सुधि द्याय प्यौ, यह निरदई निरास।
नई नई बहुरौं दई, दई उसास उसास॥
निरासी निर्दई ने फिर दिलाकर याद गरमाया।
चढ़ी फिर साँस ऊपर को नया इक शोक फिर छाया॥

[५७९]

घन घेरो छुटि गौ हरषि, चली चहूं दिसि राह।
कियो सुचैनो आय जग, सरद सूर नर नाह॥
लगे चलने मुसाफ़िर उठ गया अब जग से घन घेरा।
जरी सुलतां-शरद ने आ रिफाहे आम फिर फेरा॥

[५८०]

ज्यों ज्यों बढ़ति बिभावरी, त्यों त्यों बढ़त अनंत।
ओक ओक सब लोक सुख, कोक सोक हेमंत॥
बढ़ा करते हैं शब के साथ ही हिमवंत में हरदम।
ग़मे दूरीय सुरख़ाबो हरिक घर शाद्रिए आलम॥

[५८१]

कियै सबै जग कामबस, जीते जिते अजेय।
कुसुम सरहि सर धनुष कर, अगहन गहन न देय॥
असीरुल फत्ह भी जीते हुआ इशरत—परस्त आलम।
कुसुमसर का किया अगहन ने है तीरो कमाँ पुरख़म॥

[५८२]

मिलि बिहरत बिछुरत मरत, दंपति अति रस लीन॥
नूतन बिधि हेमंत ऋतु, जगत जुराफा कीन॥
बिचरते मुत्तफ़िक, मरते बिछुरते दोनों हैं हरदम।
नया हिमवन्त नूतन विध जुराफा कर दिया आलम॥

[५८३]

आवत जात न जानिये, तेजहि तजि सिअरान।
घरहि जवाँई लौं घट्यौ, खरौ पूस दिन मान॥
पता आने न जाने का न मुख की रोशनाई का।
घटा है पूस का दिन, मान ज्यों ख़ाना जमाई का॥

[५८४]

लगत सुभग सीतल किरन, निसि सुख दिन अवगाहि।
माह ससी भ्रम सूर त्यौं, रही चकोरी चाहि॥
खुनक किरनों से निशि का सुख वो दिन में ही है पा सकती।
चकोरी चाँद के धोखे है सूरज माह का तकती॥

[५८५]

तपन तेज तापन तपन, अतुल तुलाई माह ॥
सिसिर सीत किहुँ ना मिटै, बिन लपटै तिय नाह ॥
तपन तेज़ी, भरी पल्ली, अँगीठी आग की धुकती।
शिशिर की शीत बिन लपटे पिया के बुझ नहीं सकती ॥

[५८६]

रहि न सकी सब जगत में, सिसिर सीत के त्रास ।
गरमी भाजि गढ़वै भई, तिय कुच अचल मवास ॥
न जग में रह सकी गरमी शिशिर के सीत की मारी।
छिपी जा क़िलअए-पिस्तान-लाज़ुम्बाँ में बेचारी ॥

[५८७]

द्वैज सुधादीधिति कला, वह लखि डीठि लगाय ।
मनो अकास अगस्तिआ, एकै कली लखाय ॥
हिलाले दूज है रश्के क़मर तू देख सनए-रब।
खिला है एकही गुंचा, अगस्ते-अर्स में इमशब ॥

[५८८]

धनि यह द्वैज जहां लख्यौ, तज्यौ दृगनि दुखदंद ।
तो भागनि पूरब उग्यौ, अहो अपूरब चन्द ॥
ज़हे यह दोज जिससे इश्तयाक़े-आरज़ू निकला।
तेरे तालअ महे नो शर्क़ से, ऐ माहरू ! निकला ॥

[५८९]

जौह्न नहीं यह तम बहै, किये जु जगत निकेत ।
होत उदै ससि के भयौ, मानहु ससिहर सेत ॥
नही यह चाँदनी, ये है वा आलमगीर तारीकी।
तुलूए-माह से डर कर सियाही पड़ गई फीकी ॥

[५९०]

रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधु नीर।

मंद मंद आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर॥

मधुर घंटावली बजती है मधुजल मद बहाती है।

नसीमें-कुंज कुंजर सी चली मधुबन से आती है॥

[५९१]

रही रुकी केहूं सु चलि, आधिक राति पधारि।

हरति ताप सब द्यौस कौ, उर लगि यार बयारि॥

रुकी रह कर कहीं फिर निस्फ़ शब फेरी सी करती है।

बयार इक यार सी सीने से लग दिन ताप हरती है॥

[५९२]

चुवत स्वेद मकरंद कन, तरु तरु तर विरमाय।

आवत दक्षिण देसतें, थक्यौ बटोही बाय॥

मुअर्रिक़ ख़िरद्ए-गुल से शजर तर छाँह बिलमाता।

नसीमे बेह का रहरो थका दक्षिण से है आता॥

[५९३]

लपटी पुहुप पराग पट, सनी स्वेद मकरंद।

आवति नारि नबोढ़ लौं, सुखद वायु गति मंद॥

ज़रे गुल के लपट पट अर्क़ गुल से चहचहाती है।

नई दुलहिन नसीमे जाँ फिज़ा दम ख़म से आती है॥

[५९४]

रुक्यौ सांकरे कुंजमग, करत झांकि झुकुराति।

मंद मंद मारुत तुरंग, खूदनि आवत जाति॥

रुका है साँकरी सी कुंज मग में झाँझ झुझराता।

समंदे बाद है क्या मंद गति से खूँदता आता॥

[५६५]

कहति न देवर की कुबति, कुलतिय कलह डराति ।
पंजर गत मंजार ढ़िग, सुक लौं सूकति जाति ॥
कलह के डर नहीं कहती है देवर की कुमत ग़मगी ।
बरंगे—तूतिये—क़ैदे अज़ाबे गुरबए मिसकीं ॥

[५९६]

पहुँला हार हिये लसै, सन की बेंदी भाल ।
राखति खेत खरी खरी, खरे उरोजनि बाल ॥
है माथे सन की बेंदी, माल पहुला की सुहाती है ।
खड़े पिस्ताँ खड़ी है खेत में खेती रखाती है ॥

[५९७]

गोरी गदकारी परैं, हँसत कपोलनि गाड़ ।
कैसी लसति गँवारि यह, सुनकिरवा की आड़ ॥
लगाये आड़ सुनकिरवा की कैसी खिल रही प्यारी ।
शिकन गालों पड़ें, हँसते झुकै मदमस्त गदकारी ॥

[५९८]

गदराने तन गोरटी, ऐपन आड़ लिलार ॥
हूठ्यौ दै इठलाय दृग, करै गँवारि सुमार ॥
बदन गदरा, लगाये गोरटी क्या आड़ ऐपन की ।
खड़ी इठलाय धर कर कट अनीली नोक जोबन की ॥

[५९९]

सुनि पग धुनि चितई इतैं, न्हात दियेई पीठि ।
चकी झुकी सकुची डरी, हँसी लजीसी डीठि ॥
चरन धुन सुन दिए ही पींठ मुड़ अस्नान बिच हेरी ।
चकित सी, झुक, डरी, सकुची, लजीली डीठ हँस फेरी ॥

[६००]

नहिं अन्हाय नहिं जाय घर, चित चुहुट्यौ तकि तीर ॥
परसि फुरहुरी लै फिरति, बिहसति धसति न नीर ॥
नहाती है न घर जाती निरख तट नेह फँसती है।
फुरहरी लेके फिर फिरती बिहँसती जल न धँसती है ॥

[६०१]

मुँह पखारि मुड़हर भिजै, सीस सजल कर छ्वाय ।
मौर उचैं घूंटै नवै, नारि सरोवर न्हाय ॥
सफा मुख कर, छिड़क मुडहर, सजल हाथों से सर छूकर ।
उठा गर्दन, झुका ज़ानू नहाती सर में है दिलबर ॥

[६०२]

बिहंसाति सकुचाति सी हिये, कुच आंचर बिचबांहि ।
भीजे पट तट कौं चली, न्हाय सरोवर माँहि ॥
शिगुफ्ता शर्म खा, दिल में छुपाकर बाँह कुच अंचल ।
लपट गीले से पट अस्नान कर तट को चली चंचल ॥

[६०३]

मुँह धोवति एँड़ी घँसाति, हँसाति अनँगवत तीर ।
धँसति न इन्दीवर नयनि, कालिंदी के नीर ॥
लगाती देर मुँह धोकर, घिस-एँड़ी खूब हँसती है ।
कमल लोचन! जमुन के श्याम जल में क्यों न धँसती है ? ॥

[६०४]

न्हाय पहिरि पट डटि कियौ, बेंदी मिस परनाम ।
दृग चलाय घर कौं चली, बिदा किये घनस्याम ॥
नहा, पट डट, चतुर की, बंदगी बेंदी बहाने से ।
चला आँखें चली घर, मुत्तिला कर हरि को जाने से ॥

[६०५]

चितवति जितवति हित हिये, किये तिरीछे नैन।
भीजे तन दोऊ कँपत, क्योंहूँ जप निवरै न॥
असर दुज़दीदः नज़रों का दिलों पर कुछ करता है।
हैं दोनों कँप रहे तौ भी नहीं ये जप निबरता है॥

[६०६]

दृग थिरकौंहे अधखुले, देह थकौंहें हार।
सुरत सुखित सी देखिये, दुखित गरभ के भार॥
थिरकते अधखुले नैना थके अँग कण्ठ मणिमाला।
खुशी रति रंग की झलकै, दुखी गो गर्भिनी बाला॥

[६०७]

ज्यों कर त्यों चुहटी चलै, ज्यों चुहटी त्यों नारि।
छबि सों गतिसी ले चलै, चातुरि कातनिहारि॥
चलै ज्यों हाथ त्यों चुटकी चटक के साथ मतवाली।
अदा से लै रही गति सी ये चातुर कातनेवाली॥

[६०८]

अहे दहेड़ी जिन धरै, जिनि तू लेहि उतारि।
नीके है छीके छुवै, ऐसे ही रहि नारि॥
दहेड़ी अब न धर ऊपर, उतार इसको न, रस बोरी!।
छुए छींके तू ऐसी ही खड़ी रह, ग्वालिनी गोरी॥

[६०९]

देवर फूल हने जु हठि, उठे हरखि अँग फूलि।
हँसी करति औषध सखिनु, देह ददोरनि भूलि॥
खुशी से अंग फूल उठे जो मारा फूल हँस लाला।
ददोरों की दवा भूले से करतेहँस पड़ी बाला॥

[६१०]

तिय निज हिय जु लगी चलत, पिय नख रेख खरोट।
सूखन देत न सरसई, खोंटि खोंटि खत खोट ॥
खिराशे-नाखुने-नायक लगी सीने पै रँग लाने।
नहीं ख़त खोंट खोंट उसकी तरी देती है कुम्हलाने ॥

[६११]

पाऱ्यो सोर सुहाग को, इन बिनुहीं पिय-नेह।
उनदौंही अँखिया ककै, कै अलसौंहीं देह ॥
पिया के प्रेम ही बिन यह सुहागिल बन है इतराती।
उनीदी सी बना अँखियाँ दिखा अंगड़ाइ लै छाती ॥

[६१२]

बहु धन लै आहिसान कै, पारो देत सराहि।
वैद बधू हँसि भेद सों, रही नाह मुख चाहि ॥
गराँ अहसाँ जता, सीमाब दे, अज़हद सतायश की।
मआलिज की हँसी बीबी, खबर कर आज़मायश की ॥

[६१३]

ऊंचे चितै सराहियत, गिरह कबूतर लेत।
दृग झलकत मुलकत बदन, तन पुलकित किहि हेत ॥
खड़ी ऊपर को तकती है कबूतर की गिरहबाज़ी।
झलक आँखों पुलक तन में ये क्यों मुख पर ललक ताज़ी ॥

[६१४]

कारे बरन डरावने, कत आवत इहि गेह।
कइ बा लख्यो सखी लखे, लगै थरहरी देह ॥
सियह-फ़ामो, मुखौवफ़ क्यों यहां हरवक़्त आता है।
है देखा बारहा इसको मगर तन थरथराता है ॥

[६१५]

औरि सवै हरखी फिरैं, गावति भरी उछाह।
तुंहीं बहू बिलखी फिरै, क्यों देवर के व्याह॥
खिली हैं और सब हर इक रँगीले गीत हैं गाती।
बहू, क्या बात, देवर की तुझे शादी नहीं भाती ?॥

[६१६]

रवि बन्दौ कर जोरि कै, सुनत स्याम के बैन।
भये हंसौहैं सबनि के अति अनखौहैं नैन॥
" करौ कर जोर सूरज से विनय " सुन श्याम की बानी।
कुसुम सी खिल गई अँखियाँ जो रिस-रस सेथी कुसमानी॥

[६१७]

तन्त्री नाद कवित्व रस, सरस राग रस रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग॥
बहारे हुस्न मौसीक़ी, मज़ाके शैर मस्ताना।
नहीं डूबे सो डूबे औ तरे डूबे जो फरज़ाना॥

[६१८]

गिरिते ऊंचे रसिक मन, बूड़े जहां हजार।
वहै सदा पसु नरनि के, प्रेम पयोधि पगार॥
हुए हैं गर्क जिसमें सैकड़ों कोहे दिले मस्ताँ।
समझते हैं सदा पायाब बहरे-इश्क को हैवाँ॥

[६१९]

चटक न छाड़त घटत हूं, सज्जन नेह गँभीर।
फीकौ परै न बरु घटै, रँग्यौ चोल रँग चीर॥
सुजन महरे मतीं फीकी नहीं पड़ती न कुम्हलाती।
चटक रँग चोल चोली की फटे पर भी नहीं जाती॥

[६२०]

संपति केस सुदेस नर, बढ़त दुहुंनि इक बानि।
बिभव सतर कुच नीच नर, नरम बिभौ की हानि॥
उरूज इन्सानो गैसू की शराफत को बढ़ाता है।
अकड़ते कुच कमीने हैं अदम दोनों को ढाता है॥

[६२१]

न ये बिससियहि लखि नये, दुर्जन दुसह सुभाव।
आंटे परि प्राननि हरैं, काँटे लों लगि पाव॥
भरोसा कीजिये मत नेशज़न की इनक्सिारी पर।
बरँगे ख़ार लाता रंग है तलुवों तले दब कर॥

[६२२]

जेती संपति कृपन कों, तेती सूमति जोर।
बढ़त जात ज्यों ज्यों उरज, त्यों त्यों होत कठोर॥
बढ़ा करता है जोरे मुमसिकी मुमसिक के बढ़ने से।
हैं लेते तंग पिस्ताँ ज्यों शबाबी रंग चढ़ने से॥

[६२३]

नीच हिये हुलसत रहैं, गहे गेंद के पोत।
ज्यों ज्यों माथे मारिये, तेतो ऊंचौ होत॥
कमीना सीजः डट फुटबाल के फैशन पे चलता है।
जो सिर पर लात मारे और ऊपर को उछलता है॥

[६२४]

कबौं न ओछे नरनि सों, सरै बड़े कौ क़ाम।
मढ्यौ दमामो जात क्यों, कहि चूहे के चाम॥
बड़ों के काम करने की नहीं छोटों को कुछ यारा।
नहीं सौ मूस के चमड़े भी मढ़ सकते हैं नक्क़ारा॥

[६२५]

कोरि जतन कोऊ करो, परै न प्रकृतिहि बीच ।
नल बल जल ऊँचै चढ़ै, तऊ नीच को नीच ॥
रियल नेचर है जो जिसकी उसी पर वो ठहरता है ।
चढ़ै नल बल जो जल ऊंचे तौ नीचे ही को गिरता है ॥

[६२६]

लटुआ लौं प्रभु कर गहै, निगुनी गुन लपटाय ।
वहै गुनी करतें छुटै, निगुनी यै है जाय ॥
गुनी बन मिस्ल लट्टू हाथ पर प्रभु के मजा लूटा ।
गुनी भी हो गया निगुनी कमल कर से वो ज्यों छूटा ॥

[६२७]

चलत पाय निगुनी गुनी, धन मनि मुक्ता माल ।
भेट होत जयसाह सों, भाग चाहियत भाल ॥
हुनरवर, बेहुनर, चलते हैं पाकर लाल गौहर ज़र ।
फ़क़त जैशाह के मिलने को लालअ़ चाहिए यावर ॥

[६२८]

यों दल काढ़े बलक ते, तैं जैसाह भुआल ।
उदर अघासुर के परे, ज्यों हरि गाय गुआल ॥
बलख से यों निकाला आपने जैशाह जी लश्कर ।
किए गो ग्वाल ज्यों बतने-अघासुर से, हरी-ज़ाहर ॥

[६२९]

रहति न रन जैसाह-मुख, लखि लाखन की फौज ।
जांचि निराखर हू चलै, लै लाखनि की मौज ॥
नहीं जैशाह आगे फौज लाखों की ठहरती है ।
महज़ बे आब हो पर मौज दामन दुर से भरती है ॥

[६३०]

प्रतिविम्बित जैसाह दुति, दीपति दर्पन धाम ।
सब जग जीतन कौं कर्‌यो, कायव्यूह मनु काम ॥
महल में शीशः के जैसाह का परतो है अक्स-अफगन ।
बराये-फत्‍ह-आलम, हुस्न बन आया है फौजे तन ॥

[६३१]

अनी बड़ी उमड़ी लखें, असि बाहक भट भूप ।
मंगल करि मान्यौ हिये, भौ मुह मंगल रूप ॥
मुहर्‌रिबे सैफ़ ज़न, मर्दों का उमड़ा देख कर दंगल ।
हुए मानिन्द मंगल सुर्ख़रू मन मान कर मंगल ॥

[६३२]

दुसह दुराज प्रजानि कौं, क्यों न बढ़ै अति दंद ।
अधिक अंधेरो जग करत, मिलि मावस रवि चंद ॥
जमैयत एक जा दो शाह की है वज्ह वीरानी ।
अमावस करती है मिल माहो शारिक की जहांबानी ॥

[६३३]

बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमान ।
भलो भलो करि छोड़िये, खोटे ग्रह जप दान ॥
है दस्तूरे परस्तिश खास अहले फितनओ शर का ।
भले को कह भलाँ छोड़ें व पूजन नहस अख़्तर का ॥

[६३४]

कहै वहै सो स्रुति सम्रृति, वहै सयाने लोग ।
तीनि दबावत निसकही, पातक राजा रोग ॥
मकूला आक़िलों का है यही वेदादि गाते हैं ।
गुनह राजा मरज़ ये ज़ेरदस्तों को दबाते हैं ॥

[६३५]

बड़े न हूजै गुननि बिनु, विरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनौ गढ़्यौ न जाय॥
बिला सीरत मुसम्मा बन कोई हरगिज़ नहीं बढ़ता।
धतूरे से कनक कहते हैं पर ज़ेवर नहीं गढ़ता॥

[६३६]

गुनी गुनी सब कोउ कहै, निगुनी गुनी न होत।
सुन्यो कहूं तरु अर्क तें, अर्क समान उदोत॥
कहें गो बेहुनर को बाहुनर, कब बोल बाला है।
किसी ने अर्क सा क्या अर्क में देखा उजाला है॥

[६३७]

नाह गरज नाहर गरज, बोलि सुनायो टेरि।
फँसी फौज के बंद विच, हँसी सबनि तन हेरि॥
जो गरजा नाह नाहर की गरज सुन, बोल की टेरी।
फँसापा क़ल्ब हीजा में नज़र हँस सब के रुख फेरी॥

[६३८]

संगति सुमति न पावहीं, परे कुमति के धन्ध।
राखौ मेलि कपूर में, हींग न होति सुगन्ध॥
मुत्रस्सर नेक़ सुहबत से नहीं होते कभी बदखू।
रखें काफ़ूर में भी हींग पर देती नहीं खुशबू॥

[६३९]

परतिय दोष पुरान सुनि, लखी मुलाकि सुख दानि।
कस करि राखी मिश्र हूं, मुंह आई मुसुक्यानि॥
"जिनाँ है मासियत" सुन यह कथा, हँस देख मुसक्याई।
मिसर के भी घुली मिसरी हँसी आठों से लौटाई॥

[६४०]

सबै हँसत करताल दै, नागरता के नाँव।
गयो गरब गुन को सबै, बसै गँवारे गाँव॥
उड़ाते मज़हका है नाम शहरीयत से दै ताली।
हुई क्या कोर दह में सरबरावर्दों की पामाली॥

[६४१]

फिरि फिरि बिलखी ह्वै लखति, फिरि फिरि लेति उसास।
सांई सिर कच सेत लौं, चूनत बित्यो कपास॥
वो भर भर सर्द आहें देख फिर फिर मुज़तरब ख़ातिर।
पिया के सेत बालों सा है चुनती पुंबए-आख़िर॥

[६४२]

नर की अरु नलनीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतो नीचो ह्वै चलै, ते तो ऊँचौ होइ॥
है इन्साँ और आबे नल की बिल्कुल एक सी हस्ती।
बलन्द उतनाही हो जितनी गवारा कर सकै पस्ती॥

[६४३]

बढ़त बढ़त संपति सलिल, मन सरोज बढ़ि जाय।
घटत घटत सुन फिर घटै, बरु समूल कुँभिलाय॥
कँवल, दिल, आब व दौलत की तरक़्क़ी से हैं बढ़जाते।
तनज़्ज़ुल पर नहीं घटते हैं गो जड़ से हैं कुम्हलाते॥

[६४४]

जौ चाहत चटक न घटै, मैलो होय न मित्त।
रज राजस न छुवाइये, नेह चीकने चित्त॥
मुकद्दर हो न हमदम चाहते हो कुछ चमक आए।
सनेही चीकने चित पर न रज राजस की छू जाए॥

[६४५]

अति अगाध अति औथरे, नदी कूप सर वाय।

सो ताको सागर तहां, जाकी प्यास बुझाय॥

बहुत गहरे व उथले हैं नदी तालाब औ नाले।

मुख़य्यर वेह है जो सेर कर दे चाहने वाले॥

[६४६]

मीत न नीति गलीत ह्वै, लै धरिये धन जोरि।

खाये खर्चे जौ जुरै, तो जोरिए करोरि॥

डियर! मिस्टेक है, क्या फायदा धन जोड़ जाने से।

बचाओ जो बचे लाखों, खरचने और खाने से॥

[६४७]

टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख जोति।

लसत रसोई के बगर, जगर मगर दुति होति॥

वा मुखपर जोत चटकीली वो टटकी सी धुली धोती।

रसोई पास फिरती है झमक जगमग से है होती॥

[६४८]

सोहत संग समान कों, इहै कहैं सब लोग।

पान पीक ओठन बनै, काजर नैनन जोग॥

है इश्के हमसरी ज़ेबा, यही कहते हैं दानिशवर।

है काजल आँख में मोज़ूं व सुरख़ी पान की लब पर॥

[६४९]

चित पितु मारक जोग गनि, भयो भएँ सुत सोग।

फिरि हुलस्यो जिय जोयसी, समुझ्यो जारज जोग॥

पिदरकुश जोग गुन तौलीद से पहिले तौ दुख माना।

मुनज्जिम फिर खिला दिल में जो इबनुज्ज़ारिया जाना॥

[६५०]

अरे परेखो को करै, तुहीं बिलोकि बिचारि।
किहिं नर किहिं सम राखिये, खरे बड़े परिवार॥
बढ़ै कुनबा तो कहिये कौन किस किस के परख जोहर।
किसे समझै कलाँ या खुर्द या किसको कहै हमसर॥

[६५१]

कनक कनक ते सौगुनों, मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात है, वह पाये बौराय॥
सुनरशी तर कनक से ये कनक क्यों कर न कहलाए।
उसे खाये से बौराए इसे पाए ही बौराए॥

[६५२]

ओठ उचै हाँसी भरी, दृग भौंहनि की चाल।
मो मन कहा न पी लियो, पियत तमाखू लाल॥
ज़रा कर लब को ऊँचा पुर तबस्सुम चश्मो हम अब्रू।
पिया क्या क्या न दिल मेरा पिया, पीने में तम्बाकू॥

[६५३]

बुरो बुराई जो तजै, तो चित खरो सँकात।
ज्यों निकलंक मयंक लखि, गनै लोग उतपात॥
बदी को तर्क करदे बद तो इसमें खौफ़ जानी है।
अगर बेदाग़ मह निकलै तो शामत की निशानी है॥

[६५४]

भाँवरि अन भाँवरि भरे, करौ कोटि बकवाद।
अपनी अपनी भाँति को, छुटै न सहज सवाद॥
ये अच्छा, वो बुरा कह, मग्ज़ को क्यों कर रहे पच्ची।
नहीं छुटती है तबई जो लगी जिसको लगन सच्ची॥

[६५५]

जिन दिन देखे वे सुमन, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब की, अपत कटीली डार॥
वो गुल देखे थे जब, बीती वो अब फस्ले बहारी है।
गुलाबों में रही अलि शाख़ अब पुरख़ारो आरी है।

[६५६]

इहि आसा अटक्यौ रहै, अलि गुलाब कें मूल।
ह्वै हैं बहुरि बसंत ऋतु, इन डारिन वे फूल॥
बईं उम्मेद ज़म्बूरे सियह गुलगूँ से हैं अटके।
बहार आये फिर इन शाखों शिगूफे होंगे वो लटके॥

[६५७]

सिरस कुसुम मँडरात अलि, न झुकि झपटि लपटात।
दरसत अति कुसुमारता, परसत मन न पत्यात॥
सिरस मँडरा रहा अलि झूम झुक गुल से न लिपटाता।
झलक अज़हद नज़ाकत दिल नहीं छूने को पतयाता॥

[६५८]

बहकि बड़ाई आपनी, कत राचति मति भूल।
बिन मधु मधुकर के हिये, गड़ै न गुड़हर फूल॥
बहक कर खुदसताई से तू क्यों भूला है, ऐ गाफ़िल।
हुआ ज़म्बूर गुड़हर फूल की रसचाट से घायल॥

[६५९]

जद्दपि पुराने बक तऊ, सरवर निपट कुचाल।
नये भये तु कहा भयो, ये मनहरन मराल॥
पुराने हैं ये माही ख्वार गो लेकिन कुचाली हैं।
नये हैं झील में ये हंस पर दिलचस्पो आली हैं॥

[६६०]

अरे हंस या नगर में, जैऔ आप बिचारि।
कागनि सौं जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिड़ारि॥
कहीं ऐसी जगह—ऐ हंस! आक़िल पैर धरते हैं।
निकाली जिनने कोयल, ज़ाग की जो क़द्र करते हैं॥

[६६१]

को कहि सकै बड़ेन सौं, लखै बड़ी ही भूल।
दीने दई गुलाब कौं, इनि डारानि ये फूल॥
बड़ों से कौन कह सकता है उनकी भूल लख भारी।
गुलाबों की ये शाख़ें, फूल वो कुदरत की बलिहारी॥

[६६२]

वे न इहां नागर बड़े, जिन आदर तें आब।
फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ, गँवई गांव गुलाब॥
नहीं शहरी यहां जो रंगो बू की कर सकें पहिचाँ।
तेरा खिलना न खिलना देह में है सुर्ख़ गुल इकसाँ॥

[६६३]

कर लै सूँघि सराहि कैं, रहे सबै गहि मौन।
गंधी अंध गुलाब कौ, गँवई गाँहक कौन॥
हथेली रख लगा नथनों से चुप साधी है कह फायक़।
यहां अत्तार इत्रेगुल का देह में कौन है शायक़॥

[६६४]

को छूट्यौ यह जाल परि, कत कुरंग अकुलाय।
ज्यौं ज्यौं सुरझि भज्यौ चहै, त्यौं त्यौं अरुझत जाय॥
छुटा इस जाल से कौन—ए हिरन क्यों तड़फड़ाता है।
सुलझना चाहता ज्यों ज्यों उभलता ही वो जाता है॥

[६६५]

पट पांखैं भख कांकरै, सफर परेई संग।
सुखी परेवा जगत में, एकै तुही बिहंग॥
खुराके संगरेज़ा, जुफ्त हमदम औ लिबासे पर।
कबूतर, बस तुही मसरूर है दुनिया में इक तायर॥

[६६६]

स्वारथ सुकृत न श्रम बृथा, देखि बिहंग बिचार।
बाज पराये पानि परि, तूं पच्छीहिं न मारि॥
न जाती मुनफ़अत, शुहरत, अबस मिहनत है ए शाहीं।
पराये हाथ पर मत तायरों को मार तू बदबीं॥

[६६७]

दिन दस आदर पाय कैं, करि लै आपु बखान।
जौ लौं काग सराघ पख, तौ लौं तौ सनमान॥
भले दस पाँच दिन करले कुलाग़ अपनी सनाख्वानी।
कनागत पक्ष है जबतक तभी तक है ये मेहमानी॥

[६६८]

मरत प्यास पिंजरा पर्यौ, सुवा समै के फेर।
आदर दै दै बोलियत, बायस बलि की बेर॥
समय के फेर तोता मर रहा पिंजरे में बिन पानी।
पए कागौर कौए को बुलाते हैं खुशअलहानी॥

[६६९]

जाकै एकौ एकहू, जग ब्यौसाय न कोय।
सो निदाघ फूलै फलै, आक डहडहौ होय॥
खबरगीर उसका है कोई न पानी है न साया है।
अकौवा जेठ में फूला फला क्या लहलहाया है॥

[६७०]

नहिं पावस ऋतुराज यह, सुनु तरबर मति भूल।
अपत भये बिन पायहैं, क्यौं नव दल फल फूल॥
नहीं बारिश, बसंत आया, दिया नाहक़ न जाएगा।
तू बेबरगी के बदले ए शजर फल फूल पाएगा॥

[६७१]

सीतलता रु सुगंध की, महिमा घटी न मूर।
पिनिसवारे ज्यौं तज्यौ, सोरा जानि कपूर॥
न क़द्रे खुशबूओ खुनकी न कीमत में कमी होगी।
तजै काफ़ूर को शोरा समझ पीनस का गर रोगी॥

[६७२]

गहै न नेकौ गुन-गरब, हँसै सकल संसार।
कुच उच पद लालच रहै, गरैं परैहूं हार॥
बउम्मेदे मुक़ामे आलिया पिस्ताँ जलजमाला।
गले का हार ठहराई गई गुन गर्व खो डाला॥

[६७३]

मूंड चढ़ायेऊं रहै, पर्‌यौ पीठ कच भार।
रह्यौ गरे परि राखिये, तऊ हिये पर हार॥
चढ़े सर पर पड़े रहते हैं पीछे संबुले मुश्कीं।
गले का हार है पर हार है सीने पै जेब आगीं॥

[६७४]

जौ सिर धरि महिमा मही, लहियत राजा राव।
प्रगटत जड़ता आपनी, मुकुट पहिरियत पाव॥
शहंशाहों की शौकत जो मुकुट सर चढ़ बढ़ाता है।
जो पहने कोई पैरों में तो हुम्क़ अपना जताता है॥

[६७५]

चले जाहु ह्यां को करै, हाथिनि कौ व्यौहार ।
नहिं जानत या पुर बसैं, धोबी औड़ कुँभार ॥
ख़रीदे कोन हाथी, रास्ता ले याँ से तू ऐ ख़र ।
नहीं क्या इल्म ?—बसते हैं यहाँ गिलकार औ गाज़र ॥

[६७६]

करि फुलेल कौ आचमन, मीठो कहत सराहि ।
रे गंधी मति अंध तूं, अतर दिखावत ताहि ॥
बरंगे आचमन जो रोग़ने गुल को है पीजाता ।
उसे क्या कोरदिल अत्तार इत्रे गुल है दिखलाता ॥

[६७७]

बिषम बृषादित की तृषा, जिये मतीरनि सोधि ।
अमित अपार अगाध जल, मारौ मूढ़ पयोधि ॥
जिये जो शिद्दते गरमा में तर तरबूज़ को खाकर ।
करेंगे मारवाड़ी बेह बेपायाँ को क्या पाकर ॥

[६७८]

जम-करि मुह तरहरि पर्‌यौ, यह धर हरि चितलाय ।
बिषै तृषा परिहरि अजौं, नरहरि के गुन गाय ॥
पड़ा फीले अजल के ज़ेर दन्दाँ तक निगह बानी ।
सुमिर नरहरि न हो अब तिशनए लज़्ज़ात नफ्सानी ॥

[६७९]

जगत जनायौ जिहि सकल, सो हरि जान्यौ नाहि ।
ज्यौं आँखिनि सब देखिये, आँखि न देखी जाहि ॥
जनाया जिसने ये आलम वो ख़ुद जाना नहीं जाता ।
हैं दीदे देखते सब, पर नहीं दीदा नज़र आता ॥

[६८०]

जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम ।
मन काँचै नाँचै वृथा, साँचै राँचै राम ॥
तिलक तसबीह छापों से जज़ा का मत हो मुतक़ाज़ी ।
है नामक़बूल खामी दिल की, हक़ तौ हक़ से है राज़ी ॥

[६८१]

यह जग काँचौ काँच सौ, मै समुझ्यौ निरधार ।
प्रतिबिम्बित लखिये जहाँ, एकै रूप अधार ॥
बिलाशक काँच सा कच्चा है ग़ाफ़िल ! ये जहाँ फानी ।
झलकता ला अदद रूपों में है इक रूप रब्बानी ॥

[६८२]

बुधि अनुमान प्रमान श्रुति, किये नीठि ठहराय ।
सूछम गति पर ब्रह्म की, अलख लखी नहिं जाय ॥
क़िया है वाक तर्कों वेद ने साबित ज़बरदस्ती ।
कमर की तर्ह है परब्रह्म की असलिय्यतो हस्ती ॥

[६८३]

तौ लगि या मन सदन मैं, हरि आवै किहिं बाट ।
बिकट जटे जौलौं निपट, खुले न कपट कपाट ॥
कहो किस तर्ह बैतुलक़ल्ब में तब तक ख़ुदा आए ।
न जबतक क़ल्ब का फाटक ये बिलकुल साफ खुलजाए ॥

[६८४]

या भव पारावार कौं, उलँघि पार को जाय ।
तिय छबि छायाग्राहिनी, गहै बीच ही आय ॥
उबूरे बेह आलम क्यों न हो इन्सान को मुश्किल ।
जमाले अक्सगीरे ख़ूबरूँयां रह में है हायल ॥

[६८५]

भजन कह्यौ तासौं भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार ।
दूर भजन जासौं कह्यौ, सौ तूं भज्यौ गँवार ॥
भजा मुतलक़ न उसको, था जिसे भजना लगाकर दिल ।
कहा भजने को जिस से, दूर था उसको भजा ग़ाफ़िल ॥

[६८६]

पतवारी मालाय करि, औरि न कछू उपाव ।
तरि संसार पयोधि कौं, हरि नामौं करि नाव ॥
बना हरिनाम की तू नाव औ माला की पतवारी ।
सिवा इसके तू तर सकता नहीं, भव सिंधु ये भारी ॥

[६८७]

यह बिरिया नहिं औरि की, तू करिया वह सोधि ।
पाहन नाव चढ़ाय जिनि, कीने पार पयोधि ॥
उसी मल्लाह के है हाथ अब तो खूबिओ ज़िश्ती ।
उतारा पार था जिसने चढ़ाकर संग की किश्ती ॥

[६८८]

दूरि भजत प्रभु पीठ दै, गुन विस्तारन काल ।
प्रगटत निर्गुन निकट ही, चंग रंग गोपाल ॥
किए विस्तार गुन था भागते हैं पीठ दै हट कर ।
निकट निर्गुन के आते हैं वरंगे चंग हैं नटवर ॥

[६८९]

जात जात बित होतु है, ज्यौं जिय में संतोष ।
होत होत ज्यौं होय तौ, होय घरी में मोष ॥
तनज्ज़ुल में तसल्ली जिस तरह हैं दिल की हम करते ।
तरक्क़ी में भी करसकते तो छिन में मुक्ति पा तरते ॥

[६९०]

ब्रज बासिनि कौं उचित धन, सो धन रुचत न कोय ।
सुचित न आयो सुचितई, कहौ कहां ते होय ॥
सलौना श्याम सुन्दर जो है के ब्रजवासियों का धन ।
नहीं है दिलनशीं जब तक, हो कैसे दिल ये मुतमय्यन ॥

[६९१]

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि ।
तज्यौ मनो तारन बिरद, बारक बारन तारि ॥
किया अगमाज़ अच्छा अब नहीं होती है शुनवाई ।
करी को तार कर यक बार अब गोया क़सम खाई ॥

[६९२]

दीरघ सांस न लेहि दुख, सुख साँई नहिं भूल ।
दई दई क्यौं करत है, दई दई सु कबूल ॥
न राहत में खुदा को भूल, ने हो रंज में शाकी ।
उसी पर सर झुकाए रह तू जो मरज़ी हो मौला की ॥

[६९३]

कौन भांति रहिहै बिरद, अब देखिबी मुरारि ।
बीधे मोसौं आन कै, गीधे गीधहिं तारि ॥
ये देखें किस तरह रहती है अब हज़रत वो गफ्फ़ारी ।
हुए मशहूर करगस तार कर मेरी है अब बारी ॥

[६९४]

बंधु भये का दीन के, को तार्‍यो रघुनाथ ।
तूठे तूठे फिरत हौ, जूठे बिरद बुलाय ॥
हुए किस दीन के तुम बन्धु, तारा किसको रघुराई ।
फिरी फूली मगर सच्ची नहीं ये शुहरत-अफ़ज़ाई ॥

[६९५]

थोरे ई गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
तुमहूँ कान्ह मनों भये, आज कालि के दानि॥
वो थोड़े वस्फ़ ही पर रीझने की बान को खोया।
मुख़य्यर इस ज़माने के बने हैं आप भी गोया॥

[६९६]

कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय।
तुमहू लागी जगत गुरू, जगनायक जगबाय॥
हूँ कबका मुल्तजी सुनते नहीं कुछ इल्तिजा, साहब !।
तुम्हें भी लग गई शायद ज़माने की हवा, साहब !॥

[६९७]

प्रगट भये द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आय।
मेरे हरो कलेस सब, केसो केसोराय॥
प्रकट द्विजराजकुल में हो, लिया ब्रज भूम में डेरा।
मिटा दो दर्द केशवराय केशव की तरह मेरा॥

[६९८]

घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन जाँचत जाय।
दिये लोभ चसमा चखनि, लघु पुनि बड़ो लखाय॥
है दर दर माँगता फिरता परेशाँ डोलता घर घर।
लगाए हिर्स का ऐनक दिखाता केह भी है मेहत्तर॥

[६९९]

कीजै चित सोई तिरौं, जिहि पतितानि के साथ।
मेरे गुन औगुन गगनि, गनौ न गोपीनाथ॥
तरूँ मैं आसियों के साथ शफ़क़त ऐस ही कीजे।
मेरे ऐबो हुनरपर ध्यान, गोपीनाथ ! मत दीजे॥

[७००]

जौ अनेक पतितन दियो, मोहूं दीजै मोष।
तौ बाँधो अपने गुननि, जौ बाँधे ही तोष॥
बहुत से आसियो को मोक्ष दी जैसे, मुझे दीजे।
अगर बाँधे क़नाअत है तो बाँध अपने गुनो लीजे॥

[७०१]

कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार।
मो संपति जदुपति सदा, बिपति बिदारन हार॥
करोड़ों कोइ जोड़ै या असंखों की धरै दौलत।
मेरे तो मायए-शादी मुसीबत सोज़ हैं यदुपत॥

[७०२]

ज्यौं ह्वै हौ त्यौं होउँगो, हो हरि अपनी चाल।
हठ न करौ अति कठिन है, मो तारिबो गुपाल॥
बुरा हूं या भला जैसा हूं कुछ आदत से लाचारी।
तरन तारन न हठ कीजे मेरा तरना कठिन भारी॥

[७०३]

करै कुगति औ कुटिलता, तजौं न दीन दयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय, बसत त्रिभंगी लाल॥
कजी क्यों छोड़ दूं नुक़सान क्या दुनिया के हँसने से।
त्रिभंगी लाल! कुलफ़त होगी, सीधे दिल में बसने से॥

[७०४]

मोहिं तुमै बाढ़ी बहस, कौ जीतै जदुराज।
अपने अपने बिरद की, दुहुनि निबाहन लाज॥
हमारी औ तुम्हारी लग रही है होड़ जदुराई।
किसे हो जीत, दोनों को है अपने फ़न में इकताई॥

[७०५]

निज करनी सकुचत हिये, कत सकुचत इहिं चाल।

मौहू से अति विमुख त्यौं, सनमुख रहौ गुपाल॥

बद-ऐमाली से हूँ खुद शर्मगी, हरि! तह मत दीजे।

विमुख सा जान सन्मुख आके अब स्वामी ख़बर लीजे॥

[७०६]

तौ अनेक औगुन भरी, चाहै याहि बलाय।

जौ पति संपति हू बिना, जदुपति राखै जाय॥

भरी सदहा नुक़ायस से इसे मेरी बला चाहै।

जो बिन सम्पत्ति ही पति जदुपति मेरी इस जग में निर्वाहै॥

[७०७]

हरि कीजत तुमसौं यहै, बिनती बार हजार।

जिहिं तिहिं भांति डर्यौ रहौं, परो रहौं दरबार॥

हजारों बार है सरकार! इतनी इल्तिजा मेरी।

पड़ा दरबार में, आँखों लगाऊँ ख़ाक पा तेरी॥

[७०८]

तौ बलि है भलि है बनी, नागर नंद किसोर।

जौ तुम नीकैं करि लखौ, मो करनी की ओर॥

मेरी करनी को नीके कर लखौ गर, आप नर नागर!।

बनीसी अनबनी बनकर, चली हो पार भवसागर॥

[७०९]

समैं पलटि पलटै प्रकृति, कौन तजै निज चाल।

भौ अकरुन करुना करन, यह कपूत कलि काल॥

पलटती है प्रकृति सब की समय पाकर बनाकामी।

हुए अकरुन, अहो कलिकाल में करुणाकरन स्वामी॥

[७१०]

अपने अपने मत लगे, बाद मचावत सोर।
ज्यौं त्यौं सबही सेइबो, एकै नंद किसोर॥
नशे में चूर बकते अपने अपने मत की मतवाले।
मेरे मत से छके पीपी के प्रीतम प्रेम के प्याले॥

[७११]

नंद-नंद गोविंद जय, सुख मंदिर गोपाल।
पुंडरीक लोचन ललित, जै जै कृष्ण रसाल॥
जयति गोपाल सुखमन्दिर जयति गोविंद नँदनन्दन।
कमल लोचन, ललित लीला जयति जै कृष्ण जगवन्दन॥

[७१२]

हुकुम पाय जैसाह को, हरि-राधिका प्रसाद।
करी बिहारी सतसई, भरी अनेक सवाद॥
बफ़ज़ले राधिकावर हुक्म पा जैशाह आली का।
बिहारी ने रचे दोहे व प्रीतम ने किया टीका॥

[७१३]

जद्यपि है सोभा घनी, मुक्ताफल मैं देष।
गुहे ठौर की ठौर में लर में होत विशेष॥
गुहर गो देखने में खुशनुमा सुन्दर सुहाते हैं।
लड़ी में गूंथने ही से बड़ी पर आब पाते हैं॥

[७१४]

वृजभाषा बरनी सबै, कविवर बुद्धि विशाल।
सबकी भूषन सतसई, करी बिहारी लाल॥
खिलाए शायरों ने गो चिमन रच रच के व्रज बानी।
बिहारी का ये गुलदस्ता है रंगीनी में लासानी॥

॥ समाप्त ॥

साहित्य-सेवासदन की प्रकाशित पुस्तकों का संक्षिप्त

सूचीपत्र

काव्य ग्रन्थ रत्न-माला

बिहारी सतसई सटीक—टीकाकार-लाला भगवानदीन, प्रो० हिन्दू विश्वविद्यालय। द्वितीय संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण छप रहा है।

श्रीकृष्णजन्मोत्सव—देवीप्रसाद 'प्रीतम' रचित श्रीकृष्ण-जन्म-सम्बन्धिनी घटनाओं का सरल सरस शैरों में वर्णन। मूल्य ।~), ।≡)

केशव-कौमुदी—केशवकृत रामचन्द्रिका की विस्तृत टीका। टीकाकार लाला भगवानदीन, प्रथम भाग (१-२० प्रकाश तक) २।), सजिल्द २॥)। राजसंस्करण २॥।) सजिल्द ३)। द्वितीय भाग (२१-३९ प्रकाश तक) २।) सजिल्द, २॥)

रहिमन विलास—रहीम की कविताओं का सबसे बड़ा और सटीक संस्करण मूल्य ।≈)

विनय पत्रिका—गो० तुलसीदास कृत विनय पत्रिका की अपूर्व टीका। टीकाकार-सम्मेलन-पत्रिका के सम्पादक वियोगी हरिजी।

भारतेन्दु-स्मारक-ग्रन्थ मालिका

कुसुम-संग्रह—बंगमहिला के लेखों का अपूर्व संग्रह। सं० प्रो० रामचन्द्र शुक्ल। स्त्रियों के लिए अत्युपयोगी मूल्य १॥)

मुद्राराक्षस—भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी कृत पुस्तक का विद्यार्थियों तथा साहित्य-प्रेमियों के लिए विस्तृत टिप्पणी तथा आलोचनात्मक भूमिका सहित संस्करण। सम्पादक-ब्रजरत्नदास संशोधक बाबू श्यामसुन्दरदास तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल मू० १)

सविवरण बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगा देखिए।

हिन्दी-साहित्योन्नति के लिये

प्रयत्न करना

प्रत्येक साहित्य-सेवी का

कर्त्तव्य है

अतः अधिक नहीं केवल स्थायी ग्राहक ही
बनकर इस कार्यमें हमारी सहायता
करें यही प्रार्थना है। स्थायी ग्राहक
बनजाने से आपको भी
विशेष लाभ होगा।

नियम पृष्ठ पर देखिये

बी. एल्. पावगी द्वारा
हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, काशी में मुद्रित

साहित्य-सेवा-सदन, काशी

स्थायी ग्राहकों के लिए नियम

(१) प्रवेश-शुल्क बारह आने मात्र देना पड़ता है।

(२) स्थायी ग्राहकोंको इस कार्यालय के समस्त, पूर्व प्रकाशित तथा आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रन्थों की एक एक २ प्रति पौने मूल्य में दी जायगी।

(३) किसी भी पुस्तकका लेना अथवा न लेना ग्राहकोंकी इच्छापर निर्भर है। इसके लिये कोई बन्धन नहीं है। किन्तु वर्षभर में कमसे कम ३) तीन रुपये (पूरे मूल्य) की पुस्तक अवश्य लेनी पड़ती है।

(४) पुस्तक प्रकाशित होते ही उसके मूल्यादि की सूचना भेज दी जाती है, और उसके १५ दिवस पश्चात् उसकी वी. पी. भेजी जाती है। यदि किसी सज्जन को कोई पुस्तक न लेना हो तो पत्र पाते ही सूचना देनी चाहिये। वी. पी. लौटाने से डाक-व्यय उन्हींको देना पड़ेगा, अन्यथा उनका नाम स्थायी ग्राहकों की श्रेणीसे पृथक् कर दिया जायगा।

(५) ग्राहकोंके इच्छानुसार डाक-व्यय के बचाव के लिए ३-४ पुस्तकें एक साथ भी भेजी जा सकती हैं।

(६) ग्राहकोंको प्रत्येक पत्र में अपना ग्राहक-नम्बर, पता इत्यादि स्पष्ट लिखना चाहिए।

साहित्य-सेवा-सदन, काशी

द्वारा प्रकाशित

पुस्तकों का सूचीपत्र

काव्य-ग्रन्थ-रत्नमाला—प्रथम रत्न—

बिहारी-सतसई सटीक

(७०० सातों सौ दोहों की पूरी टीका)

यह वही पुस्तक है कि जिसके कारण कविकुल-कुमुदकलाधर बिहारीलाल की विमल ख्याति-राका साहित्य-संसार के कोने कोने में अजरामरवत् फैली हुई है और जिसकी कि केवल समालोचना ने ही विद्वन्मण्डली में हलचल मचा दिया है। सच पूछिये तो शृङ्गाररस में इसके जोड़ की कोई भी दूसरी पुस्तक नहीं है। यह अनुपम और अद्वितीय ग्रन्थ है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि आज २५० वर्षों में ही इस ग्रन्थ की ३५-३६ टीकायें बन चुकी हैं। इतनी टीकायें तो तैयार हुई हैं, किन्तु वे सभी प्राचीन ढंग की हैं। इसी लिये समझ में जरा कम आती हैं। उसी कठिनाई को दूर करने के लिये साहित्य-संसार के सुपरिचित कविवर लाला भगवानदीन जी, प्रो० हिन्दू विश्व-विद्यालय काशी, ने अर्वाचीन ढंग की नवीन टीका तैयार की है। टीका कैसी होगी, इसका अनुमान पाठक टीकाकार के नाम से ही करलें। इसमें बिहारी के प्रत्येक दोहे के नीचे उसके शब्दार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ, वचन-निरूपण, अलंकार आदि सभी ज्ञातव्य बातों का समावेश किया गया है। स्थान-स्थान पर कवि के चमत्कार का निदर्शन कराया गया है। जगह-जगह पर सूचनायें दी गई हैं। मतलब यह की सभी ज़रूरी बातें इस टीका में आ गई हैं। दूसरा परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण का मूल्य १।=) बढ़िया कागज़ सचित्र का मूल्य १॥।)

काव्य-ग्रन्थरत्न-माला—द्वितीय रत्न—

श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव

लेखक—श्रीयुत् देवी प्रसाद 'प्रीतम्'। यह वही पुस्तक है जिसकी बाट हिन्दी संसार बहुत दिनों से जोह रहा था और जिसके शीघ्र-प्रकाशन के लिये तक़ाज़े पर तक़ाज़े आते रहे। पुस्तक की प्रशंसा का भार काव्य-मर्मज्ञों के ही न्याय और परख पर छोड़ कर इसके परिचय में हम केवल इतना ही कह देना चाहते हैं कि यह ग्रन्थ भगवान् श्रीकृष्ण की जन्म सम्बन्धिनी पौराणिक कथाओं का एक खासा दर्पण है। घटना-क्रम, वर्णन-शैली तथा विषय-प्रतिपादन में लेखक ने कमाल किया है। तिस पर भी विशेषता यह है कि कविता की भाषा इतनी सरल है कि एकबार आद्योपान्त पढ़ने से सभी घटनायें हृदय-पलटपर अङ्कित हो जाती हैं। साहित्य-मर्मज्ञों के लिए स्थान-स्थान पर अलङ्कारों की छटा की भी कमी नहीं है। मुख-पृष्ठ पर एक चित्र भी है। मूल्य केवल ।-) ऐंटीक कागज़ के संस्करण का ।≤)

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला—चतुर्थ रत्न—

केशव-कौमुदी

(रामचन्द्रिका सटीक)

हिन्दी के महाकवि आचार्य केशव की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक रामचन्द्रिका का परिचय देना तो व्यर्थ ही है। क्योंकि शायद ही हिन्दी का कोई ऐसा ज्ञाता होगा जो इस ग्रन्थ के नाम से अपरिचित हो। अतः केशव की यह पुस्तक जितनी ही उत्तम तथा उपयोगी है उतनी ही कठिन भी है। अर्थ-कठिनता में केशव की काव्यप्रतिभा उसी प्रकार छिपी पड़ी हुई है जिस प्रकार रुई के ढेर में हीरे की कान्ति। केशव की इसी काव्य-प्रतिभा को प्रकाश में लाने के लिए यह सम्मेलनादि में पाठ्य पुस्तक नियत की गई है। परीक्षार्थियों को इसका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। पर, पुस्तक की कठिनता के आगे इनका कोई वश नहीं चलता। उन्हें लाचार होकर हिन्दी धुरंधरों के पास दौड़ना पड़ता है। किन्तु वहां से भी "भाई हम इसका अर्थ बताने में असमर्थ हैं" का उत्तर पाकर बेरङ्ग लौटना पड़ता

है। खासकर इसी कठिनाई को दूर करने तथा उनके अध्ययन मार्ग को सुगमतर बनाने के लिए यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक में, रामचन्द्रिका के मूल छन्दों के नीचे उनके शब्दार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ, नोट, अलंकारादि दिये गये हैं। यथा स्थान कविके चमत्कार निर्दशन के साथ ही साथ काव्य गुण दोषों की पूर्ण रूप से विवेचना की गई है। छन्दों के नाम तथा अप्रचलित छन्दों के लक्षण भी दिये गये हैं। पाठ भी कई हस्तलिखित प्रतियों से मिलाकर संशोधित किया गया है। इन सब विशेषताओं से बढ़ कर एक विशेषता यह है कि इसके टीकाकार हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लाला भगवानदीन जी हैं। पुस्तक परीक्षार्थीतर सज्जनों के भी देखने योग्य है। यह पुस्तक दो भागों में समाप्त हुई है। मूल्य साढ़े पांच सौ पृष्ठों के प्रथम भाग का जिसमें रंग बिरंगे चित्र भी हैं २॥।), सजिल्द ३)। द्वितीय भाग का २।), सजिल्द २॥)

काव्य–ग्रन्थ–रत्नमाला-पांचवां रत्न

रहिमन-विलास

यों तो रहीम की कविताओं का संग्रह कई स्थानों से प्रकाशित हो चुका है, किंतु हमारे इस संग्रह में कई विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं के कारण इस पुस्तक का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। इसका पाठ भी बड़े परिश्रम से संशोधित किया गया है। अभी तक ऐसा अच्छा और इतना बड़ा संग्रह कहीं से भी प्रकाशित नहीं हुआ है। यह पुस्तक बड़ी ही उपादेय है। हमारा अनुरोध है कि एक बार अवश्य देखिये। दूसरा संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण छप रहा है।

काव्य-ग्रन्थ-रत्न माला-छठां रत्न

गो० तुलसीदासजी कृत

विनय-पत्रिका सटीक

(टीकाकार–वियोगीहरि)

सर्वमान्य 'रामायण' के प्रणेता महात्मा तुलसीदास जी का

नाम भला कौन नहीं जानता ? बड़े से बड़े राजमहलोंसे लेकर छोटे से छोटे झोपड़ों तक में गोस्वामीजी की विमल कीर्ति की चर्चा होती है। क्या राव क्या रंक, क्या बालक क्या वृद्ध, क्या मर्द क्या औरत सभी उनके रामायण का पाठ प्रतिदिन करते हैं, अङ्गरेजी-साहित्य में जो पद शेक्सपियर का है, जो पद संस्कृत-साहित्य में कालिदास का है वह पद हिन्दी-साहित्य में तुलसीदास को प्राप्त है। उपर्युक्त 'विनयपत्रिका' भी इन्हीं गोस्वामी तुलसीदासजी की कृति है। कहते हैं कि गोस्वामी जी की सर्वश्रेष्ठ रचना यही विनय-पत्रिका है। विनय-पत्रिका का सा भक्ति-ज्ञान का दूसरा कोई ग्रन्थ नहीं है। इसमे गोस्वामी जी ने अपना सारा पाण्डित्य खर्च कर दिया है। इसकी रचना में उन्होंने अपनी लेखनी का अद्भुत चमत्कार दिखलाया है। गणेश, शिव, हनुमान, भरत, लक्ष्मण आदि पार्षदों सहित जगदीश श्रीरामचन्द्र की स्तुति के बहाने,वेदान्त के गूढ़ तत्वों का समावेश कर दिया है। वेद, पुराण, उपनिषद्, गीतादि में वर्णित ज्ञान की सभी बातें इसमें गागर में सागर की भांति भर दी गई हैं। यह भक्ति-ज्ञानका अपूर्व ग्रन्थ है। साहित्य की दृष्टि से भी यह उच्चकोटि का ग्रन्थ है। इतना सब कुछ होने पर भी इसका प्रचार रामायण के सदृश न होने का एक यही मुख्य कारण है कि यह पुस्तक भाषा में होने पर भी, कठिन है। दूसरे वेदान्त के गूढ़ रहस्यों को समझ लेना भी सब किसी का काम नहीं। तीसरे अभी तक कोई सरल, सुबोध्य तथा उत्तम टीका भी इस ग्रन्थ पर नहीं बनी। इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिये सम्मेलन-पत्रिका के सम्पादक तथा साहित्य-विहार, ब्रजमाधुरीसार, संक्षिप्त सूरसागर आदि ग्रन्थों के लेखक तथा संकलन कर्त्ता लब्ध-प्रतिष्ठ वियोगी हरिजी ने इस पुस्तक की विस्तृत तथा सरल टीका की है। वियोगी

जी साहित्य के प्रकाण्ड पंडित हैं यह सभी जानते हैं। अतः उनका परिचय देने की आवश्यकता भी नहीं है। इस टीका में शब्दार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ, प्रसंग, पदच्छेद आदि सब ही कुछ दिये गये हैं। भावार्थ के नीचे टिप्पणी में अन्तर कथाएं, अलंकार, शंकासमाधान आदि के साथ ही साथ समानार्थी हिन्दी तथा संस्कृत कवियों के अवतरण भी दिये गये हैं। अर्थ तथा प्रसंगपुष्टि के लिए गीता, बाल्मीकि रामायण तथा भागवत आदि पुराणों के श्लोक भी उद्धृत किये गये हैं। दार्शनिक भाव तो खूब ही समझाये गये हैं। उपर्युक्त बातों के समावेश के कारण यह पुस्तक अपने ढंग की अद्वितीय हुई है। अब मूढ़ से मूढ़ जन भी भगवद्-ज्ञानामृत का पानकर मोक्ष के अधिकारी हो सकते हैं। हिन्दी-साहित्य में यह टीका कितने महत्त्व की हुई है यह उदारचेता, काव्य कला-मर्मज्ञ एवं नीर-क्षीर-विवेकी साहित्यज्ञ ही बतला सकते हैं। तुलसी-काव्य सुधा-पिपासु सज्जनों से हमारा आग्रह है कि एक प्रति इसकी खरीदकर गुसाईं जी की रसमयी वाणी का वह आनन्द अवश्य लें जिससे अभी तक वे वंचित रहे हैं। छपाई-सफाई भी दर्शनीय है। मनोमोहक जिल्द बंधी हुई लगभग ७०० सात सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य २॥) ढाई रुपये। सजिल्द २॥।)। बढ़िया कपड़े की जिल्द का ३)।

काव्य-ग्रन्थरत्न-माला-सातवां रत्न

गुलदस्तए बिहारी

(लेखक—देवीप्रसाद 'प्रीतम')

बिहारी-सतसई के परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं, सभी साहित्य प्रेमी उसके नाम से परिचित हैं। यह गुलदस्तए बिहारी उसी बिहारी-सतसई के दोहों पर रचे हुए उर्दू शैरों

का संग्रह है, अथवा यों कहिये कि बिहारी-सतसई की उर्दू-पद्य मय टीका है। ये शैर सुनने में जैसे मधुर और चित्ताकर्षक ही हैं वैसे ही भाव-भङ्गी के खयाल से भी अनुपम हैं। इनमें दोहों के अनुवाद में, मूल के एक भी भाव छूटने नहीं पाये हैं बल्कि कहीं कहीं उनसे भी अधिक भाव शैरों में आ गये हैं। ये शैर इतने सरल हैं कि मामूली से मामूली हिन्दी जानने वाला उन्हें अच्छी तरह समझ सकता है। इन शैरों की पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, पं० पद्मसिंह शर्म्मा, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन वियोगीहरि आदि उद्भट विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। अतः विशेष कहना व्यर्थ है।

छपाई में यह क्रम रखा गया है कि ऊपर बिहारी का मूल दोहा देकर नीचे प्रीतमजी रचित उसी दोहे का शैर हिन्दी लिपि में दिया गया है। पुस्तकान्त में दोहों के क्रम से ये शैर उर्दू लिपि में भी छाप दिये गये हैं। ऐसा करने से हिन्दी तथा उर्दू जानने वाले दोनों ही सज्जनों के लिए यह सामान्य रूप से उपयोगिनी हुई है। पृष्ठ संख्या १७५ के लगभग। मूल्य ॥।=) सचित्र राज संस्करण का १॥) उर्दू सहित का १।) राज सं० २)

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला-आठवाँ रत्न

भ्रमर गीत

यह भ्रमर-गीत महाकवि सूरदास के सूरसागर में से छाँट कर निकाली गयी है। इसका सम्पादन साहित्य-संसार के चिर परिचित एवं दिग्गज विद्वान पं० रामचन्द्र शुक्ल ने किया है। पदों के नीचे कठिन शब्दों के सरलार्थ भी दे दिये गये हैं। साथ ही प्रारम्भ में एक आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका भी

है। हरएक साहित्य-प्रेमी को एक बार अवश्य देखना चाहिये। पृष्ठ संख्या लगभग २५० मूल्य १) मात्र

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला-नौवाँ रत्न

तुलसी-सूक्तिसुधा

(सं—श्री वियोगी हरि)

इसमें जगन्मान गो०तुलसीदास प्रणीत सभी ग्रन्थों की चुनी हुई अनूठी उक्तियों का संग्रह किया गया है। जो लोग समयाभाव या अन्य कारणों से गोस्वामी जी के सभी ग्रंथों के अवलोकन से वञ्चित रहते हैं, उन लोगों को इस एक ही पुस्तक के पढ़ने से गोस्वामीजी के समस्त ग्रंथों के पढ़ने का आनन्द मिल जायगा। इसमें राजनीति, समाजनीति, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि सभी विषयों पर अच्छी से अच्छी उक्तियां बिना प्रयास एक ही जगह मिल जायँगी। साहित्य छटा के लिए तो कुछ कहना ही नहीं है। इस के तो तुलसीदासजी आचार्य ही ठहरे साहित्य के अध्येताओं को इस ग्रंथ से बड़ी सहायता मिलेगी। इस में पाठकों को सुभीते के लिये पाद-टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं। पृष्ठ सं० लगभग ५०० मूल्य लगभग २)

भारतेन्दु-स्मारक ग्रन्थ-मालिका—संख्या १

कुसुम-संग्रह

सम्पादक पं० रामचन्द्र शुक्ल, प्रो० हिन्दू-विश्वविद्यालय तथा लेखिका हिन्दी-संसार की चिरपरिचित श्रीमती बंग-

महिला। इस पुस्तक में बंगभाषा के रवीन्द्रनाथ ठाकुर, देवेन्द्र कुमार राय, रामानन्द चट्टोपाध्याय आदि धुरन्धर विद्वानों के छोटे छोटे उपन्यासों तथा लेखों का अनुवाद है। कुछ लेख लेखिका के निज के हैं, जो कि समय समय पर सरस्वती में निकल चुके हैं और जनता द्वारा काफी सम्मानित हो चुके हैं। पुस्तक बड़ी ही रोचक तथा शिक्षाप्रद है, खास कर भारतीय महिलाओं के लिये बड़े काम की है। इसे संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेण्टने पुरस्कार पुस्तकों तथा पुस्तकालयों (Prize books and Libraries) के लिये स्वीकृत किया है। कुछ स्कूलों में पाठ्य-पुस्तक भी नियत की गई है। और कुछ नहीं, आप केवल निम्नलिखित सम्मतियों को ही देखिये।

पुस्तक की सुन्दरता में भी किसी प्रकार की कोर-कसर नहीं की गई है। विविध प्रकार के सात रंग-बिरंगे-चित्रों से विभूषित, एँटीक पेपर पर छपी लगभग २२५ पृष्ठवाली इस पुस्तक का मूल्य सर्वसाधारण के हितार्थ केवल १॥) रखा गया है।

पुस्तक पर आई हुई कुछ सम्मातियां—

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने अपने उन्नीसवें वर्ष के कार्य्यविवरण में " कुसुम संग्रह की गणना उत्तम पुस्तकों में करके इसका गौरव बढ़ाया है।

The book will form an admirable prize Book in girls' school...We repeat that the book will form a nice useful present to females. It is not less interesting to the general reader.

The Modern Review.

The language of the book is excellent and the subjects treated are also very useful.—MAJOR B. D. Basu, I. M. S. (Retired) Editor, the Sacred Books of the Hindu-Series.

कहानियाँ और लेख मनोरंजक और उत्तम हैं।-विहार-बन्धु।

निबन्ध सुपाठ्य और उपयोगी हैं। कागज और छपाई भी अच्छी है। —भारतमित्र।

कुसुम संग्रह मुझे बहुत पसंद है।-सत्यदेव (परिव्राजक)।

हिन्दी-साहित्य-भण्डार में अनोखी वस्तु है। लेख सबके पढ़ने योग्य; बहुत ही रोचक तथा शिक्षाप्रद हैं। स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी लेख तो बहुत ही उत्तम हैं। —लक्ष्मी।

लेखन शैली उत्तम है।... पात्रों के चरित्र-चित्रण देखकर खुशी होती है पुस्तक बड़ी उत्तमता से छापी गई है। जासूस।

कुसुम-संग्रह के कुसुम बहुत ही मुग्धकर हैं।...इन फूलों काआघ्राण हिन्दी के रसिक पाठकों को अवश्य लेना चाहिये। —हिन्दी बङ्गवासी।

कुसुम-संग्रह का समालोचना-भार पाकर हम अपने को सचमुच बड़भागी समझते हैं। उनमें से बहुत सी तो मन लुभाने वाली आख्यायिकाएं हैं, बहुत सी स्त्री-शिक्षासम्बन्धी उपदेश मालाएं हैं और बाकी सब विविध विषयों पर हैं।... और अधिक स्तुति हम आवश्यक नहीं समझते।... कुसुम-संग्रह में कविता नहीं ......पर.........प्रत्येक गद्य-पृष्ठ से कविता का मधुर रस चू रहा है। —गृह लक्ष्मी।

सच्चे सामाजिक उपन्यासों के भण्डार की पूर्ति ऐसी ही पुस्तकों से हो सकती है।...इसमें ऐसी शिक्षाप्रद आख्यायिकाओं का समावेश है जिनको पढ़कर साधारणतया सभी स्त्रियों के आदर्श उच्च हो सकते हैं और सामाजिक जीवन

प्रशस्त जीवन वन सकता है। ... स्त्रियों को चाहिये कि ऐसी पुस्तकों का अध्ययन किया करें। भाषा बहुत सरल है, जिससे लेखिका का उद्योग भलीभांति पूर्ण हो गया है। छपाई बहुत ही अच्छी है। नवजीवन।

भारतेन्दु-स्मारक ग्रन्थ-मालिका-संख्या २

मुद्राराक्षस

भारत-भूषण भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी के मुद्राराक्षस का अभी तक कोई शुद्ध तथा विद्यार्थियोपयोगी संस्करण नहीं निकला था जो संस्करण आजकल बाजार में बिक रहा है वह अशुद्ध है। इसीलिये नागरी-प्रचारिणी-सभा के उपमन्त्री जी ने बड़े परिश्रम से इसका पाठ शुद्ध कर तथा विद्यार्थियों के उपकारार्थ आलोचनात्मक भूमिका के साथ ही साथ भरपूर टिप्पणी देकर यह संस्करण निकाला है! इसका संशोधन बा० श्यामसुन्दर दास तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल ने किया है। लगभग साढ़े तीन सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १)

पुस्तक-भवन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक-भवन सीरीज संख्या १

एम० ए० बनाके क्यों मेरी मिट्टी खराब की ?

गुजरातीके सुप्रसिद्ध लेखक अमृत केशव नायककी, इसी नामकी पुस्तक का यह अनुवाद है। जिस समय यह गुजराती में निकली थी उस समय बड़ा हलचल मच गया था और इसके कई संस्करण हाथों-हाथ बिक गए थे। हिन्दीमें शिक्षाप्रद होनेके साथ ही साथ रोचक भी हों, ऐसे उपन्यासोंकी बड़ी कमी है। इस पुस्तक में ये दोनों ही गुण हैं। बड़े-बड़े विद्वानों

और पत्रपत्रिकाओंने इसकी बड़ी तारीफ की है। उपन्यास-प्रेमियोंको एक बार इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। पृष्ठ-संख्या ४०० चारसौ के लगभग। मूल्य २)

देखिये चित्रमय-जगत क्या कहता है :—

"यह एक उपन्यास है। इसमें एक एम० ए० पास हुए युवक की करुण कहानी है। इसी के सिलसिले में एक पारसी युवक-युवती का चरित्र भी इसमें है। एक शायर ने कहा है—

तालीम युनिवर्सिटीकी खाना खराब की।
एम. ए. बनाके क्यों मेरी मिट्टी खराबकी॥

बस इसी शेरको सब रीतिसे चरितार्थकर बतानेवाला यह एक घटनापूर्ण, मनोरंजक और हृदय-द्रावक उपन्यास है। वास्तवमें इसके पढ़ने में दिल लगता है, और कुतूहल पैदा होता है। आजकल युनिवर्सिटीकी उपाधियोंके लिये लालायित होने वाले नवयुवकोंको यह पुस्तक एकबार अवश्य पढ़नी चाहिये।"

पुस्तक-भवन-सीरीज संख्या २

शैलबाला

यह एक ऐतिहासिक मनोरंजक तथा चित्ताकर्षक उपन्यास है। इसमें कुमार अमरेन्द्र और गोविन्दप्रसादका अत्याचार, दृढ़प्रतिज्ञ सुरेन्द्रसिंह की वीरता, शैलबाला का आदर्श प्रेम और सतीत्वरक्षा, योगिनी की अद्भुत लीला, इत्यादि पढ़ते पढ़ते कभी आपको हँसी आवेगी तो कभी रुलाई, कभी घृणा उत्पन्न होगी तो कभी आसक्ति। इस उपन्यास के पढ़नेसे आप को पता चलेगा कि अन्तमें धर्मात्माओंकी, अनेक कष्टोंके सहने पर कैसी जीत होती है और दुरात्माओंकी कैसी दुर्दशा। मूल्य २०० पृष्ठों की सचित्र पुस्तकका केवल १)

हिन्दी संसार में हलचल

एक रुपये में ५१२ पृष्ठ

स्थायी ग्राहकों को ६।॥

किसी भी साहित्य की उन्नति करने के लिए यह पूर्ण आवश्यक है कि उसमें संसार के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों, लेखकों, कवियों, भगवद्भक्तों की ग्रन्थावलियाँ सस्ती तथा सुलभरूप में निकाली जायँ। इसी उद्देश्य को सामने रख कर प्रकाशक ने निःस्वार्थभाव से सस्ती-साहित्य पुस्तक-माला नाम की एक ग्रन्थमाला निकालना प्रारम्भ किया है। इसमें प्रत्येक ५१२ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य, जिसका कि अन्य प्रकाशक लोग ४-४, ५-५, रुपये अथवा इससे भी अधिक रखते हैं, केवल एक रुपया रखा जाता है। आप परीक्षा स्वरूप इसकी किसी भी पुस्तक को लेकर उपर्युक्त बात की जांच कर सकते हैं। यदि आप को इस बात का निश्चय हो जाय कि वास्तव में प्रकाशक ने स्वार्थत्याग किया है और ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता है तो स्वयं इस माला की पुस्तकों को खरीदिये और अपने मित्रों को तथा अन्य परिचित-जनों को इस बात की सूचना देकर खरिदवाइए। आशा है कि आप हिन्दी साहित्य के नाते इस कार्य में प्रकाशक को सहायता देगें तथा देश का उपकार करेंगे।